

दिसम्बर 2023 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 03 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत



संस्कार-निर्माण
की यात्रा



74वां अणुव्रत अधिवेशन

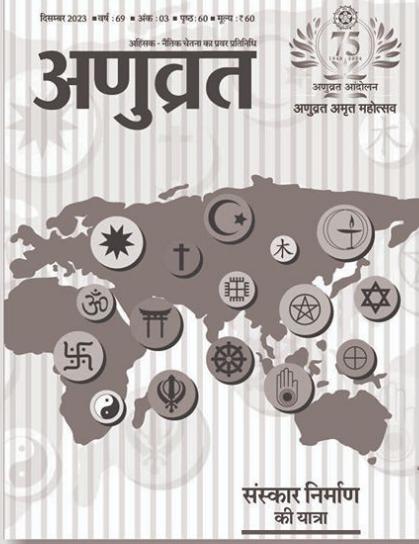
18, 19 व 20 नवम्बर, 2023
नंदनवन-मुंबई



अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने 74वें अणुव्रत अधिवेशन में देशभर से समागम अणुव्रत कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अपनी अमृतदेशना में कहा –

हमारी चेतना में भावों का एक संसार है। उस संसार में सत् भाव भी रहते हैं और असत् भाव भी रहते हैं। अणुव्रत के मार्ग के माध्यम से गृहस्थों के लिए असत् से सत् की ओर प्रगति करना संभव हो सकता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। यह केवल जैन समाज के लिए ही नहीं है, बल्कि जन-जन के लिए है। यहां तक कि अणुव्रत नास्तिकों के लिए भी है। नास्तिक व्यक्ति भी अणुव्रती बन सकता है बशर्ते उसका आचरण अच्छा होना चाहिए। वह धार्मिक सद्द्वाव में विश्वास करता हो, प्रामाणिकता में विश्वास करता हो।

आचार्य प्रवर ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी विराट संस्था है। इसका अपना तंत्र है। इस तंत्र का उपयोग अहिंसा, सद्भावना, नशामुक्ति के प्रसार में हो। यह संस्था अणुव्रत के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करे। मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए अपनी शक्ति का नियोजन करती रहे।



वर्ष 69 • अंक 03 • कुल पृष्ठ 60 • दिसम्बर, 2023

■ ■ ■

अनुव्रत आंदोलन वास्तव में
असाम्प्रदायिक आंदोलन है
और उसको हमारी धर्म निरपेक्ष
सरकार का भी समर्थन मिलना
चाहिए। यदि नयी पीढ़ी को इस
आंदोलन के मूलभूत सिद्धान्तों
की शिक्षा दी जाये तो वे बहुत
अच्छे नागरिक बन सकेंगे और
वास्तव में विश्व-नागरिक
कहलाने के अधिकारी हो
सकेंगे। इस प्रकार का
आंदोलन राष्ट्रीय एकता के
ध्येय को अधिक शीघ्रतापूर्वक
सिद्ध कर सकेगा।

-प्रोफेसर एन. वी. वैद्य

■ ■ ■

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष राय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

{ **अविनाश नाहर**, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा }

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	- ₹ 60
एक वर्षीय	- ₹ 750
त्रैवर्षीय	- ₹ 1800
पंचवर्षीय	- ₹ 3000
दसवर्षीय	- ₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	- ₹ 15000

अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी

केनरा बैंक

A/c No. **0158101120312**

IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::



इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें

अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अनुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



अनुविभा



अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाठ्येय			
■ संस्कार-निर्माण की यात्रा आचार्य तुलसी	06	■ संपादकीय	05
■ स्वावलम्बन की अनुप्रेक्षा आचार्य महाप्रज्ञ	09	■ अणुव्रत की बात	21
■ चेतना की निर्मलता आचार्य महाश्रमण	12	■ कदमों के निशां	26
आलेख		■ गौरवशाली अतीत के झरोखे से...	27
■ मानव जीवन में संयम... सेवाराम त्रिपाठी	14	■ परिचर्चा	33
■ बढ़ती उम्र को न होने दें हावी रामस्वरूप रावतसरे	16	■ 74वां अणुव्रत अधिवेशन : एक रिपोर्ट	36
■ Voilence, Nonvoilence... Dr. Santinath Chattopadhyay	18	■ आचार्य तुलसी का 110वां जन्मदिवस	49
■ संयम से सार्थक बनाएं जीवन धर्मचंद्र जैन 'अनजाना'	25	■ सुत्तुर मठ के बच्चों की गुरुदर्शन यात्रा	49
कहानी		■ अणुव्रत दिवस	50
■ उपेक्षिता प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी	22	■ जीवन विज्ञान दिवस समारोह	51
कविता		■ पर्यावरण जागरूकता अभियान	52
■ ग़ज़ल नवीन माथुर	15	■ अणुव्रत गीत महासंगान	57
लघुकथा			
■ संकल्प डॉली शाह	24		
		■ अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।	
		■ anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।	
		■ ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।	
		■ फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।	
		■ अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।	
		■ प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी विंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।	
		■ इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।	



संयम साधे सब सधे

जो बूँद है
वो समंदर भी है
जो दूर है
वो निकट भी है
नजर फेरो जरा
जो बाहर है
वो अंदर भी है।

नजर का कोण
जब विस्तार पाता है
दुनिया का स्वरूप
बदल सा जाता है
नजरिया ही जिंदगी की
तासीर गढ़ता है
लघुता में
विराट पाता है
और विराट लघु में
सिमट जाता है।

दृष्टि का यह फेर...
गंदगी में
खूबसूरती ढूँढ़ लाता है
सपाट में आकार,
इनकार में स्वीकार
और
एकांत में अनेकांत का
दर्शन पाता है।

शोर में शांति,
ऊँचाई में गहराई,
विफलता में सफलता
विपन्नता में सम्पन्नता
और
आलोचना में प्रेरणा...
नजरिये का यह भेद
जब समझ आता है,
जीवन का नया स्वरूप
उभर आता है।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अधाय॥

र हीम के इस दोहे में जीवन का महत्वपूर्ण सूत्र समाहित है। रहीम यहाँ 'एक' को साधने की बात कह रहे हैं - वह एक जो मूल हो, वह एक जिसे साधने से सब कुछ स्वतः सध जाये। क्या है वह एक? इस प्रश्न का समाधान आचार्य तुलसी अणुव्रत के माध्यम से देते हैं और बताते हैं कि 'संयम' ही वह 'एक' है जिसे साधने से पूरा जीवन सध जाता है। जीवन की सफलता के अनेक सूत्र हो सकते हैं लेकिन यदि मूल सूत्र हाथ में आ जाये तो इससे विलक्षण बात और क्या हो सकती है!

भारतीय संस्कृति में संयम को बहुत महत्व मिला है। श्रमण संस्कृति ने संयम की अवधारणा का सर्वाधिक पोषण किया। सामान्यतः संयम को ऋषि-मुनियों की साधना और तपस्या से जोड़ा जाता है। ऋषि-मुनियों की साधना और तपस्या को संयम का उत्कर्ष कहा जा सकता है। किन्तु, सामान्यजन भी संयम को साध सकता है, आचार्य तुलसी ने इस यथार्थ से जन-जन को परिचित कराया था। जीवन के हर क्षेत्र में, हर क्रिया और प्रतिक्रिया के साथ संयम को जोड़ देने की कला हमें अणुव्रत का दर्शन सिखाता है।

हम अपने दैनंदिन क्रिया-कलापों को यदि बारीकी से स्कैन करें, संयम के सापेक्ष एक-एक पल की समीक्षा करें तो संयम की महत्ता स्वतः स्पष्ट होती चली जाएगी। संयम में हमें हर समस्या का समाधान नजर आने लगेगा और हर समस्या की जड़ में किसी न किसी रूप में असंयम छुपा मिलेगा। अब हमें ही यह निर्धारण करना होगा कि संयम और असंयम के बीच हम कैसे और कितना संतुलन साध सकते हैं। संयम के प्रभाव को अपना स्वभाव बना लेने की क्षमता को हमें अपने भीतर कैसे विकसित करना है, यह हम स्वयं पर निर्भर है। यही अणुव्रत का मार्ग है।

अणुव्रत की आचार संहिता में वर्णित 11 संकल्प इस संयम क्षमता निर्माण की आधारभूमि प्रदान करते हैं। इस आधारभूमि पर हम संयम के नन्हे पौध उगा सकते हैं जिसके अनेक सुझाव "अणुव्रत जीवनशैली: एक मार्गदर्शिका" पुस्तक में उपलब्ध हैं। ये नन्हे पौध जो भविष्य में वटवृक्ष बन कर हमारे जीवन को शीतलता से सराबोर कर देंगे। यह सम्भव है। न्यूरल फ्लेक्सिबिलिटी के सिद्धांत ने इसे वैज्ञानिक आधार दिया है कि नियमित अभ्यास से हम अपनी आदतों को, अपने स्वभाव को बदल सकते हैं। हमारी आदतों में छोटे-छोटे बदलाव जीवन की बड़ी जंग को जीतने में सहायक हो सकते हैं।

अणुव्रत पत्रिका के लगभग प्रत्येक अंक में एक परिचर्चा प्रस्तुत की जाती है। इस अंक में परिचर्चा का विषय है - "आम नागरिक के जीवन में संयम का महत्व : प्रयोग और परिणाम"। सुधी पाठकों ने इस विषय पर अपने सार-गर्भित विचार भेजे हैं जिनमें कुछ जीवन अनुभव भी हैं। अणुव्रत ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयोगों को प्रोत्साहित करता है और अणुव्रत पत्रिका एक मंच की भूमिका में इन आवाजों को मुखरता प्रदान कर गौरव का अनुभव करती है।

नया वर्ष समक्ष है। क्यों न हम नये वर्ष का अपने जीवन में संयम के प्रवेश और पुष्टा के लिए आह्वान करें? क्यों न जीवन की जटिलताओं को एक तरफ रख सरसता को वरीयता दें? क्यों न इस वर्ष को संयम के प्रयोगों का वर्ष बना दें? संयम के साथ शांति, सुकून, सद्भाव, सम्मान, सहकार स्वतः जीवन में प्रविष्ट हो जाएंगे और हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार, तनाव, झगड़े और नशे जैसी अवाञ्छित प्रवृत्तियां दूरी बना लेंगी। हम बदलेंगे तो दुनिया खुद-ब-खुद बदल जाएगी। आइए, एक ईमानदार कोशिश करते हैं।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com



संस्कार-निर्माण की यात्रा

नैतिकता का मूलभूत आधार धर्म ही है। सत्य, अहिंसा, सहअस्तित्व, अपरिव्राह आदि धर्म के मौलिक तत्त्वों को भुलाकर नैतिकता सम्पन्न समाज या राष्ट्र की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसलिए स्वरथ समाज संरचना के लिए धर्म को अनिवार्य अपेक्षा के रूप में स्वीकार करना ही होगा।

ए

क महान् आचार्य ने कहा है-
सन्तः सदाभिगन्तव्या, यद्यप्युपदिश्नित नो।
यस्तु स्वैकर्थास्तेषां उपदेश भवन्ति नः॥

संतों का सान्निध्य सदैव साधना चाहिए। उनकी उपासना करनी चाहिए। उनका निकटता से दर्शन करना चाहिए। कभी यह सम्भव है कि सन्त-जन अपने मुँह से कुछ भी उपदेश न दें, कुछ भी मार्गदर्शन न करें, तथापि उनकी उपासना, उनकी सन्निधि व्यक्ति के लिए बहुत ही हितकर है, शुभकर है।

सहज प्रश्न हो सकता है कि जब साधु उपदेश ही न दें, पथदर्शन ही न करें, फिर उनकी उपासना, उनके दर्शन की क्या उपादेयता है? क्या उपयोगिता है? आप क्यों मानते हैं कि उपदेश या मार्गदर्शन केवल बोलकर ही दिया जाता है। क्या अपने सद् व्यवहार एवं उच्च आचरण से दूसरों को मार्गदर्शन या उपदेश नहीं दिया जा सकता?

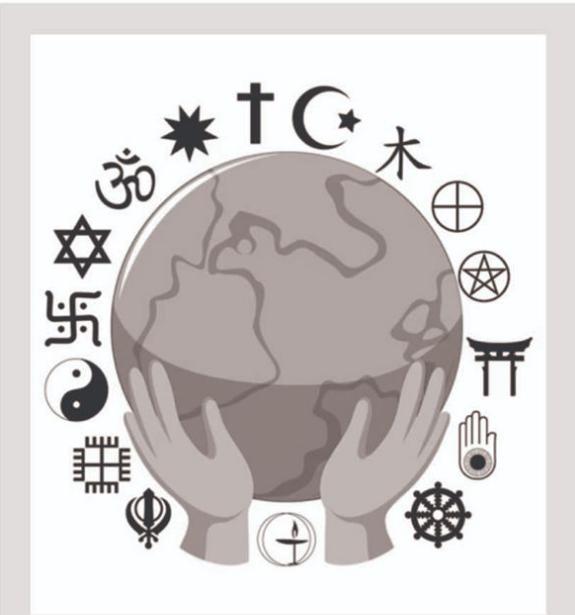
आप ध्यान दें, एक व्यक्ति संतों के सान्निध्य में जाता है। वहाँ वह देखता है कि साधु लोग परस्पर अत्यन्त प्रेम से आलाप-संलाप करते हैं। छोटे साधु बड़े साधुओं का कितना विनय करते हैं। बड़े साधु अपने से छोटों के प्रति कितनी आत्मीयता एवं वात्सल्य का व्यवहार करते हैं। साधु-जन एक-एक शब्द विचार कर बोलते हैं।

कदम-कदम देखकर चलते हैं। यदि प्रमादवश मार्ग में किसी व्यक्ति को पैर से ठोकर लग जाती है तो वे बिना क्षमा माँगे आगे नहीं बढ़ते। इस प्रकार की सैकड़ों बातें उसे देखने को मिलती हैं। इन बातों का जीवन-निर्माण की दृष्टि से बहुत बड़ा महत्व है।

वस्तुतः जीवन-निर्माण सत्संस्कारों के द्वारा ही होता है और ये संस्कार व्यक्ति को संतों की संगत से सहज रूप से प्राप्त होते हैं। क्या यह मार्गदर्शन नहीं है? क्या यह उपदेश नहीं है? हम गहराई से देखें तो वास्तविक उपदेश और मार्गदर्शन जीवन-व्यवहार एवं आचरण से ही दिया जाता है। शाब्दिक उपदेश या पथदर्शन तो इनके सामने बहुत छोटी बात है। और फिर बहुत सही तो यह है कि शाब्दिक उपदेश तभी असरकारी होता है जब वह उपदेशक के जीवन, जीवन के व्यवहार एवं आचरण से स्नात होकर बाहर आये।

कुछ लोग संत-दर्शन के उपदेश का उपहास करते हैं। वे इस उपदेश के पीछे सन्तों के अहं का दर्शन करते हैं, पर वास्तविकता इससे सर्वथा भिन्न है। पहली बात तो यह है कि कोई भी साधु-सन्त व्यक्तिगत अपने दर्शन करने की प्रेरणा नहीं देते। उनका उपदेश तो मात्र संत-दर्शन के संस्कार को सुरक्षित रखने की दृष्टि से होता है। इसके साथ ही दूसरी बात यह भी है कि संतों का दर्शन करने से





वास्तविक उपदेश और मार्गदर्शन जीवन-व्यवहार एवं आचरण से ही दिया जाता है। शाविक उपदेश या पथदर्शन तो इनके सामने बहुत छोटी वात है। और फिर बहुत सही तो यह है कि शाविक उपदेश तभी असरकारी होता है जब वह उपदेशक के जीवन, जीवन के व्यवहार एवं आचरण से रूनात होकर बाहर आये।

संतों को कोई लाभ नहीं होता। कोई उनका दर्शन करता है, इससे वे महान नहीं बन जाते। कोई उनके दर्शन नहीं करता, इससे उनकी गरिमा में कहीं कोई न्यूनता नहीं आती। किसी के बहुत दर्शन करने या न करने – इन दोनों ही स्थितियों में वे तो जैसे हैं, वैसे ही रहते हैं। हाँ, संत-दर्शन के संस्कार से संस्कारित व्यक्ति अवश्य प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से बड़े लाभ को प्राप्त होता है। इसी के समानान्तर संत-दर्शन के अभाव में व्यक्ति सहजतया प्राप्त होने वाले एक महान लाभ से वंचित हो जाता है। पता नहीं, संत-दर्शन या उपासना का कौन-सा क्षण व्यक्ति के जीवन को रूपान्तरित कर दे। सौभाग्य से जीवन में कभी-कभी ही ऐसे क्षण उपस्थित होते हैं, जिन क्षणों में व्यक्ति के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन घटित होता है।

मुझे अपने बाल्य-काल की स्मृति हो रही है। उस समय मेरी उम्र लगभग सात-आठ वर्ष की थी। पूज्य गुरुदेव कालूगणी उन दिनों जब कभी लाडनूं पधारते, वहाँ के पूरे वातावरण में अध्यात्म की एक नयी लहर-सी आ जाती। दिन भर दर्शनार्थियों का तांता-सा लग जाता। मैं भी अपने साथियों के साथ पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ उनके प्रवास-स्थल पर जाता। एक अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण था उनके आभा-मंडल में। यद्यपि निकट जाकर उनके चरण-स्पर्श करने की हिम्मत तो मेरी बहुत कम पड़ती थी, पर दूर

खड़ा-खड़ा घण्टों-घण्टों पूज्य गुरुदेव के तेजस्वी मुखमण्डल को निहारता रहता। उनके सन्निकट रहने वाले छोटे-छोटे बाल साधुओं की चर्या को सूक्ष्मता से देखता रहता। मैं देखता, कोई साधु गुरुदेव के पावन चरण-स्पर्श कर रहा है तो कोई उनको पंचांग वंदन कर रहा है। कोई साधु उन्हें करबद्ध कुछ निवेदन कर रहा है तो कोई उनसे किसी विषय में मार्गदर्शन प्राप्त कर रहा है। इन सब दृश्यों को देखकर मेरे मन में भावना जागृत होती कि कितना अच्छा हो, मैं भी एक छोटा-सा साधु बन जाऊं और पूज्य गुरुदेव की पुण्य सन्निधि प्राप्त करूं। कोई माने या न माने, पर यह एक वास्तविकता है कि मेरा दीक्षा स्वीकार करने का सबसे बड़ा कारण पूज्य गुरुदेव एवं साधु चर्या के प्रति आकर्षण ही बना।

संत-दर्शन का एक बड़ा लाभ यह भी है कि व्यक्ति को धार्मिक उपासनाओं की सही-सही जानकारी और प्रेरणा प्राप्त होती है। निःसंदेह धार्मिक उपासना जीवन में आध्यात्मिक जागरण के लिए अत्यन्त उपयोगी है। हर व्यक्ति को चाहिए कि वह दिन में अधिक नहीं तो कम-से-कम एक घण्टे का समय धार्मिक उपासना के लिए अवश्य सुरक्षित रखे। सामायिक, संकर आदि की साधना से अपनी आत्मा को भावित करे। यथाशक्ति, यथाअवसर पौष्टि करे, उपवास करे। उपवास का अर्थ भूखे मरना नहीं, अपितु आत्मा के सन्निकट रहना है। सत्संग, स्वाध्याय, ध्यान, चिन्तन-मनन आदि उसी के विभिन्न अंग हैं। मुझे तो बड़ा आश्र्य होता है कि ऐसी वैज्ञानिक उपासनाओं से लोग दूर क्यों रहते हैं? क्यों वे सहजतया प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित होते हैं? युवा पीढ़ी में यह उपेक्षा अपेक्षाकृत गहरी है। मैं नहीं समझता कि धार्मिक क्रिया या उपासना करने में युवकों को शर्म या संकोच क्यों महसूस होता है? जब उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकारी तथा विद्वान लोग भी बड़ी श्रद्धा के साथ नियमित रूप से अपनी धार्मिक उपासना करते हैं, तब समाज के थोड़े पढ़े-लिखे युवक धार्मिक क्रियाओं के प्रति उदासीनता क्यों रखते हैं?

मैं नमाज पढ़कर आता हूँ

मौलाना अबुल कलाम आजाद नेहरू मंत्रिमण्डल के एक प्रमुख सदस्य थे। वे केन्द्रीय शिक्षामंत्री ही नहीं, अपितु राष्ट्र के एक माने हुए शिक्षाशास्त्री भी थे। एक बार की घटना है। मंत्रिमण्डल की आवश्यक बैठक चल रही थी। मौलाना साहब के नमाज पढ़ने का समय हो गया। वे बैठक के बीच से उठे और बोले – “आप बैठक चालू रखें, मैं नमाज पढ़कर आता हूँ।” ऐसा कहकर वे तत्काल वहाँ से चले गये।

इस उदाहरण से युवक लोग समझें कि विद्वता या पढ़ाई-लिखाई के साथ धार्मिक उपासना का कोई विरोध नहीं है। धार्मिक उपासना सबके लिए समान रूप से करणीय है और हर अवस्था में करणीय है। किसी बहाने इसकी उपेक्षा या अवमूल्यन करने का अर्थ है अपने जीवन की उपेक्षा और अवमूल्यन करना।

कहा जा सकता है कि युवा अवस्था तो आमोद-प्रमोद, हँसी-खुशी और जीवन का आनन्द लूटने के लिए है। धार्मिक उपासना

तो बाद में भी की जा सकती है। यदि इस उम्र में ही व्यक्ति धार्मिक उपासना करने लग जाएगा तो उसकी सारी महत्वाकांक्षाएं समाप्त हो जाएंगी। सोचने का व्यक्ति-व्यक्ति का अपना अलग-अलग प्रकार होता है, इसलिए किसी के भी चिन्तन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं हो सकता। लेकिन काल पर किसका प्रतिबन्ध है? क्या यह जरूरी है कि काल बुढ़ापा आने तक व्यक्ति की प्रतीक्षा करता रहेगा? युवक इस बात को समझें कि काल पर प्रतिबन्ध नहीं हो सकता और जब काल पर प्रतिबन्ध नहीं हो सकता, तब बुढ़ापे की प्रतीक्षा तक धार्मिक उपासना की उपेक्षा करना कहाँ तक उचित है?

इस सन्दर्भ में एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है। काल की बात मैंने कही, पर काल की विभीषिका खड़ी कर मैं युवा पीढ़ी को धार्मिक नहीं बनाना चाहता। मैं तो मात्र वस्तुस्थिति से आपको परिचित कराना चाहता हूँ। वस्तुतः भय और प्रलोभन जैसे तत्वों से प्रेरित होकर किया गया आचरण धर्म है ही नहीं। धर्म तो अन्तर की प्रेरणा है और अन्तर की प्रेरणा से ही होना चाहिए। ऐसा धर्म ही व्यक्ति की सुख-शांति का आधार तथा पवित्रता का साधन होता है। साधु-संत ऐसे धर्म की आराधना के लिए ही अपने जीवन को समर्पित करते हैं।

कुछ लोगों की धारणा है कि धर्म की जीवन में कोई अपेक्षा नहीं है। इसी परिप्रेक्ष्य में वे साधु-संतों की उपयोगिता पर भी प्रश्न-चिह्न लगाते हैं। चूँकि यह विचार स्वातंत्र्य का युग है, इसलिए हर व्यक्ति अपना स्वतंत्र विचार रख सकता है। पर मैं एक बात कहना चाहता हूँ - धार्मिक शिक्षा का महत्व चाहे कोई स्वीकार करे या न करे, पर व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर तक स्वस्थ जीवन के लिए नैतिकता के माहात्म्य को तो स्वीकार करना ही होगा। और जब नैतिक मूल्यों के माहात्म्य को जीवन जीने की हर भूमिका में स्वीकार किया जाता है तब धार्मिक मूल्यों की स्वीकृति तो सहज रूप से ही हो जाती है। हम न भूलें, नैतिकता का मूलभूत आधार धर्म ही है।

सत्य, अहिंसा, सहअस्वित्व, अपरिग्रह आदि धर्म के मौलिक तत्वों को भुलाकर नैतिकता सम्पन्न समाज या गष्ठ की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसलिए स्वस्थ समाज संरचना के लिए धर्म को अनिवार्य अपेक्षा के रूप में स्वीकार करना ही होगा और जब धर्म को एक स्वस्थ समाज की संरचना में अनिवार्य अपेक्षा के रूप में स्वीकृति मिलती है तब साधु समाज की उपयोगिता स्वयं-सिद्ध है। फिर इसको नकारने का कोई ठोस आधार नहीं रहता क्योंकि साधु-संत ही धर्म के मूर्त रूप होते हैं। अमूर्त धर्म का उनके जीवन में साक्षात् दर्शन किया जा सकता है। उनके जीवन की हर प्रवृत्ति व्यक्ति को धर्म के सुसंस्कार प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में साधु-संतों को हम धर्म का संदेशवाहक भी कह सकते हैं। इनके द्वारा ही समाज को धार्मिकता का सक्रिय शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त होता है। ध्यान रहे, धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण की इस भित्ति पर ही नैतिक जीवन का भव्य प्रासाद खड़ा होता है। इस आधार को सुढूढ़ बनाकर ही व्यक्ति से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के जीवन को नैतिकता के सांचे में ढाला जा सकता है।

वस्तुतः भय और प्रलोभन जैसे तत्वों से प्रेरित होकर किया गया आचरण धर्म है ही नहीं। धर्म तो अन्तर की प्रेरणा है और अन्तर की प्रेरणा से ही होना चाहिए। ऐसा धर्म ही व्यक्ति की सुख-शांति का आधार तथा पवित्रता का साधन होता है। साधु-संत ऐसे धर्म की आराधना के लिए ही अपने जीवन को समर्पित करते हैं।

धार्मिक संस्कारों के अभाव में आज नयी पीढ़ी की नैतिक आस्था एवं हिल चुकी हैं। आधुनिकता के प्रवाह एवं विकासशीलता के नाम पर उसका खान-पान, रहन-सहन जिस त्वरता के साथ विकृत होता जा रहा है, यह उसकी ही एक परिणति है। समाज का नेतृ-वर्ग एवं अभिभावक-वर्ग इस स्थिति से चिन्तित एवं व्यथित है। अपनी इस चिन्ता एवं व्यथा को वह सार्वजनिक रूप से यदा-कदा अभिव्यक्ति भी देता है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मैं उनकी इस चिन्ता एवं व्यथा को अस्वाभाविक नहीं मानता क्योंकि इस स्थिति के बहुत दूरगमी परिणाम हैं। यद्यपि नयी पीढ़ी में कुछ प्रतिशत लोग आज भी सुसंस्कारित हैं परन्तु जहाँ अधिक प्रतिशत लोगों का प्रश्न है, संस्कारों का यह खोखलापन स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

ऐसे में समाज के नेतृ-वर्ग एवं अभिभावक-वर्ग से मैं कहना चाहता हूँ कि वे चिन्ता एवं व्यथा के स्थान पर समुचित चिन्तन एवं व्यवस्था करें। वस्तुतः चिन्ता करना या व्यथित होना किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। जीवन एवं समस्या का शाश्वत सम्बन्ध है। जहाँ जीवन है, वहाँ समस्या भी साथ-साथ चलती है। इस तथ्य को स्वीकार कर हम समस्याओं से घबराएं नहीं, अपितु चिन्तन-मनन के द्वारा उनका समुचित समाधान खोजें। आप निश्चित मानें, हमारी समस्याओं को सुलझाने के लिए कोई भगवान नहीं आएगा। हमारी समस्याओं को समाहित करने के लिए हमें स्वयं भगवान बनना होगा। हमें स्वयं ही उनका समाधान खोजना होगा।

मेरा अनुभव है कि मानसिक संतुलन एवं धैर्यपूर्वक चिन्तन-मनन के द्वारा विषम से विषम समस्या का भी सुन्दर से सुन्दर समाधान निकल सकता है। समाधान मिलने के पश्चात् हम उसकी क्रियान्विति की समुचित व्यवस्था करें। इसके अतिरिक्त किसी भी समस्या के समाधान की कोई वैकल्पिक प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती। वर्तमान में नयी पीढ़ी के संस्कारों की समस्या को भी हमें इसी परिप्रेक्ष्य में समाहित करना है। साधु-संतों का साक्षिध्य साधने एवं धार्मिक उपासना करने की बात मैंने कही। समस्या के समाधान की दिशा में ये दोनों महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। नैतिक शिक्षा, संस्कार केन्द्र, सत्साहित्य का अध्ययन आदि इस यात्रा के अन्य महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पड़ाव हैं। ■



स्वावलम्बन की अनुप्रेक्षा

अंगों को काम में लेना और नियोजित करना, यानी शक्ति का उपयोग करना है पुरुषार्थ और अपनी शक्ति पर भरोसा करना है स्वावलंबन। अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है तो फिर स्वावलंबन की बात नहीं आती। अपनी शक्ति पर भरोसा होना पठली बात है। यह स्वावलंबन का दृष्टिकोण है और अपनी शक्ति का उपयोग करना, काम में लाना पुरुषार्थ है।

ध्या नए परम पुरुषार्थ है, यह दृष्टि जब तक स्पष्ट नहीं हो जाती है, व्यक्ति, समाज या राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। ध्यान से शक्ति का अर्जन होता है और उस अर्जित शक्ति से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ध्यान की शक्ति इतनी विस्फोटक होती है कि वह मानव चेतना में छिपी हुई अनेक विशिष्ट शक्तियों का जागरण कर मनुष्य को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है।

मैं चाहता हूँ कि हमारे साधक निराश या भय से मुक्त हों और प्रलोभन के प्रवाह में न बहें। भय और प्रलोभन से चित्त विक्षिप्त होता है। इसलिए सही पथ दर्शन में सही गुर सीखकर उसका अभ्यास करना चाहिए। इस क्रम से अपना ही नहीं, समूची मानवता का भला हो सकता है।

पुरुषार्थ हर व्यक्ति के हाथ की बात है, पर ध्यान का पुरुषार्थ कोई कोई ही कर सकता है। इसीलिए हर व्यक्ति को इसके लिए प्रयत्नशील रहने की अपेक्षा है। ध्यान का पुरुषार्थ करने वाले व्यक्तियों को दो बातों पर ध्यान देना जरूरी है - उनमें किसी प्रकार का भय न हो और उनमें किसी प्रकार का प्रलोभन न हो।

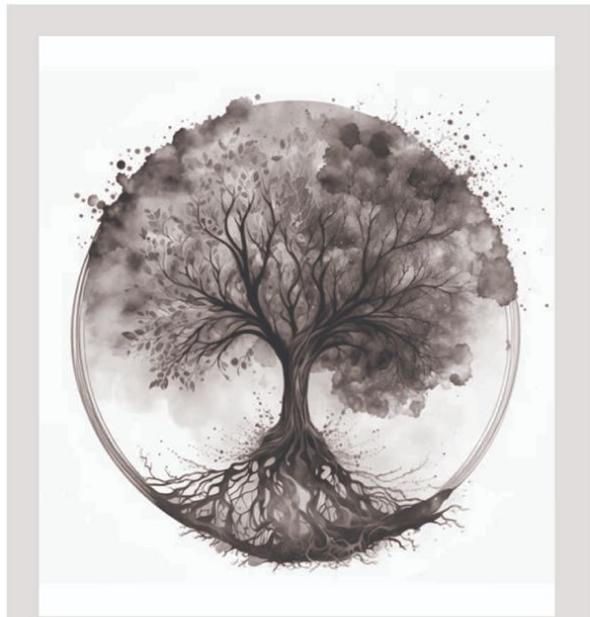
हमारे वैयक्तिक जीवन की दूसरी फलश्रुति है - स्वावलंबन। स्वावलंबन कहाँ है? इतना परावलम्बन होता है कि आदमी दूसरे

पर निर्भर होता चला जाता है। परावलम्बन का सबसे अच्छा उदाहरण है - अमरबेल। जिसके सहारे खड़ी होती है, उसे खाना शुरू कर देती है। आदमी भी कम परावलंबी नहीं है, अमरबेल से कम खतरनाक नहीं है। वह भी दूसरों के कंधों पर अपना वैभव, अपना ऐश्वर्य चलाता है और उनको चट करता चला जाता है।

आज व्यक्ति इतना परावलंबी हो गया कि उसने स्वावलंबन को बिल्कुल भुला डाला है। लगता तो यह है, यदि दूसरा काम करने वाला मिलता हो तो शायद कुछ लोग तो हाथ हिलाना भी पसंद नहीं करेंगे। मुँह में कौर डालना भी नहीं चाहेंगे। चाह रहे हैं कि ऐसी मशीन का निर्माण हो जो कोरी रसोई ही नहीं पकाये, मुँह में कौर भी दे। फिर ऐसी मशीन की खोज भी करनी होगी जो पचा भी दे। पचाने की भी फिर क्या जरूरत है? इतनी सुविधावादी मनोवृत्ति बन जाती है कि आदमी हर बात के लिए दूसरों का मुँह ताकता रहता है। इससे एक बहुत बड़ा अनर्थ हुआ है कि आदमी श्रम करना भूल गया।

प्रश्न होता है स्वावलम्बन और पुरुषार्थ में क्या अंतर है? पुरुषार्थ हमारे शरीर की प्रक्रिया है। अंगों को काम में लेना और नियोजित करना, यानी शक्ति का उपयोग करना है पुरुषार्थ और अपनी शक्ति पर भरोसा करना है स्वावलंबन। अपनी शक्ति पर





स्वावलंबन नैतिक जीवन की पहली शर्त है। समाज की भूमिका में स्वावलंबन का अर्थ यह नहीं होता कि मनुष्य दूसरों का सहयोग ले नहीं। उसका अर्थ यही होना चाहिए कि मनुष्य अपनी शक्ति का संगोपन न करे, जिस सीमा तक अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सके तथा विलासी जीवन को उच्च और श्रमरत जीवन को हेय न माने।

भरोसा नहीं है तो फिर स्वावलंबन की बात नहीं आती। जिसे अपने पैरों पर भरोसा नहीं है, उसे लाठी लेनी पड़ती है या फिर बैसाखी के सहारे चलना पड़ता है। अपनी शक्ति पर भरोसा होना पहली बात है। यह स्वावलंबन का दृष्टिकोण है और अपनी शक्ति का उपयोग करना, काम में लाना पुरुषार्थ है।

जब तक पूरा श्रम शरीर को नहीं मिलता, रोग समाप्त नहीं होते, हमारे रक्त की प्रणालियां स्पष्ट नहीं होतीं, स्वास्थ्य उपलब्ध नहीं होता। सचमुच शरीर को श्रम चाहिए। श्रम बहुत आवश्यक है। कोई श्रम न कर सके तो योगासन का आलंबन ले सकता है। योगासन के द्वारा शरीर को भी स्वास्थ्य मिलता है। श्रम हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। स्वतंत्रता, स्वावलंबन और पुरुषार्थ पर विश्वास - ये तीन सीमाएं हैं, जो व्यक्ति को अलग व्यक्तित्व प्रदान करती हैं।

मनुष्य अपने सुख-दुःख का कर्ता स्वयं है। अपने भाग्य का विधाता वह स्वयं है। मनुष्य भाग्य या कर्म के यंत्र का पुर्जा नहीं है। भाग्य मनुष्य को नहीं बनाता, मनुष्य भाग्य को बनाता है। वह अपने पुरुषार्थ से भाग्य को बदल सकता है।

स्वावलंबन नैतिक जीवन की पहली शर्त है। समाज की

भूमिका में स्वावलंबन का अर्थ यह नहीं होता कि मनुष्य दूसरों का सहयोग ले नहीं। उसका अर्थ यही होना चाहिए कि मनुष्य अपनी शक्ति का संगोपन न करे, जिस सीमा तक अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सके तथा विलासी जीवन को उच्च और श्रमरत जीवन को हेय न माने।

विलास और आराम के प्रति मनुष्य का झुकाव सहज ही होता है और इस धारणा से उसे पुष्टि मिल जाती है कि श्रम करने वाला छोटा होता है। परावलंबी जीवन का यही आधार है।

स्वावलंबन (अपनी श्रम शक्ति) का अनुपयोग और परावलंबन (दूसरों की श्रम शक्ति) का उपयोग शोषणपूर्ण जीवन का आरम्भ बिंदु है। शोषण अनैतिकता की जड़ है। अणुव्रती चाहता है कि समाज में शोषण न रहे। अतः वह स्वावलंबन या श्रम की भावना को जन-जन तक पहुँचाये।

स्वनिर्भरता

एक राजकुमार दीक्षित हो रहा था। माता-पिता ने कहा - "कुमार! तुम बड़े सुकुमार हो, बहुत कोमल हो, तुम दीक्षित हो रहे हो। तुम्हें ज्ञात नहीं है, शरीर में बीमारी पैदा हो जाएगी, हो सकती है, तो चिकित्सा नहीं करा सकोगे। अचिकित्स्य है यह संयम का मार्ग। बीमारी पैदा होने पर क्या करोगे? कौन आहार, पानी लाकर देगा? भूखे-प्यासे और रुग्ण होकर बैठे रहोगे। क्या प्राप्त होगा?"

राजकुमार बोला- "माता-पिता! जंगल में रहने वाले पशु बीमार हो जाते हैं। कौन उनकी परिचर्या करता है? कौन उन्हें भोजन-पानी लाकर देता है? रुग्ण पड़े रहते हैं। जब स्वस्थ होते हैं तब जंगल में जाकर खा-पी लेते हैं। जब ये पशु भी ऐसा कर सकते हैं तो मैं मनुष्य हूँ, ऐसा क्यों नहीं कर सकूँगा?"

यह एक महत्वपूर्ण खोज थी स्वावलंबन और स्व-निर्भरता की। रोग की स्थिति में भी दूसरे का सहारा न लिया जाये। यदि रोग का प्रतिकार करना हो तो बाहरी वस्तु से न किया जाये। 'तेगिच्छं नाभिमदेज्जा' जैन मुनि चिकित्सा की इच्छा न करे। यह बहुत प्राचीन सिद्धांत है। यह कैसे संभव हो सकता है कि बीमारी हो और चिकित्सा न हो? चिकित्सा हो सकती है, पर वह बाहरी वस्तु से न हो, यह इस सूत्र का हार्द है। स्वावलम्बन और स्व-निर्भर होकर अपनी वस्तु से चिकित्सा करो, बाह्य वस्तु से चिकित्सा मत करो, पर वस्तु से चिकित्सा मत करो।

शरीर में रोग पैदा होता है तो शरीर में नीरोगता की भी पूरी व्यवस्था है। आसनों का विकास इस दिशा में हुआ था। चिकित्सा के लिए बाहरी वस्तुओं की अपेक्षा नहीं है। आसनों का प्रयोग करो, चिकित्सा हो जाएगी। श्वास और विभिन्न मुद्राओं का प्रयोग रोग निवारण की दिशा में हुआ था। इसमें नाड़ी-विज्ञान का पूरा उपयोग किया गया था।

पाचन कमजोर है। भोजन के बाद वज्जासन में बैठो, पाचन की दुर्बलता मिट जाएगी। पाचन की गड़बड़ी है। भोजन के बाद दाएं नथुने से पन्द्रह मिनट श्वास लो, पाचन स्वस्थ होने लगेगा।



पाचन दुर्बल है। महामुद्रा का प्रयोग करो, पाचन ठीक होने लगेगा।

प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए आसन और नाड़ियों का प्रयोग तथा स्वर का प्रयोग खोजा गया था। हजारों आसनों का प्रयोग होने लगा। शारीरिक बीमारी हो तो आसनों का प्रयोग किया जा सकता है और मानसिक बीमारी के लिए भी आसनों का प्रयोग किया जा सकता है। ये सारे तथ्य स्वावलंबन और आत्मानुशासन के लिए खोजे गये थे।

युवक और स्वावलम्बन

युवकों की शक्ति आज एक समस्या बन रही है। वह ध्वंस की ओर जा रही है। भारत के युवकों की शक्ति जितनी निर्माणात्मक कार्यों में नहीं लग रही है, उससे कहीं अधिक हिंसात्मक कामों में लग रही है। युवक को शक्ति का पर्यायवाची मान लिया गया है। युवक अर्थात् शक्ति और शक्ति अर्थात् युवक। युवक शक्ति का प्रतिनिधि होता है। यह प्रतिनिधित्व तो उसने स्वीकार कर लिया किन्तु उसका ठीक नियोजन नहीं किया। इस नियोजन की गड़बड़ी के कारण आज देश में बहुत सारी समस्याएं पैदा हो गयी हैं।

आचार्य श्री तुलसी का उदाहरण हमारे सामने है। जब आचार्य श्री की अवस्था मात्र बाईंस वर्ष की थी, उस समय आपने एक शक्तिशाली संघ का नेतृत्व अपने कंधों पर लिया और उसका विकास किया। शक्ति का उपयोग रचनात्मक कामों में किया। आचार्यश्री का प्रारम्भिक सूत्र था - "हमें ध्वंस की ओर अपनी शक्ति नहीं लगानी है।" दुनिया में सबका विरोध होता है। कोई ऐसा नहीं है कि जिसका विरोध नहीं होता। सूर्य अकारण प्रकाश देता है, पर उसकी भी आलोचना होती है। विरोध होता है। हवा अकारण हमें लाभान्वित करती है, प्राण देती है, जीवन देती है, पर उसका भी विरोध होता है।

काका कालेलकर बहुत वर्ष पहले दिल्ली में आचार्यश्री से मिलने आये। आते ही बोले, "मैं आपसे मिल रहा हूँ, उसके पीछे एक प्रेरणा है। वह यह कि मेरे पास आपके विरोध में इतना साहित्य आया कि ढेर लग गया। मैंने वह साहित्य देखकर यह निष्कर्ष निकाला कि जिस व्यक्ति का इतना विरोध होता है, वह निश्चित ही जीवित व्यक्ति है। मुर्दे का विरोध कोई नहीं करता। विरोध उसका होता है जो जीवित है। आप में जीवन है और उसी ने मुझे प्रेरित किया कि आपसे मिलना चाहिए और आज मैं मिल रहा हूँ।" "विरोध हुआ किन्तु उस सारे विरोध के बीच में आचार्यश्री ने जो एक स्वर दिया, वह था- "जो हमारा हो विरोध, हम उसे समझें विनोद।" यानी विरोध को विनोद समझकर चलें। यह था शक्ति का निर्माणात्मक कार्यों में नियोजन।

जो व्यक्ति अपनी शक्ति का निर्माणात्मक और रचनात्मक कार्यों में नियोजन कर सकता है, वह सचमुच विकास कर लेता है। यदि यह बात हमारे अध्यापकों, विद्यार्थियों और मजदूरों की समझ में आ जाये तो मैं समझता हूँ कि जो रचनात्मक निष्पत्तियां

हमारे सामने आनी चाहिए, किन्तु नहीं आ रही हैं, उनका एक समाधान हो सकता है।

आज देश की स्थिति क्या है? आज के युवकों की स्थिति क्या है? शक्ति का नियोजन करने के लिए कुछेक बातों पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक होगा। पहली बात है कर्मण्यता। शक्ति तो है किन्तु कर्मण्यता नहीं है। आज हिन्दुस्तान जिस बीमारी से ग्रस्त है, वह है अकर्मण्यता और मुफ्तखोरी का पाठ उसने शताब्दियों से पढ़ लिया है। यह बीमारी उसकी रग-रग में जमी हुई है। भगवान की दया हो, कोई काम करना न पड़े, ऐसा मानस हो गया है। लेने के लिए उसका इतना मानस बन गया है कि कोई काम करना न पड़े, श्रम करना न पड़े और काम बन जाये तो भगवान की कृपा है, धर्म की कृपा है। श्रम करना पड़ जाये तो हम मानते हैं कि भगवान की कृपा कम है। धर्म की कृपा कम है।

पुराने जमाने की बात है। आचार्य भद्रबाहु एक बहुत बड़े आचार्य हुए हैं। संघ के सामने कोई कठिनाई आने पर उन्होंने एक मंत्र की रचना की। संघ का संकट दूर हो गया। एक स्त्री रसोई बना रही थी। उसका बछड़ा भाग गया। स्त्री ने सोचा, बछड़े को पकड़कर लाऊं। फिर सोचा, क्यों जाऊं? मुझे मंत्र याद है। उसने मंत्र का पाठ किया और देवी उपस्थित हो गयी। स्त्री ने कहा, "देवी! कोई संकट तो नहीं है, किन्तु मेरा बछड़ा भाग गया है। तुम उसे लाकर खूटे में बांध दो।" देवी को आश्र्य हुआ। वह भद्रबाहु के पास जाकर बोली, "महाराज! आपने क्या कर दिया है? यह मंत्र आपने क्यों दे दिया? आज तो हमे बछड़ा बांधना पड़ रहा है, कल पता नहीं क्या-क्या करना पड़ेगा।"

यह जो अकर्मण्यता की बीमारी है, अपने कर्म पर, अपने पुरुषार्थ पर विश्वास न करने की बीमारी है, हिन्दुस्तान के युवक को इस बीमारी से मुक्त होना चाहिए। अगर हमारे युवक इस बीमारी से मुक्त हो जाते हैं तो समझना चाहिए कि सबसे बड़ी समस्या का समाधान हो गया। ■

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष



"अणुव्रत आवश्यकताओं के अल्पीकरण का प्रेरक है।"



चेतना की निर्मलता

एक आदमी कभी शांत दिखायी देता है तो कभी उसे आक्रोश में भी देखा जा सकता है। आदमी में रुकाव चेतना भी होती है और अच्छी चेतना भी होती है। हम रुकाव चेतना को दूर करने का, कमज़ोर करने का, क्षीण करने का प्रयास करें और अपने आप में अच्छी चेतना जगाने का प्रयास करें, ऐसा करने से हम कल्याण के पथ पर आगे बढ़ सकेंगे।

आदमी दूसरों को देखता है क्योंकि आँखें अभ्यस्त होती हैं दूसरों को देखने के लिए। आँखों की क्षमता भी है कि वह दूसरों को आसानी से देख लेती है। आदमी का स्वयं का चेहरा देखना हो तो आँखों को दर्पण का सहारा चाहिए। अन्यथा अपना चेहरा प्रायः नहीं दिखता है। आदमी दूसरों को देखे, वह भी उपयोगी बात हो सकती है, पर अपने आपको भी देखने का प्रयास करे। बौद्ध साहित्य के महान ग्रन्थ धम्मपद में कहा गया है-

न परेसं विलोमानि न परेसं कताकं।
अत्तनो' वा अवेक्खेय्य कतानि अकतानिच ॥

अर्थात् न तो दूसरों के विरोधी (वचन) पर ध्यान दे, न दूसरों के कृत्याकृत्य को देखे, केवल अपने ही कृत्याकृत्य का अवलोकन करे।

आदमी दूसरों के विरोधी वचनों को न देखे। दूसरा कुछ भी बोल दे, कुछ भी कर दे, उसकी परवाह न करे और दूसरे क्या बुरा करते हैं, क्या भला करते हैं, उस पर भी ध्यान न दे यानी उस पर मन को केन्द्रित न करे, राग-द्रेष में न जाये। यह ध्यान दे कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैं कैसा हूँ, मेरे में क्या है? आर्हत् वाङ्मय के आयारो सूत्र में कहा गया है - 'अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे' अर्थात् यह पुरुष

अनेक चित्तों वाला है। उसमें अनेक प्रकार की चेतना होती है। एक आदमी कभी शांत दिखायी देता है तो कभी उसे आक्रोश में भी देखा जा सकता है। कभी विनम्रता की प्रतिमूर्ति-सा दिखायी देता है तो कभी उसमें अहंकार का भाव भी देखने को मिल सकता है। कभी सरलता दिखती है तो कभी कुटिलता भी आ जाती है। कभी संतोष का भाव मिलता है तो उसमें लोभ का दर्शन भी किया जा सकता है। आदमी के भीतर ऐसे भाव हैं, वे कभी उसको अच्छा बना देते हैं और कभी बुरा बना देते हैं। जब अच्छे भाव उजागर होते हैं तो आदमी का व्यवहार भी अच्छा बन जाता है और बुरे भाव उजागर होते हैं तो आदमी अपराधी भी बन जाता है। अगर आदमी के जीवन में साधना का भाव जाये तो चेतना निर्मल बन सकती है। बौद्ध साहित्य के महान ग्रन्थ धम्मपद में कहा गया है -

तेसं सम्पन्नसीलानं अप्पमादविहारिनं।
सम्मदा विमुत्तानं मारो मग्नं न विन्दति ॥

जो वे शीलवान निरालस हो विहरने वाले, यथार्थ ज्ञान द्वारा मुक्त हो गये हैं, उनके मार्ग को मार नहीं पाता। धम्मपदकार ने कहा कि जिस साधक के जीवन में यह साधना आ गयी, शील आ गया, अप्रमाद आ गया, अनालस्य आ गया, सम्यक् ज्ञान से जो पापों से





मुक्त हो गया है, ऐसे आदमी को कामना या मृत्यु कभी परास्त कर नहीं सकती, कामना उसको अपने वश में नहीं कर सकती।

साधना का एक महत्वपूर्ण सूत्र है - अनुकम्पा। यदि अनुकम्पा की चेतना आदमी में जाग जाती है तो फिर वह दूसरों का अहित करने से डरेगा। वह सोचेगा मेरी ओर से किसी को तकलीफ न हो जाये। मैं भले थोड़ा कष्ट भोग लूँ, पर दूसरों को मैं दुःख देने से बचूँ। जो दुःखी हैं, जिनका चित्त असमाधिस्थ है, चिन्ता में है, कष्टों में है, उनका मैं कितना कष्ट दूर कर सकता हूँ। जितना संभव हो सके, मैं दूसरों के कष्टों को दूर करने का प्रयास करूँ, उन्हें चित्तसमाधि पहुँचाने का प्रयास करूँ। जिसमें अनुकम्पा की चेतना जाग गयी है, वह व्यक्ति धोखाधड़ी नहीं करेगा।

एक सेठ अपनी दुकान में बैठा था। वह अनाज की दुकान थी। एक बकरा दुकान में घुस गया। सेठ ने नौकरों से कहा - "इसको बाहर निकालो।" नौकरों ने उसे बाहर निकालने का प्रयास किया, किन्तु बकरा खूंखार था। वह सामने हो गया, नौकर डर गये। सेठ ने कहा - "अरे! तुम लोग तो कागजी जवान हो, नाम के जवान हो, लाठी मुझे दो।" सेठ स्वयं उठा और बकरे के सिर में लाठी की दो-तीन जमा दी। बकरा बौं-बौं करता हुआ बाहर भाग गया। सेठ ने नौकरों से कहा - "देखा न, मेरे मैं कितनी ताकत है। मैंने असली धीखाया है।"

इस प्रकार अपनी भुजाओं को तानकर वह बता रहा था। उसकी दुकान के ठीक सामने एक बाबाजी का आश्रम था। सेठ को देखकर बाबाजी को हँसी आ गयी। सेठ ने सोचा, महात्माजी बड़े त्यागी पुरुष हैं। ये मेरी ओर देखकर हँस रहे हैं। इसके पीछे कोई कारण होना चाहिए। सेठ आश्रम में गया।

महात्माजी - "सेठ साहब! आज कैसे आ गये?"

सेठ - "महाराज! आज तो आपने ही बुला लिया। आप मेरी ओर देखकर हँस रहे थे। आपके हँसने का कारण क्या था?"

महात्माजी - "अभी दुकान में कौन आया था?"

सेठ - "अभी तो बकरा आया था।"

महात्माजी - "तुमने क्या किया?"

सेठ - "मैंने उसको मारकर निकाल दिया। अन्यथा वह सारा अनाज खराब कर देता।

महात्माजी - "वह बकरा पिछले जन्म में कौन था?"

सेठ - "यह ज्ञान तो मुझे नहीं है। आप ज्ञानी पुरुष हैं, आप ही बताएं।"

महात्माजी - "तुम्हारे पिताजी का नाम क्या था?"

सेठ - "मेरे पिताजी का नाम तो सेठ श्रीधरजी था।"

महात्माजी - "वे कहाँ हैं?"

सेठ - "वे तो कुछ वर्षों पहले दिवंगत हो गये थे।"

महात्माजी - "तुम्हारा पिता धोखाधड़ी करता था। इसलिए उसकी गति खराब हो गयी। वह मरकर बकरे की योनि में आ गया। आज जब उसे कसाई पकड़ने के लिए आ रहा था तो उसने बाजार में यह दुकान देखी। दुकान देखते ही पिछले जन्म का ज्ञान हो गया। उसे याद आ गया कि यह दुकान तो मेरी है। मेरा बेटा ही तो मालिक है। मैंने ही तो दुकान शुरू की थी। यहाँ मैं सुरक्षित रह सकता हूँ। यह सोचकर वह तुम्हारी दुकान में घुसा था। तुम ऐसे सपूत निकले कि बेचारे को मार-मार कर भगा दिया।"

यह सुनते ही सेठ के मानो होश उड़ गये। उसने कहा - "अभी जाता हूँ और उनको लेकर आता हूँ।"

संत - "अब क्या लेकर आओगे, उसका तो काम तमाम हो गया। कसाई ने उसको पकड़ा और खत्म कर दिया।"

कथन का तात्पर्य है कि जो छल-कपट करता है, झूठ बोलता है तो उसकी अगली गति खराब हो सकती है। जिसमें अनुकम्पा की चेतना होती है, वह व्यक्ति धोखाधड़ी करने से बचता है, गलत कामों से बचता है। नशामुक जीवन जीता है, संयम का जीवन जीता है। धर्म का एक सार है - जीवन में अनुकम्पा जाग जाये, सद्ग्रावना जाग जाये। परस्पर सबमें प्रेम और सौहार्द बना रहे। छोटे-छोटे प्राणियों के प्रति, जीव-जन्मतुओं के प्रति, पशुओं के प्रति भी हमारे मन में दया की भावना रहे। हमारी ओर से किसी को तकलीफ न हो। वे भी जीव हैं, प्राणी हैं। उनमें भी आत्मा है। हम उनके प्रति भी अहिंसा और मैत्री की भावना रखें।

आदमी में खराब चेतना भी होती है और अच्छी चेतना भी होती है। हम खराब चेतना को दूर करने का, क्षीण करने का प्रयास करें और अपने आप में अच्छी चेतना जगाने का प्रयास करें, ऐसा करने से हम कल्याण के पथ पर आगे बढ़ सकेंगे। ■



मानव जीवन में संयम की उपादेयता

मुक्त भोग और पूर्ण त्याग के मध्य आत्मनियंत्रण की स्थिति है - संयम। शाब्दिक रूप से सरल होते हुए व्यावहारिक रूप से यह अत्यंत कठिन है। संयम बेशक रखा जा सकता है लेकिन वह दृढ़ संकल्प और विश्वास के बिना संभव नहीं है। मनोवेगों और विकारों को रोके बिना इसे पाया नहीं जा सकता। नियम और अनुशासन के बगैर हम इसे हासिल नहीं कर सकते।

हमारा जीवन कभी भी निरापद नहीं होता। घात-प्रतिघात, समस्याएं कभी समाप्त नहीं होतीं। एक से निजात मिलती है तो दूसरी समस्या आ जाती है। दूसरी समाप्त होने को आती है तो तीसरी प्रारंभ हो जाती है। जीवन एक पक्षीय नहीं होता। तार से तार जुड़े हैं। सुख-दुःख, आशा-निराशा, हार-जीत हमारे जीवन के साथ-साथ यात्राएं करते हैं। ऐसे में यह प्रश्न हमेशा उठता है कि हम कब तक विपरीत स्थितियों को पीठ देकर संयम रख सकते हैं। साधना की वजह से ऋषियों-मुनियों, संत-महात्माओं में चीजों को जज्ब करने की ताकत ज्यादा होती है, हालाँकि विचलन वहाँ भी होता है, किन्तु विचलन को संयमित करने में वे पारंगत होते हैं।

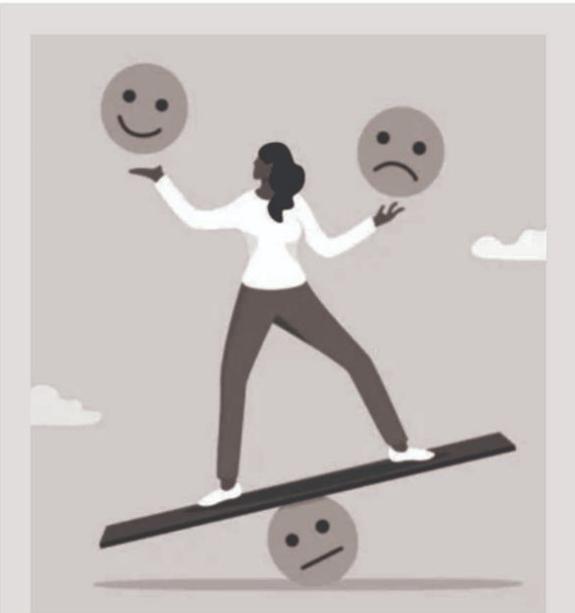
पातंजलि योग सूत्र में धारणा, ध्यान और समाधि को समेकित रूप से संयम कहा गया है। मुक्त भोग और पूर्ण त्याग के मध्य आत्मनियंत्रण की स्थिति है संयम। शाब्दिक रूप से सरल होते हुए व्यावहारिक रूप से यह अत्यंत कठिन है। संयम बेशक रखा जा सकता है लेकिन वह दृढ़ संकल्प और विश्वास के बिना संभव नहीं है। मनोवेगों और विकारों को रोके बिना इसे पाया नहीं जा सकता। नियम और अनुशासन के बगैर हम इसे हासिल नहीं कर सकते।

हमारा जीवन उपादेयता पर निर्भर है। बाजार और भूमंडलीकरण ने हमें सभी दिशाओं से ग्रस लिया है। विचित्र प्रकार की उदासी, कुछ न कर पाने की निराशा हमें छलनी कर रही है। महांगाई, बेरोजगारी और उपेक्षा के कारकों ने हमें अवसाद की ओर मोड़ दिया है। जीवनशैली में आये बदलाव हमें किसी भी स्थिति में सामान्य नहीं रहने देते। ऐसे में स्वाभाविक संयम गायब हो रहा है। उसके स्थान पर जबरिया संयम हमें भीतर ही भीतर खोखला करता रहता है।

संयम का संधान और पालन किसी भी सूरत में किसी तपस्या से कम नहीं है। सामाजिक चेतना और जीवन मूल्यों के विकास में नैतिकता की विराट भूमिका है। नैतिकता का रिश्ता आचरण और व्यवहार की समन्वित एकता और उसके सतत विकास से है, जिसमें अच्छाई-बुराई और आचरण के व्यापक परिप्रेक्ष्य और फलक से संबद्ध है। हम चाहे जितने प्रलोभनों में हों, यदि संयम और इंद्रियबोध, संयमित, आचरण की शुचिता से संचालित हैं तभी हम संयमित हो सकते हैं और हर प्रकार के विचलन से बच सकते हैं।

संयम एकदम सरल चीज नहीं है। जो सतत सजग, कर्मठ और मूल्यों के व्यापक परिप्रेक्ष्य की चिंता नहीं करता, वह संयमी





जो सतत सजग, कर्मठ और मूल्यों के व्यापक परिप्रेक्ष्य की चिंता नहीं करता, वह संयमी भी नहीं हो सकता। जो अपने ऊपर राज नहीं कर सकता, वह जीवन में संयमी भी नहीं हो सकता। संयम का शिता स्वावलंबन और स्वतंत्रता से है और मोटे तौर पर आत्म नियंत्रण से भी है। आत्म नियंत्रण के बिना संयम धारण करना संभव नहीं है।

भी नहीं हो सकता। जो अपने ऊपर राज नहीं कर सकता, वह जीवन में संयमी भी नहीं हो सकता। संयम का शिता स्वावलंबन और स्वतंत्रता से है और मोटे तौर पर आत्म नियंत्रण से भी है। आत्म नियंत्रण के बिना किसी भी सूरत में संयम धारण करना संभव नहीं है।

जीवन में कई बार ऐसी-ऐसी परिस्थितियाँ और ऐसी-ऐसी विरोधाभासी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं कि स्वयं को संयमित रख पाना बहुत ही दुष्कर हो जाता है। यानी जब आपकी जान जा रही हो, आपके गले पर तलवार खींची हो तो आप कब तक संयम धारण कर सकते हैं? क्या अपने आपको आततायी से बचाने का प्रयत्न नहीं करेंगे। ...और यदि प्रयत्न नहीं करेंगे तो वह मार ही डालेगा। ठीक है कि महात्मा गांधी ने संयम, त्याग और अहिंसा को महत्व देते हुए कई आंदोलन रोक दिये थे, लेकिन जब जीवन दांव पर लगा होता है तो क्या यह संभव है कि हम उदासीन बने रहें और अपने आपको निरापद समझते रहें। यह भी हमारे संयम की बहुत बड़ी परीक्षा है।

आदमी की परीक्षा तो प्रायः हर समय होती रहती है। इसलिए जब जीवन ही दांव पर लगा हो और प्रतिरोध के बगैर अपने आपको बचा नहीं सकते तो ऐसी स्थिति में हम कब तक संयम धारण कर

सकते हैं। मौन धारण करने से या आरोपित संयम बनाये रखने से यदि आजादी का खात्मा हो रहा हो तो क्या हमें प्रतिरोध नहीं करना चाहिए? जब जनतंत्र को चूर-चूर किया जा रहा हो तो कब तक संयम बनाये रखा जा सकता है? ऐसे अवसरों पर हमारा फर्ज हो जाता है कि हम संयम का त्याग कर जो विभीषिका हमारे सामने है, उसका सार्थक प्रतिरोध करें। यह भी हमारे संयम में शामिल होना चाहिए।

"निज वश में हो इन्द्रिय, नियम की तलवार से मन ज्ञान और विज्ञान नाशक, कामना को मार दे कामना अनंत की, न कामना का अंत है, संयम का संबल लेकर, भव से नौका पार ले।"

संयम को एक युद्ध अपने ही विरुद्ध भी कहा जा सकता है। व्यावहारिक जीवन के सुचारू संचालन और आध्यात्मिक साधनाओं में सफलता पाने के लिए संयम का होना अत्यंत आवश्यक है।

रीवा निवासी लेखक हिन्दी आलोचना जगत के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य-साधना में संलग्न हैं।

ग़ज़ल

■ नवीन माथुर पंचोली - धार ■

सपना वो हँसने जैसा है।
जागे-जागे जो देखा है।
सारी रात जगाया उसने,
दिन भर जो हमने सोचा है।
बूझ न पाये हम उसको ही,
जो अक्सर खुद से पूछा है।
मतलब के दम पर चलता है,
जो रिश्ता जितना झूठा है।
साथ निभाने वाला अक्सर,
धोखों में पीछे छूटा है।
चहरे पर दिखता है वो ही,
दिल में जो छुपकर पलता है।
जज्बातों में आया जो भी,
उसने ही खाया धोखा है।
पैसा ही है जिससे सारा,
रहता सब पर दम-रुतबा है।



बढ़ती उम्र को न होने दें हावी

वृद्धावस्था को कर्तई बोझ नहीं समझें। यह जीवन की सतत प्रक्रिया है, जहाँ बचपन आता है तो जवानी भी कुलांचे भरती है। इसके आगे का क्रम वृद्धावस्था का है जो प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसे सहज ही स्वीकार कर लेना चाहिए। जीवन में हम जितने सकारात्मक रहेंगे, उतने ही सुखी रहेंगे।

सरकारी नौकरी करने वाला व्यक्ति आम तौर पर 60 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त हो जाता है। इसके साथ ही उसके परिजन और पड़ोसी उसे बृद्ध मानने लगते हैं। धीरे-धीरे उस व्यक्ति के मन में भी यह बात घर करने लगती है कि वास्तव में वह बूढ़ा हो गया है।

व्यक्ति जब खुद को बृद्ध मान लेता है और मन से हार जाता है तो शरीर भी उसका साथ नहीं देता। वह भी कमजोर होने लगता है। यही कमजोरी आगे चलकर कई प्रकार की बीमारियों को आमंत्रण देती है। बीमार व्यक्ति अपने परिजनों पर आश्रित हो जाता है और यह सिलसिला लम्बे समय तक चलने के बाद घर में खटपट शुरू हो जाती है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वृद्धावस्था में शरीर कमजोर हो जाता है, काम करने की क्षमता पहले जैसी नहीं रहती, लेकिन व्यक्ति यदि चाहे तो इस अवस्था में भी अपने आपको चुस्त-दुरुस्त रख सकता है। इसके लिए नियमित रूप से सुबह टहलना और व्यायाम करना चाहिए। सकारात्मक सोच के साथ घर में अपनी क्षमता के अनुसार कार्य भी करना चाहिए। खाली समय में स्वाध्याय करना चाहिए, श्रद्धा भाव से भगवान का स्मरण करना चाहिए। ...और सबसे महत्वपूर्ण बात, घर में जो भी भोजन

बना हो, बिना किसी ना-नुकर के उसे भगवान का प्रसाद मानकर ग्रहण करना चाहिए। हम जितने संयमित, नियमित होंगे, शारीरिक-मानसिक तौर पर उतने ही फिट होंगे।

यह भी देखने में आता है कि किसी प्रकार की सुख-सुविधा नहीं होने पर भी लोग प्रसन्न रहते हैं, स्वस्थ रहते हैं। वहीं, कुछ लोग सारी सुख-सुविधाएं होने पर भी कई प्रकार की बीमारियों एवं परेशानियों से जूझते रहते हैं। इसलिए स्मरण रखें, जीवन में हम जितने सकारात्मक रहेंगे, उतने ही सुखी रहेंगे।

वृद्धावस्था को कर्तई बोझ नहीं समझें। यह जीवन की सतत प्रक्रिया है, जहाँ बचपन आता है तो जवानी भी कुलांचे भरती है। इसके आगे का क्रम वृद्धावस्था का है जो प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसे सहज ही स्वीकार कर लेना चाहिए। हमने अपने जीवन में अपनी क्षमता के अनुसार बहुत कुछ किया है। अब बारी आगे की पीढ़ी की है। वह जैसा कर रही है, उसे करने दें, बिना माँगे सलाह देने से बचें। हमेशा खुश रहने का प्रयास करें। किसी प्रकार की चिंता नहीं करें, जो हो रही है वह होगा। चिंता करने से उसमें कुछ भी सुधार होने वाला नहीं है। हाँ, सकारात्मक भाव से चिंतन करना चाहिए कि जो भी समस्या सामने है, वह समय पर सुलझे और भविष्य में उत्पन्न नहीं हो। ■■■



जय जय ज्योतिचरण जय जय महाश्रमण

ज्वैलर्स शॉप इंश्योरेंस



हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
सुफ्त कोटेशन प्राप्त करें।

लाईफ इंश्योरेंस



नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें।

इंश्योरेंस टिप्स

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियो प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार हैं।

**Legacy of
39
Years**

**25000
HAPPY
CUSTOMERS
INDIA & ABROAD**

**11000
Claims
Solved**

**300
National &
International
Awards**

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए हैं जिसमें पॉलीसी है
ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडिक्लेम, फायर एवं बर्गलरी।



Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A



One Stop Insurance Solution in India !



Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

Contact Details :

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A. Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222



Violence, Nonviolence and Peace : A Critical Study



The conflict of self and not self, or selfishness or unselfishness as the proper cause of evil or violence, can be solved through the expansion of heart or mind through selfless activities. Selflessness or disinterested attitude towards life finally lead to ultimate freedom from all sufferings through the cultivation of good or nonviolence as moral, perfect and infinite nature of man as truth in him.



Human essence in creative form is to be examined as a human value which is manifested in different degrees leading to its highest development as truth, beauty and goodness in harmony. For this Wollaston unites good with truth. Herbert identifies good with beauty and Keats also asserts that both truth and beauty are inseparable.

So, reality in life is to be observed as the co-ordination of these values through the intellectual, emotional and volitional states of being as the expressions of different facts of experiences like good as the spirit of nonviolence and evil as the expression of violence in different stages with the process of realising the highest or supreme good as the highest state of realising the ideal of nonviolence in harmony. Man realises perfection, joy or truth as infinite power not

through an empirical process, but through a transcendent - experiential process. Ross, Ewing and others also recognise man's intuitive realisation of supreme value which is intimately related to the infinite quality. This, as Tagore, a great contemporary Indian Thinker, evaluated, is an "Innermost Beauty" or "Goodness" or "Mangala", expressed through man's creative nonviolent activities. Thus, the realisation of goodness through man's creative nonviolent activities is the proper way for the realisation of his infinite self.

Educationists, like Hegel, also regard self-realisation as the highest good that is possible through self-sacrifice. In this connection we may refer to Hegel's dictum "Die to live". The more we can rise above our poor, individual and private self and can identify ourselves with wider and social life,





Selfishness and narrowness of heart are the main causes of evils in life and society. The activities guided by selfishness create disunity or disharmony among men which are responsible for producing different types of evils.

the more we realise higher, social and Universal Self.

So truth, beauty and goodness are to be explained in the context of integral transcendental perspective. But this idea of integrality is not state identity, it on the other hand is a dynamic process of manifestation through diversities. Thus, the integral process of truth, beauty and goodness in the life of man can be explained through the establishment of relation of one with the other. The goodness through the selfless activities as prevalent among men both of the West and the East in general, is the idea of good as "maitri" of Buddha as harmonious relation with all. This realisation of harmony in man is possible if he overcomes his poor ego and feels the existence of universality in him and thus he realises good as the realisation of Universal Self. This can be possible through the humanistic process of love as the substratum of good.

It may be noted in this connection that the ideal of love exists in the very nature of man that inspires him to love others and to sacrifice for others and so the realisation of goodness through love helps a man to realise a higher or greater self in him. In the observation of Tagore it may be said thus, "To live the life of goodness is to live the life of all." In this way goodness in thought, activity and life, rouses the feeling of comprehensive consciousness of "sarvanubhuti" as the feeling of oneness.

But the limited outlook on life giving rise to the contradictions and differences, produces badness or imperfection as evil in life, if one is not aware of the transcendental experiential principle of existence. The transcendent integrality which sustains one with all, is goodness, and the difference, which creates many limitations and separates one from the other due to loss of transcendent outlook, is bad or evil. So evil to life and society, due to the lack of transcendent vision, creates hindrances on the way towards the foundation of integral vision of infiniteness on universality infinite life.

In the interpretation of the problem of good as value or ideal of nonviolence and evil as bad or imperfection as violence, it may be said that this problem exists in the very nature of man when man fails to place himself in transcendent-experimental process. So long as man inhabits only with the confronted situation, losing sight of transcendental visions - he fails to comprehend the implication of inner spirit that creates limited procedure of life, making man alone, separated and selfish. Selfishness and narrowness of heart are the main causes of evils in life and society. The activities guided by selfishness create disunity or disharmony among men which are responsible for producing different types of evils.

Too many personal demands, self-interests, individual necessities etc. increase ordinary desires of man that drive him to

proceed towards the fulfilment of gross happiness and poor enjoyments. Aristotle also points out that to seek more happiness is to create evil. Thus, more satisfaction of interest and fulfilment of narrow selfishness has made man ego-centric which is the root cause of the evil in individuals' life. In this connection Huxley's opinion may also be referred to. He says, "...the fall ... is due exclusively to ego-centric use of the free will ...".

Interpreting the nature of evil caused by man's selfishness or ego-centric use of his will, it may be both moral and social in nature. Moral evils are created by man voluntarily for his own individual or personal interest. These evils can touch the interest of a man or a few men on a personal level of violence. But when evils touch the general interest of man on the social level, the same may be called social level of violence. These are due to narrow interests, creating different limitations or differences among men. These are different racial and communal differences due to religious or political fanaticism, orthodoxy, or other selfish views for enjoyment of particular privilege in society, creating different classes of people with clashes among them.

These, in the Indian context it may be noted, are due to passions as produced by ignorance which can be removed by right knowledge. It, in Jainism in conformity with Sankhya, Buddhism and Vedanta, is the real cause of freedom as the joint effect of right faith or samyak darshana, knowledge or Jnana and conduct or charitra as the three jewels or tri-ratna in cultivating universal good as creative universal spirit of nonviolence.

So the fundamental object of man is to conquer or to overcome evil or violence, but not to avoid it or not to reject its existence. The conflict of self and not self, or selfishness or unselfishness as the proper cause of evil or violence, can be solved through the expansion of heart or mind through selfless

activities. Selflessness or disinterested attitude towards life finally lead to ultimate freedom from all sufferings through the cultivation of good or nonviolence as moral, perfect and infinite nature of man as truth in him. Moral and social evils, leading to the growth of differences and contradictions in individual and social existence can be conquered and freedom of men from all evils can also be achieved, as man can remove all his limitations or finiteness and can realise infinite of Universal Man in him through the establishment of goodness of Nonviolence as perfect harmony in life.

For this, human freedom through a proper cultivation of good or nonviolence as an end and a means in life and existence, is a self creating or self-manifesting idea. On the one hand it manifests the highest state of human life and on the other hand, it creates in a human the process of love and selfless service in different stages of developing individual and social existence of man harmoniously. So good in human existence is universal in nature as it is expression of human nature as the universal union of man with all human beings in perfect harmony.

Thus, in the background of this analysis, it may finally be pointed out that foundation of our culture and civilisation is Universal Good as the expansion of creative eternal inspiration and aspiration of our life in multi-dimensional expressions beyond any limitation or dogmatism. So this, in creative socio-cultural form, expands the humanistic philosophy of integration, harmonising human values, present in scientific process of the West and humanistic process of the East, in a proper development of the fundamental basis of World Culture and World Peace in harmony. So we may conclude with the words of Radhakrishnan, "...peace is the harmonising of man in their differences..."

Author is the Director of International Society for Intercultural Studies and Research, Kolkata and is an eminent writer and peace thinker.



अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

बधाई हो भगवान! आज एक बड़ा फायदा हो गया। दो माह पुराने मावे की 10 किलो मिठाई एक आदमी सुबह खरीद कर ले गया।



वो तो ठीक है,
लेकिन अभी जल्दी घर आ जाओ
बिटवा की तबीयत बिगड़ गई है।
डॉक्टर को दिखाना पड़ेगा।



आज उसके स्कूल में एक बच्चे के जन्मदिन पर उसके अभिभावकों ने मावे की मिठाई बाँटी थी,
शायद वही नुकसान कर गई...



हे भगवान, ये क्या हो गया!
काश, मैं अणुव्रत की बात याद रखता-
अपने फायदे के लिए किसी दूसरे के साथ छल नहीं करना चाहिए।





उपेक्षिता

■ प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' ■

उपेक्षिता बोली - "दादी, आपको किसी वृद्धाश्रम में जाने की जरूरत नहीं है।" "जिस बच्ची को संसार में कदम रखने के पहले मैं मार देना चाहती थी। जिसको मैंने 'उपेक्षिता' ऐसा कलंकित नाम दिया, आज वही बच्ची मेरा सहारा बन रही है।" यह सब सोचते हुए दादी एक बार पुनः फफक पड़ीं।

उपेक्षिता ने मायके के दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुला, सामने अर्चना भाभी अवाक् खड़ी थी। क्षणभर दोनों निस्तब्ध एक-दूसरे को अपलक देखते रहीं। अर्चना को ननद के इस तरह आने की कल्पना तक नहीं थी। "भाभी! क्या बात है? अंदर आने को नहीं कहोगी? तैयार तो इस तरह हो जैसे कहीं जाने की तैयारी हो।" उपेक्षिता बोल पड़ी।

"अरे! अंदर आओ दीदी। यह आपका ही घर है। अपने घर में इजाजत लेने की जरूरत नहीं होती।" यह सब कहते हुए अर्चना

जब उसे घर के अंदर ले आयी तो भाई और दादी को भी तैयार देख उपेक्षिता पूछ बैठी - "लगता है आप लोगों को कहीं जाना है। मैं वापस जाती हूँ, फिर कभी आ जाऊँगी।" छोटा भाई रोहित अब तक दीदी के आने का कारण सोच ही रहा था लेकिन जब उसे कुछ याद नहीं आया तो बोल उठा - "दीदी! अचानक कैसे आना हुआ? मुझे बता देती तो मैं तुझे लेने आ जाता।"

"तुम तो कुछ मत ही बोलो। दीदी के प्रति ज्यादा प्यार मत दिखाओ। बहुत दूर नहीं हूँ। तेरी तीनों बहनों में सबसे नजदीक मैं



ही हूँ, मगर तीन साल में राखी तक बंधवाने कभी नहीं आया और कहता है लेने आ जाता...। दुर्घटना में मम्मी-पापा की मौत के तीन साल हो गये। तब मैं यहाँ आयी थी। उसके बाद किसी ने मेरी खबर नहीं ली।" छोटे भाई के प्रति उलाहना का भाव जताने के बाद वह दादी की ओर मुखातिब होकर बोली - "दादी! अपनी उपेक्षिता को भी तो कभी-कभार याद कर लिया करो। याद है...मेरा यह नाम भी आपका ही दिया हुआ है।" यह कहते हुए जब वह दादी के पास गयी तो उनकी आँखों से गंगा-यमुना की धारा बह रही थी। दादी को रोते देख उनके गले लगकर वह भी सुकक पड़ी। अचर्चा ने दोनों को अलग करते हुए कहा - "आप दोनों रोती ही रहेंगी या मुझे खाने-पीने की कुछ तैयारी करने का आदेश भी देंगी।"

"हां बेटा! घर की बेटी ने तीन साल बाद कदम रखा है। उसका स्वागत होना ही चाहिए। तू इसका प्रिय नाश्ता पोहा, प्याज के पकड़े और अदरक वाली चाय तैयार कर लो।" दादी ने अपने आँसुओं पर काबू पाने की कोशिश करते हुए कहा।

यह सब सुनकर उपेक्षिता क्षणभर विस्मित रही और फिर पूछा - "दादी! मेरी पसंद-नापसंद क्या है...आपको कैसे पता? आपको तो मैं फूटी आँख भी नहीं सुहाती थी।"

यह सुनकर दादी चिंतन में डूब गयीं। पिछली घटनाएं चलचित्र की तरह उनके सृति पटल पर धमाचौकड़ी मचाने लगीं - "जब यह अपनी माँ के कोख में आयी थी तब मैंने कितने अरमान संजोये थे कि दो पोतियों के बाद मैं पोते का सुख प्राप्त करूँगी। मैंने इसकी माँ को हिदायत दी थी कि मुझे तो हर हाल में पोता ही

चाहिए। मैंने तो उसे यहाँ तक कह रखा था यदि इस बार घर में पोती लायी तो मेरा मरा हुआ मुँह देखोगी। यह सब कहते हुए मैं यह नहीं समझ पायी कि मेरी बहू कितने दबाव में थी। मेरे दबाव के कारण ही उसने अपने मायके में संतान को जन्म देना उचित समझा। मेरे बेटे ने भी यह कहते हुए उसका साथ दिया कि माँ, मैं उस समय बाहर रहूँगा। फिर आप अकेले सब कैसे संभाल सकेंगी? ...और जिस समय मुझे तीसरी पोती के जन्म की खबर मिली, उसी समय मेरे भाई की मौत की भी खबर मिली। मेरा वह भाई जो हर पल मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार रहता था। जब भी मुझे उदास देखता, मेरे पीछे पड़ जाता था। जब तक वह मेरी उदासी का कारण पता करके मुझे हँसा नहीं देता था, तब तक चैन नहीं लेता था। यहाँ तक कि मेरी गलतियों को भी अपने ऊपर लेकर मम्मी-पापा की डांट खा लेता था किंतु मुझ पर आँच नहीं आने देता था। यदि मैं कभी बीमार होती तो वह बेचैन हो जाता था। हर समय मेरी तीमारदारी में तत्पर रहता था। लाखों में एक ऐसे प्यारे भाई की मौत की खबर ने मेरे दिक्यानूसी विचार को और अधिक मजबूत कर दिया कि यह बच्ची नहीं, अपशकुन है इस परिवार के लिए। इसके जन्म पर मैंने मातम मनाया था। उस समय ऐसे मांगलिक अवसरों पर थाली बजायी जाती थी, गीत गाये जाते थे लेकिन मैंने सब पर रोक लगा दी थी। यहाँ तक कि मम्मी-पापा, नाना-नानी के द्वारा दिये गये नाम 'अपराजिता' को जबरन बदलकर 'उपेक्षिता' कहना शुरू कर दिया और बाद में 'उपेक्षिता' नाम ही सभी की जुबान पर चढ़ गया। बेटे और बहू जब इसे लेकर अपने घर आये तो गोद में लेने की कौन कहे, मैंने तो इसका मुँह देखना भी पाप समझा था। मैंने हमेशा



इसको तिरस्कृत किया, उपेक्षित किया। इसके बाद पोते रोहित के जन्म पर मैंने बहुत बड़ा जलसा किया था। चारों बच्चों में मैंने इसके प्रति कितना सौतेला व्यवहार किया! हर समय इसे डाँटती-मारती और बात-बात पर उलाहना देती। किस तरह इसके बचपन को मैंने नरक बना दिया था! फिर भी यह बच्ची आज दादी से मिलने आयी है जबकि तीन साल पहले मैंने इसके पति को यह कहकर घर से निकाल दिया था कि इस देहरी पर कभी कदम मत रखना।"

दादी यह सब सोच ही रही थीं कि अर्चना नाश्ता लेकर आ गयी। "दादी! कहाँ खो गयीं आप बात करते-करते...किस दुनिया में चली गयीं?" उपेक्षिता के स्वर दादी के कान में गूँजे और वह बोल पड़ीं - "कुछ नहीं रे...तेरे ही बारे में सोचने लगी थी। मैंने तुझे बचपन में कितना सताया था, कितनी यातना दी थी। वही सब सोच रही थी। अच्छा बता, तेरे पति कहाँ है, कैसे हैं?

"वे यहीं हैं। मेरे साथ आये हैं।"

"तेरे साथ आये हैं? ...पर हैं कहाँ? तू उन्हें अंदर क्यों नहीं लायी।"

"दादी! अंदर कैसे लाती? आपने तीन साल पहले क्या कहा था?" दादी ने एक बार फिर अपने आँसुओं को रोकते हुए पोते रोहित से कहा - "बेटा! जा, कुंवर साहब को सम्मान घर के अंदर ले आ। आज मैं उनका तिलक करूँगी, स्वागत करूँगी और अपनी गलतियों की माफी माँगूँगी।"

थोड़ी देर बाद रोहित जब अपने जीजाजी को लेकर घर के अंदर आया तो दादी अपने दामाद के पैरों पर गिरकर क्षमा माँगना चाहती थीं किंतु उन्होंने दादी के पैरों में नतमस्तक होकर आशीर्वाद माँगा। नाश्ते के बाद उपेक्षिता बोली - "दादी, मेरे घर चलो। हम आपको लेने आये हैं। आपको किसी वृद्धाश्रम में जाने की जरूरत नहीं है। आपकी यह पोती अभी जिंदा है। वह अपनी दादी का अच्छा खयाल रख सकेगी।"

"पर बेटी! तुझे पता कैसे चला? हमने तो तुम्हें सूचना भी नहीं दी थी। तेरी दोनों बड़ी बहनों को जरूर बताया था, पर उन दोनों ने हाथ खड़े कर दिये थे।?"

"दादी! जिस वृद्धाश्रम में आपको जाना था, उसके मालिक मेरे पति के मित्र हैं। मेरे पति ही वहाँ ऑडिट का कार्य करते हैं। उन्हें कल शाम को पता लगा और हमने रात में ही तय कर लिया कि दादी को घर लाना है।"

यह सुनकर दादी किंकर्त्तव्यविमूँढ़ हो गयीं। "जिस बच्ची को संसार में कदम रखने के पहले मैं मार देना चाहती थी। जिसको मैंने 'उपेक्षिता' जैसा कलंकित नाम दिया, आज वही बच्ची मेरा सहारा बन रही है।" यह सब सोचते हुए दादी एक बार पुनः फफक पड़ीं।

 लाडनूँ में रहने वाले लेखक जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक हैं।

लघुकथा

संकल्प

■ डॉली शाह-हैलाकादी ■

लगभग दो साल से वर्षा न होने के कारण असम के सभी चाय बागानों में सूखे की स्थिति बनी हुई थी। शाहजी इसी बात को लेकर बहुत चिंतित थे क्योंकि उनका बागान भी इससे प्रभावित हो रहा था। कहते हैं कि जब किसी को अपनी समस्याओं का हल नहीं मिलता तो वह अंत में भगवान की शरण में चला जाता है। शाहजी भी वर्षा के लिए पुजारियों की सलाह पर मंदिर में जाकर पूजा-पाठ करवाने लगे। पूजा-पाठ कराते एक सप्ताह गुजर गया, पर बारिश का नामो-निशान तक नहीं दिखा। अब शाह जी बड़े दुःखी हुए। कर्मचारियों के सामने भी उन्हें शर्मिंदगी-सी महसूस होने लगी।

एक दिन हताश होकर मंदिर में चुपचाप बैठे मानों ऊपर वाले से शिकायत कर रहे रहे थे। इतने में एक पर्यावरणविद् युवक उधर से गुजरते हुए उन्हें दो पलतों निहारता रहा। फिर बोला - "दादाजी क्या बात है? आप इन्हें उदास क्यों हैं?"

गंभीर स्वर में वह बोले, "कुछ नहीं बेटा।"

"अरे दादाजी, बताइए तो क्या बात है?"

फिर उन्होंने सारी बातें उसे बतायीं। यह भी बताया कि अब उनके पास उर्वरक खरीदने तक के पैसे नहीं हैं।

युवक दुःखी मन से सब कुछ सुनता रहा। फिर बोला, "एक बात कहूँ, हम लोगों ने प्रकृति का दोहन कर उसके विनाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। एक तरफ हम सैकड़ों पेड़ों को काटकर और एक पौधा लगाकर ढकोसला कर रहे हैं, दूसरी तरफ बड़ी-बड़ी मशीनों, कारखानों से धुआं फैलाकर पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। आप मंदिर में बैठकर भगवान से शिकायत करने के बजाय यदि सभी चाय बागान के मालिकों की सभा का आयोजन कर एक संकल्प लें कि हर व्यक्ति एक दिन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएगा तो यकीन मानिए, बहुत जल्द ही हम प्रकृति का नया रूप देख पाएंगे। इससे हमारी आने वाली पीढ़ियों को इस तरह प्रकृति का प्रकोप नहीं सहना पड़ेगा और हमारे कर्मों से आज जो प्रकृति रुठी है, वह भी खुश हो जाएगी। फिर बागानों में हरियाली ही हरियाली छा जाएगी...।"

संयम से सार्थक बनाएं जीवन

एक अकेला व्यक्ति न तो प्रेम कर सकता है और न ही संघर्ष। एक से दो या अधिक होने पर परिवार या समाज का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। रुचि, स्वभाव, रहन-सहन व प्रवृत्ति की भिन्नता प्रतिक्रिया पैदा करते हैं। वाणी की सरसता से परस्पर प्रेम पनपता है और वाणी की कटुता से कलह। एक बार एक बहू परिवार में कलह से तंग आकर पास के तालाब में डूबकर जान देने के लिए घर से निकली ही थी कि एक वृद्ध मिल गयी। जानकारी होने पर वृद्धा ने एक दवा की बोतल देते हुए उससे कहा कि जब भी कोई कटु बोले तो यह दवा ले लेना। हाँ, शर्त यह है कि पाँच मिनट तक इस दवा को गले से नहीं उतारना। बहू घर गयी और इस प्रयोग को प्रारंभ किया। प्रवृत्ति हुई, पर प्रतिक्रिया नहीं। धीरे-धीरे परिवार का वातावरण सरस बन गया। वाणी संयम का यह प्रयोग - प्रतिक्रिया न करना सार्थक जीवन के लिए अत्यंत कारगर है। क्रोध, ईर्ष्या, स्वार्थ के वशीभूत होने वाली प्रतिक्रिया से ही तलाक, सास-बहू के झगड़े, आत्महत्या आदि की नौबत आती है। इसलिए ऐसे समय में वाणी संयम को साधना अपेक्षित है।

परिवार में कोई भी सदस्य नशा करता है तो उससे बच्चे प्रभावित होते हैं। नयी पीढ़ी का भविष्य डगमगाने लग जाता है। अतः संयमित जीवन जीना स्वयं के लिए ही नहीं, समूचे परिवार के लिए सार्थक बन जाता है। इसी तरह स्वस्थ जीवन के लिए आहार संयम जरूरी है। आजकल असंयम की एक नयी बीमारी और लग गयी है - मोबाइल और टेलीविजन। घंटों इनमें व्यस्त रहने से समय की बबर्दी के साथ ही नेत्र ज्योति विकार और अकर्मण्यता पनपती है। इसलिए टीवी और मोबाइल के उपयोग में भी संयम अपेक्षित है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को ज्ञानशाला, सांस्कृतिक चेतना के उपक्रम या खेल से जोड़ा जाये। आज के दौर में टूटते-बिखरते परिवार, तोड़फोड़, आगजनी व हिंसक प्रवृत्तियां, धार्मिक

असहिष्णुता, भय, त्रास व आतंक, भूणहत्या व नरसंहार से रीतती मानवता, जल संकट, अवांछित खनन, वनों की अंधाधुंध कटाई - ये सब असंयम की पराकाष्ठा ही तो हैं। भारत की आजादी के समय ही आचार्य तुलसी ने असंयम की इस विभीषिका को गहराई से समझा और अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर समता, समन्वय, सआसितत्व व नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापन की दिशा में जाति, रंग, सम्प्रदाय, देश व भाषा का भेदभाव न रखते हुए आत्मसंयम की प्रेरणा दी। व्यक्ति सुधार से परिवार, समाज व राष्ट्र सुधार की परिकल्पना प्रस्तुत की। उन्होंने नारा दिया - "संयमः खलु जीवनम्" - "संयम ही जीवन है।"

वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने एक घोष दिया है - "जन-जन में जागे विश्वास : संयम से व्यक्तित्व विकास।" उन्होंने अहिंसा यात्रा और अणुव्रत यात्रा के दौरान करोड़ों लोगों को नशा मुक्ति के संकल्प करवाये हैं। वहीं अणुव्रत कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष में एक करोड़ व्यसनमुक्ति संकल्प पत्र अमृत कलश में संगृहीत हुए। संयम से सरोकार होने ही दृष्टि से सास-बहू, पति-पत्नी शिविर, सांस्कृतिक चेतना शिविर, शिक्षक व शिक्षार्थी अणुव्रत शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। पिछले लगभग 40 वर्षों से देश-विदेश में आयोजित ज्ञान शालाओं में बच्चों को ज्ञान व संयम की सीख दी जाती है।

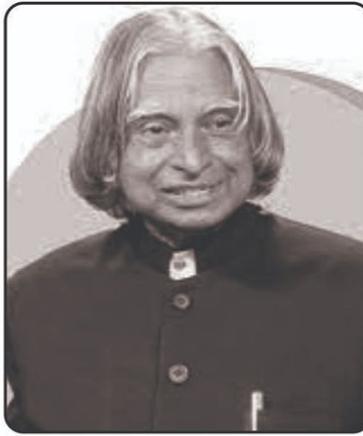
अणुव्रत मानव जीवन में संयम के प्रतिष्ठापन का आंदोलन है। अणुव्रत से जुड़कर करोड़ों लोगों में संयम का जागरण हुआ है। उन्होंने जीवन की सार्थकता को तलाशा है एवं सुख का एहसास कर रहे हैं। अणुव्रत का जितना अधिक प्रसार होगा, आम आदमी का जीवन संयमित एवं सार्थकता की ओर अग्रसर होगा। जीवन निर्माण की दृष्टि से अणुव्रत शुभ व शुभ्र भविष्य का संकेत है। ■■■



कदमों के निशां

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम बच्चों और युवाओं के प्रेरणास्रोत



आचार्य तुलसी ने कहा था,
अणुव्रत चरित्र निर्माण का
आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार
की स्थापना के पीछे उद्देश्य है
उन लोगों का आदर जो चरित्र
निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं।

अणुव्रत के आदर्शों के प्रति
जिनके मन में गहरी निष्ठा है।
ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से
समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति
आस्था बढ़ी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था,
“सत्य की खोज करना बड़ी बात है
है और उससे भी बड़ी बात है
सत्य को क्रियान्वित करना।

अणुव्रत पुरस्कार सत्य को
क्रियान्वित करने वालों को
मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ
कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।”

आचार्य महाश्रमण कहते हैं,
“भारत के नागरिकों में नैतिकता
के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत
इसी दिशा में कार्यशील है।
अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के
महत्व को प्रतिपादित करने वाला
अभिक्रम है।”

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की
शुरुआत की गयी। तब से 28
विभूतियों को इस पुरस्कार से
सम्मानित किया जा चुका है।
अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत
प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और
एक लाख इकायावन हजार रुपये
की राशि प्रदान की जाती है।

अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने
वालों की जीवन गाथा से
परिचित होना मानवीय मूल्यों से
साक्षात् करना है। आने वाली
पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा
लेकर स्वस्थ समाज की संरचना
की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी
उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से
सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का
परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित
किया जा रहा है।

बच्चों और युवाओं के प्रेरणास्रोत डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को
तमिलनाडु के रामेश्वरम के धनुषकोटी गाँव में एक मध्यम वर्गीय मुस्लिम अंसार परिवार में हुआ।
उनके पिताजी का नाम जैनुलाब्दीन तथा माताजी का नाम असीमा था। कलाम ने वर्ष 1950 में मद्रास
इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की परीक्षा पास करने के बाद भारतीय रक्षा
अनुसंधान एवं विकास संस्थान (डीआरडीओ) में प्रवेश लिया। एक वैज्ञानिक और विज्ञान के
व्यवस्थापक के रूप में आपने चार दशकों तक डीआरडीओ और इसरो को संभाला।

डॉ. कलाम व्यक्तिगत जीवन में बेहद अनुशासनप्रिय थे। उन्होंने अपनी जीवनी "विंग्स ऑफ
फायर" भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने वाले अंदाज में लिखी है। युवाओं के भविष्य को
बेहतर बनाने के लिए डॉ. कलाम कई तरह के प्रयास करते रहे। उनका उद्देश्य था कि भारत से भ्रष्टाचार
को हटाएं।

"मिसाइल मैन" के नाम से मशहूर डॉ. कलाम भारत को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया का
सिरमौर बनाते देखना चाहते थे। वे तकनीक को भारत के जनसाधारण तक पहुँचाने की हमेशा
वकालत करते रहते थे ताकि अधिकाधिक लोग इसकी उपयोगिता से लाभान्वित हो सकें।

इसरो और डीआरडीओ में कार्यों के दौरान वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए 1981 में उन्हें पद्मभूषण
और 1990 में पद्म विभूषण सम्मान प्रदान किया गया। वैज्ञानिक अनुसंधानों और तकनीकी के विकास
में अभूतपूर्व योगदान हेतु 1997 में कलाम साहब को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से
अलंकृत किया गया। 2002 में वे राष्ट्रपति चुने गये और पाँच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद शिक्षा,
लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आये।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की अणुव्रत दर्शन में प्रगाढ़ श्रद्धा थी। डॉ. कलाम आचार्य महाप्रज्ञ
के विचारों से गहरे तक प्रभावित हुए और दोनों महापुरुषों द्वारा संयुक्त रूप से लिखी पुस्तक "द फैमिली
एंड द नेशन" अत्यंत लोकप्रिय हुई। शिक्षा मनीषी डॉ. कलाम वर्ष 2011 में जब राजसमंद स्थित
अणुव्रिभा मुख्यालय आये तो चिल्ड्रन्स पीस पैलेस और यहां के बालोदय कार्यक्रम को देखने के बाद
कहा था - "मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक अभिभावक व बच्चा इस केन्द्र को देखें और जीवन निर्माण की
दिशा प्राप्त करें। अणुव्रत तथा जीवन विज्ञान के माध्यम से बाल विकास का यह कार्य अद्भुत है।"

"कर्म ही पूजा है" के आदर्श वाक्य को जीने वाले डॉ. कलाम का 27 जुलाई 2015 की शाम
आईआईएम शिलांग में "रहने योग्य ग्रह" पर व्याख्यान देने के दौरान दिल के दौरे से निधन हो गया।
नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के उन्नयन में रचनात्मक योगदान के लिए डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को
वर्ष 2022 में मरणोपरांत अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



गौरवशाली अतीत के झरोखे से...

‘ अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"। **’**





अनुग्रह अमृत महोत्सव



अनुग्रह | दिसम्बर 2023 | 28

शिक्षक प्रशिक्षण से ही सुधार संभव

अक्टूबर 1994 में आचार्य श्री तुलसी दिल्ली के अध्यात्म साधना केन्द्र में विराज रहे थे। अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में एक दिन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) के निदेशक श्री जे. एस. राजपूत ने आचार्यश्री के दर्शन किये। उन्हें अणुव्रत और जीवन विज्ञान के बारे में जानकारी दी गयी। जीवन विज्ञान के सन्दर्भ में उन्हें बताया गया कि आज शिक्षा में जीवन मूल्यों की कमी महसूस की जा रही है। उसके लिए भावात्मक परिवर्तन आवश्यक है। इसी लक्ष्य से जीवन विज्ञान का उपक्रम प्रारंभ किया गया। उसमें पुस्तकें कम हैं और प्रयोग अधिक हैं। विद्यार्थियों को वे प्रयोग सिखाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

श्री राजपूत ने विस्तार से सारी जानकारी प्राप्त करने के बाद कहा - "मैं चाहता हूँ कि अपने विभाग में कुछ ठोस काम करूँ। लगता है कि कोई आन्तरिक प्रेरणा ही मुझे आचार्य श्री तुलसी के पास खींचकर लायी है। मैं जीवन विज्ञान पद्धति के विषय में साहित्य पढ़ूँगा। संभव है, इस श्रेष्ठ पद्धति से हमें सही दिशा मिल जाये।" आचार्य श्री तुलसी ने पुनः अपनी बात पर बल देते हुए कहा - "यदि आप शिक्षा जगत में बदलाव लाना चाहते हैं तो आपको शिक्षकों की ओर ध्यान देना होगा। शिक्षकों के प्रशिक्षण से ही सुधार की संभावना सार्थक हो सकेगी।"

आचार्य श्री तुलसी ने सामूहिक रूप में अर्हत्-वन्दना का संगान करवा कर एक प्रकार से सक्रिय प्रशिक्षण का प्रयोग किया। गोष्ठी के उपसंहार में चार सूत्रों की ओर ध्यान आकृष्ट हुए आचार्यश्री ने कहा- "मैं सभी साधु-साधिवयों से कहना चाहता हूँ कि वे कम से कम चार सूत्रों के आधार पर अपने आपको ढालने का प्रयास करें और जीवन का निर्माण करें।

शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

जीवन विज्ञान अकादमी, दिल्ली आचार्य श्री तुलसी के दिल्ली-प्रवास में योजनाबद्ध तरीके से काम कर रही थी। भारत विकास परिषद् और जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में जनकपुरी एवं यूसुफसराय में जीवन विज्ञान शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए। इन शिविरों में पचपन स्कूलों के सौ से अधिक शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके परिणामों का अध्ययन करने के बाद अकादमी ने भारत सरकार तथा दिल्ली प्रदेश के शिक्षा विभाग से सम्पर्क किया। उन्होंने केन्द्रीय तथा नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के निर्देश दे दिये। शिक्षा विभाग के संयुक्त सचिव ने जीवन विज्ञान अकादमी को भी निर्देश दे दिया कि वह प्राचार्यों और शिक्षकों के शिविर आयोजित करे। 30 नवम्बर 1994 को केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों का एक शिविर नयी संभावनाओं के साथ सम्पन्न हुआ। समापन कार्यक्रम में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सह आयुक्त स्वयं उपस्थित थे।

जीवन-निर्माण के चार सूत्र

चूरू का प्रवास सम्पन्न कर 29 मार्च, 1995 को आचार्य श्री तुलसी बीदासर आये थे। प्रवचन से पूर्व साधु-साधिवयों की गोष्ठी हुई। गोष्ठी के प्रारंभ में अर्हत्-वन्दना का महत्व उत्तरागर करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "अर्हत्-वन्दना एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। यह हमारा ध्युवयोग है। इसलिए एकलय और एकात्म बनकर इसका संगान किया जाये। आर्षवाणी का उच्चारण शुद्ध और मृदु होना चाहिए। स्वर जितना शान्त और कर्णप्रिय होगा, उतना ही लाभकारी होगा। वज्जासन के समय जितनी सध सके, शरीर की स्थिरता रखी जाये।"

आचार्य श्री तुलसी ने सामूहिक रूप में अर्हत्-वन्दना का संगान करवा कर एक प्रकार से सक्रिय प्रशिक्षण का प्रयोग किया। गोष्ठी के उपसंहार में चार सूत्रों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए आचार्यश्री ने कहा- "मैं सभी साधु-साधिवयों से कहना चाहता हूँ कि वे कम से कम चार सूत्रों के आधार पर अपने आपको ढालने का प्रयास करें और जीवन का निर्माण करें। वे चार सूत्र हैं-





आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "विद्यार्थी का जीवन संन्यासी या योगी के जीवन जैसा होना चाहिए। खाद्य-संयम और वाणी-संयम विद्यार्थी के लिए अवश्य करणीय हैं। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी जर्दा, सिगरेट, शराब, हेरोइन आदि की गिरफ्त में हैं। ऐसे विद्यार्थी सही रूप में विद्या नहीं पा सकते। वे अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग नहीं कर सकते क्योंकि मादक व नशीले पदार्थों के सेवन से प्रतिभा मूर्च्छित और कुंठित हो जाती है। अपेक्षा यह है कि विद्यार्थी गुरुकुलवासी बनें। साधना, शिक्षा और संस्कारों की समन्विति से ही विद्यार्थी अपना तथा देश का हित साध सकते हैं।"



- ❖ कभी कोई निराश मत बनो। सदैव आशावादी बने रहो। यह निराशा भले ही स्वास्थ्य सम्बन्धी हो या अध्ययन के क्षेत्र में हो, जीवन के लिए अभिशाप है।
- ❖ सदैव प्रसन्न रहो। प्रसन्नता जीवन के लिए वरदान है।
- ❖ हरकतों को सहन करना सीखो। जिन्होंने सहन किया, वे ही कुछ बने हैं।
- ❖ कभी भारभूत मत बनो। सदैव उपयोगी बने रहो। जिनकी जैसी क्षमता है, वे उसका उपयोग करें।"

विद्यार्थी योगी जैसा जीवन जीएं

16 जुलाई 1995 को अणुव्रत समिति लाडनूँ की ओर से छात्र संसद के छात्रों का एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। शिविर में नीमी जोधा, जसवन्तगढ़ और लाडनूँ के छात्रों ने अच्छी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम में सन् 1994 में जैन विद्या की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। छात्रों को प्रेरणा देते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "विद्यार्थी का जीवन संन्यासी या योगी के जीवन जैसा होना चाहिए। खाद्य-संयम और वाणी-संयम विद्यार्थी के लिए अवश्य करणीय हैं। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी पान पराग, जर्दा, सिगरेट, शराब, हेरोइन आदि व्यसनों की गिरफ्त में हैं। ऐसे विद्यार्थी सही रूप में विद्या नहीं पा सकते। वे अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग नहीं कर सकते क्योंकि मादक व नशीले पदार्थों के सेवन से प्रतिभा मूर्च्छित और कुंठित हो जाती है। अपेक्षा यह है कि विद्यार्थी गुरुकुलवासी बनें। साधना, शिक्षा और संस्कारों की समन्विति से ही विद्यार्थी अपना तथा देश का हित साध सकते हैं।"

जीवन प्रधान हो, जीविका गौण हो

19 से 21 अगस्त 1995 तक लाडनूँ में 'अणुव्रत छात्र संसद' का तीन दिवसीय अधिवेशन समायोजित हुआ। अधिवेशन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "प्रत्येक व्यक्ति को सर्वप्रथम अपने लिए जीवन जीना सीखना चाहिए। केवल श्वास लेना जीवन नहीं है। धौंकनी भी श्वास की क्रिया करती है, पर वह जीना नहीं जानती। आधुनिक विचारधारा जीविका पर टिकी हुई है। अध्ययन करने और डिग्री पाने का एकमात्र उद्देश्य है अच्छी नौकरी मिले। आज व्यक्ति जीवन के लिए नहीं, जीविका के लिए दिन-रात भाग रहा है। अपेक्षा यह है कि जीवन प्रधान बने और जीविका गौण हो। अणुव्रत का यही आङ्गान है कि व्यक्ति जीवन जीना सीखे। चरित्रनिष्ठ, ईमानदार व नैतिक बने। यदि ऐसा होता है तो आध्यात्मिक संस्कृति, मानवीय संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति पुनरुज्जीवित हो जाएगी। अणुव्रत व्यक्ति को बुराई से बचाता है, प्रेक्षाध्यान उसमें स्थायित्व लाता है और प्रारंभ में ही दाग न लगे, जीवन विज्ञान ऐसी भूमिका तैयार करता है।"

अणुव्रत छात्र संसद के अधिवेशन में बारह प्रान्तों के तीन सौ इक्कीस सांसदों ने भाग लिया। अधिवेशन में अणुव्रत के साथ विशेष रूप से जुड़े हुए शिक्षक भी उपस्थित थे। तीन दिन के कार्यक्रम बहुत व्यवस्थित रूप में चले। समापन सत्र में आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "स्वार्थ की सघन मूर्च्छा ने व्यक्ति को बीमार बना दिया है। इसका सही इलाज अणुव्रत के पास है। मैं कह सकता हूँ कि सौ समस्याओं का एक समाधान अणुव्रत है। अणुव्रत एक ऐसी जीवनशैली है, जिसे जीने वाला दूसरों को कष्ट नहीं दे सकता। किसी को गुमराह नहीं कर सकता। उसके जीवन में कोई व्यसन नहीं हो सकता। मेरे अभिमत से महावीर की समता व अहिंसा, बुद्ध की करुणा और ईसा की सेवा, इन सबका समावेश अणुव्रत में है। अणुव्रती बनना सही मायने में





आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "अणुव्रत नैतिक जागरण का आन्दोलन है।

इसका उद्देश्य है- नैतिक मूल्यों का विकास। इसका

घोष है - संयमः खलु जीवनम्। अणुव्रत कहता है

कि नैतिक बनने के साथ मनुष्य का जीवन संयमित और सादगीपूर्ण हो। जीवन

जीने की कला का नाम अणुव्रत है। यह अपने पर

अपना अनुशासन करना सिखाता है। जीने की कला

सीखने के लिए गुरु के मार्गदर्शन की अपेक्षा

रहती है। "



मनुष्य बनना है। सत्ता व सम्पदा की प्रतिस्पर्द्धा में दिग्मूढ़ बने लोगों को अणुव्रत मानवीय मूल्यों एवं संयम की बात सिखाता है। मुझे कल्पना नहीं थी कि छात्र संसद में इतने विद्यार्थी आएंगे और लाडनूँ में धूम मचा देंगे। इस धूम की आहट लाडनूँ में ही नहीं, देश के कोने-कोने में पहुँचेगी। अणुव्रत के साथ जुड़ने वाले हर व्यक्ति को अपने नाम के आगे अणुव्रती बोलना व लिखना चाहिए।"

अणुव्रत आन्दोलन एक सार्वभौम आन्दोलन है। इसकी अनेक कार्यदिशाएं हैं। इसके बैनर तले विभिन्न आयामी कार्यक्रम चल रहे हैं। इन वर्षों में अणुव्रत शिक्षक संसद के रूप में एक नयी दिशा खुली। अनेक प्रान्तों से हजारों-हजारों शिक्षक इसके साथ जुड़े। शिक्षक संसद के कई राष्ट्रीय अधिवेशन भी आयोजित हो चुके। इसी प्रकार अणुव्रत छात्र संसद ने भी अपनी अच्छी पहचान बनायी। छात्रों में भी व्यापक स्तर पर काम हो रहा था। इन दोनों संसदों के केन्द्रीय तथा प्रादेशिक कार्यकर्ताओं ने निश्चय किया कि इस कार्य को योजनाबद्ध तरीके से सक्रिय रूप में आगे बढ़ाया जाये। इसके लिए उन्होंने सोचा कि वे प्रायः सभी चातुर्मासिक क्षेत्रों में जाकर सम्पर्क करेंगे। शिक्षकों और छात्रों को जोड़ने में स्थानीय कार्यकर्ता भी उनका सहयोग करें, जिससे इस आयाम को व्यापकता मिल सके।

शिक्षक कैसा हो?

1 से 7 दिसम्बर 1996 तक जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय और जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में सासाहिक शिविर का आयोजन जैन विश्व भारती प्रांगण में किया गया। लोक जुम्बिश परिषद् द्वारा आयोजित इस शिविर में इकतालीस संभागी थे। इसमें तीन विकास खण्डों - थानागाजी, झालारापाटन और राजगढ़ के शिक्षक उपस्थित हुए। उन्हें प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान व अणुव्रत की प्रायोगिक-सैद्धान्तिक जानकारी दी गयी। तीनों खण्डों के विकास परियोजना अधिकारी श्री आशुतोष गौतम ने शिविर में उपस्थित रहकर उसकी गतिविधियों का अवलोकन किया। शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का दायित्व मुनि श्री सुखलाल, मुनि महेन्द्रकुमार, मुनि श्री धर्मेशकुमार, मुनि श्री तत्त्वरुचि और समणी श्री स्थितप्रज्ञा पर रहा।

7 दिसम्बर को शिविर का समापन कार्यक्रम था। नेपाल पवन गंग ने शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। शिविर में संभागी शिक्षकों ने अपने अनुभव सुनाये। उनके अनुभवों का सार-संक्षेप यह रहा - "यह सात दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम, जैन विश्व भारती का प्रांगण और यहां मिली ज्ञानराशि हमारे जीवन की धरोहर रहेगी।" परियोजना अधिकारी श्री आशुतोष ने कहा- "जैन विश्व भारती संस्थान वर्तमान युग का नालन्दा और तक्षशिला है। यह शिविर हमारे शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी है।"

शिक्षकों को विशेष पाठ्य प्राप्त हो, इस दृष्टि से आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "अणुव्रत नैतिक जागरण का आन्दोलन है। इसका उद्देश्य है- नैतिक मूल्यों का विकास। इसका घोष है - संयमः खलु जीवनम्। अणुव्रत कहता है कि नैतिक बनने के साथ मनुष्य का जीवन संयमित और सादगीपूर्ण हो। जीवन जीने की कला का नाम अणुव्रत है। यह अपने पर अपना अनुशासन करना सिखाता है। जीने की कला सीखने के लिए गुरु के मार्गदर्शन की अपेक्षा रहती है। जिस प्रकार अंधकार में दर्पण बेकार है, वैसे ही सदगुरु के मार्गदर्शन रूपी आलोक के बिना जीवन भी कलाविहीन बन जाता है। गुरु अज्ञान का नाश करते हैं, करणीय-अकरणीय का विवेक देते हैं और जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करते हैं।"

शिक्षकों को गुरुस्थानीय बताते हुए आचार्यश्री ने कहा- "शिक्षक बन्धु एक दृष्टि से गुरु की भूमिका पर हैं। उनका जीवन जैसा होगा, छात्रों पर वैसा ही प्रभाव होगा। इस दृष्टि से आवश्यक है कि शिक्षक व्यसनमुक्त हों। उनका जीवन करुणा, अहिंसा से युक्त हो और अनुशासित हो। आवश्यकता और आकांक्षा की भेदरेखा वे स्वयं समझें ही नहीं, विद्यार्थियों को भी समझाएं। आकांक्षाओं पर संयम का अंकुश रखने वाले विद्यार्थी ही





आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "साक्षरता की दृष्टि से अच्छा विकास हुआ है और हो रहा है। किन्तु देश के लोगों के वैचारिक, सैद्धान्तिक और मानसिक स्तर में विशेष अन्तर नहीं आया है। जो अवांछित घटनाएं सामने आ रही हैं, उसके लिए पहली अपेक्षा है लक्ष्य-निर्धारण की और उसी दिशा में आगे बढ़ने की। शिक्षा के साथ विधेयात्मक चिन्तन का विकास हो और भावनात्मक स्तर उन्नत बने, यह जरूरी है।"

,

ज्ञान-विज्ञान की विविध उपलब्धियों के साथ देश का निर्माण कर सकेंगे। मैं शिक्षकों से कहना चाहता हूँ कि वे अच्छे शिक्षक बनने का प्रयास निरन्तर करते रहें।"

अणुव्रत की विशद चर्चा करने के बाद आचार्य श्री तुलसी ने शिक्षकों से अणुव्रती बनने का आह्वान किया। आह्वान का असर भी हुआ। वहाँ उपस्थित लगभग सभी शिक्षकों ने खड़े होकर अणुव्रत के ग्यारह नियम स्वीकार किये। जैन विश्व भारती की यात्रा और प्रशिक्षण उनके लिए एक यादगार बन गया।

शिक्षक संघ का अधिवेशन

13-14 दिसम्बर 1996 को राजस्थान प्रान्तीय शिक्षक संघ का आठवां वार्षिक अधिवेशन आयोजित हुआ। समूचे राजस्थान के शिक्षकों की प्रतिनिधि संस्था राजस्थान प्रान्तीय शिक्षक संघ का प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला यह पहला अधिवेशन था जो कि किसी धर्मगुरु के सान्निध्य में हो रहा था। दो हजार शिक्षक-प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। प्रथम दिन अधिवेशन के मुख्य अतिथि थे - राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया। मुख्य वक्ता डॉ. विमलप्रसाद अग्रवाल ने शिक्षा जगत की समस्याओं का विस्तार से वर्णन किया। श्री कटारिया ने शिक्षा-विकास के नये आयामों के साथ इक्वलीसेप्शन सदी में प्रवेश करने की बात कही। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने बौद्धिक क्षमता के साथ भावनात्मक क्षमता के विकास पर बल दिया क्योंकि आवेगों और संवेगों पर नियंत्रण का लक्ष्य इसी क्षमता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

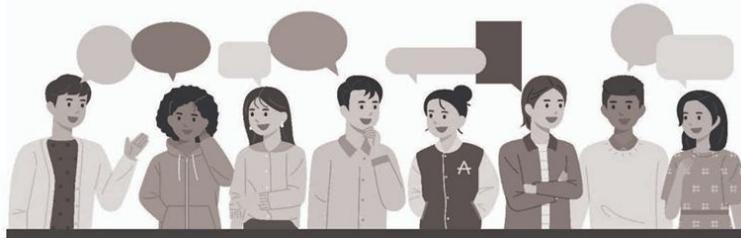
शिक्षा पद्धति और भारतीय मूल्य

आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन में कहा- "राजस्थान प्रान्तीय शिक्षक संघ के अधिकारियों ने सन्तों के सान्निध्य में अधिवेशन करने का निर्णय लिया, यह उनकी सूझबूझ का परिचायक है। शिक्षा के क्षेत्र में उभरती समस्याओं का मूल क्या है, इस बिन्दु पर चिन्तन करना है। आज शिक्षकों की कमी नहीं है। विद्यार्थी भी इतने अधिक हैं कि विद्यालय छोटे पड़ रहे हैं। नये-नये विद्यालय भी खुलते जा रहे हैं। सम्पूर्ण सामग्री के होने पर भी व्यक्ति-निर्माण नहीं हो पा रहा है। प्रश्न यह है कि इसमें शिक्षक की कमी है या विद्यार्थियों की? मेरी दृष्टि में व्यक्ति सुधार का लक्ष्य ही नहीं बना है।"

शिक्षा से आने वाले परिणामों की चर्चा करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "देश का दुर्भाग्य ही मानना चाहिए कि स्वतंत्रता के पचास वर्ष बाद भी भारत की अपनी शिक्षा पद्धति नहीं बन पायी है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारतीय मूल्यों की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया। यही कारण है कि साक्षरता की दृष्टि से अच्छा विकास हुआ है और हो रहा है। किन्तु देश के लोगों के वैचारिक, सैद्धान्तिक और मानसिक स्तर में विशेष अन्तर नहीं आया है। जो अवांछित घटनाएं सामने आ रही हैं, उसके लिए न केवल राजनीति को कोसना उचित है और न ही शिक्षा नीति को। पहली अपेक्षा है लक्ष्य-निर्धारण की और उसी दिशा में आगे बढ़ने की। शिक्षा के साथ विधेयात्मक चिन्तन का विकास हो और भावनात्मक स्तर उन्नत बने, यह जरूरी है। इसके लिए हमने शिक्षा के सन्दर्भ में जीवन विज्ञान का उपक्रम प्रस्तुत किया है। इस पाठ्यक्रम का जिन स्कूलों ने उपयोग किया, उनके परिणाम सुखद रहे। विद्यार्थियों में बदलाव परिलक्षित हुआ।"

अपने प्रवचन के उपसंहार में शिक्षकों को लक्षित कर आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "इस अवसर पर मैं शिक्षकों से कहना चाहता हूँ कि शिक्षा के प्रति सदा से ही मेरी विशेष अभिलेख रही है। मैं भी आपकी तरह शिक्षक हूँ। प्रारंभ से लेकर आज तक मैं पढ़ने-पढ़ाने में रस ले रहा हूँ। अभी मैं बाल साधुओं को प्रायः हमेशा पढ़ाता हूँ। मैंने अनुभव किया है कि शिक्षा के द्वारा अच्छे संस्कार दिये जा सकते हैं। शर्त एक ही है कि शिक्षक उसके लिए जी-जान से खें और तर्पें। वे सुविधावादी मनोवृत्ति का परिष्कार करें तथा व्यक्ति-निर्माण का लक्ष्य बनाएं। अध्यापन उनकी आजीविका का नहीं, राष्ट्र के अच्छे नागरिकों के निर्माण का आधार बने।"





परिचर्चा

‘आम नागरिक के जीवन में संयम का महत्व : प्रयोग और परिणाम’

सितम्बर अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

जीवन का शृंगार

आज की समस्त वैश्विक समस्याएं असंयम की देन हैं। यदि विश्व के प्रत्येक व्यक्ति में संयम का प्रभाव आ जाये तो अधिकांश समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी। संयम के अभाव में व्यक्ति का पूरा विकास नहीं हो सकता। उसके खान-पान, रहन-सहन में संयम होना चाहिए। वह संयम को जीवन का शृंगार माने, उपहार माने। आदमी विचारों में भी संयम रखे। किसी के बारे में बुरा न सोचे, किसी का अहित न सोचे। वायु, जल, अग्नि, मिट्टी आदि का संयमित उपयोग कर संयम का परिचय दे। पानी, बिजली का अनावश्यक उपयोग नहीं करना भी संयम का अभ्यास है।

-राजेश भंसाली, अहमदाबाद

स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक

अणुव्रत का धोष है - संयमः खलु जीवनम्। राग-द्रेष, मोह-माया, अहंकार, क्रोध आदि विकारों से दूर रहकर त्याग, तपस्या, संयम करेंगे तो आनन्द की अनुभूति होगी, चित्त निर्मल बनेगा। जो सुविधाएं बाहरी पदार्थों से मिलती हैं, वे अस्थायी होती हैं। तप, त्याग, संयम की साधना से ही परम शांति मिल सकती है। आहार संयम, वाणी संयम, मन संयम, इंद्रियों पर संयम के द्वारा स्वस्थ परिवार का विकास, स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। संयम आंतरिक व बाह्य सभी समस्याओं का समाधान है, अतः सुखी और आनन्दमय जीवन के लिए संयम की साधना करें।

-नवल सिंह खमेसरा, उदयपुर

मैत्री भाव होता है पुष्ट

समाज, राष्ट्र तो क्या, परिवार व व्यक्ति के जीवन की संयम के बिना परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। संयम के साथ ही जीवन का अस्तित्व है। असंयम में सब कुछ अस्त-व्यस्त होता है। वहीं संयम से विकास के द्वारा स्वयमेव खुलने लगते हैं। खाद्य संयम के बिना शरीर अस्वस्थ रहता है, मन चंचल होता है व विचारों में विकार पनपते हैं। वाणी के असंयम से कई बार युद्ध जैसी स्थिति बन सकती है। समयानुकूल मौन रहने, धैर्य रखने व

सकारात्मक अभिवृत्ति से विपत्ति टल सकती है। संयम से धैर्य, सकारात्मक नजरिया व मैत्री भाव पुष्ट होता है। अंतः संयम ही जीवन है।

-लाजपत राय जैन, हांसी

शांति और संतुष्टि देने वाला

संयम की जब कहीं चर्चा होती है तो सहज ही मुझे पिताजी की स्मृति हो आती है। ब्रिटिश कंपनी मार्टिन बन में कार्यरत मेरे पिता अपने नाम जगत प्रकाश को सार्थक करते हुए जिले भर में घर-घर प्रकाश पहुँचाने के लिए प्रयासरत थे। अपने कर्तव्यों का निर्वहन उन्होंने जिस संतुलन और संयम से निभाया, वह हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहा। इच्छा और आकांक्षा के स्थान पर कर्म और श्रम उनके जीवन का मूलमंत्र रहा और शायद इसी का परिणाम था कि लकवाग्रस्त होने के बावजूद अंतिम समय तक उनके चेहरे पर ऐसी शांति और संतुष्टि थी जिसे देखकर यह विश्वास और प्रबल हो जाता है कि जीवन में संयम के साथ किये गये सात्त्विक प्रयोगों का परिणाम निःसंदेह रूप से अलौकिक भी हो सकता है। आवश्यकता है तो बस सबल संकल्प की...

-आइवर यूशिएल, बरेली

निर्णय लेने में नहीं होती है गलती

मन, वाणी और शरीर पर नियंत्रण ही संयम है। अपने से अपना अनुशासन, यहीं संयम है। संयम का यथासमय प्रयोग अत्यंत फलदायी सिद्ध होता है। जीवन में संयम से मनुष्य धीर-गंभीर बनता है और निर्णय लेने में कोई गलती नहीं करता। ईर्ष्या, द्रेष, लोभ, मोह, क्रोध का शमन भी इसके द्वारा संभव है। संयम द्वारा बड़े से बड़ा संकट टाला जा सकता है। संयम सुख-समृद्धि, उत्तम तथा शांति का द्वार है। हम तृप्ति के लिए सब कुछ कर रहे हैं। इंद्रियां तृप्ति चाहती हैं और कर्तव्य संयम। हर एक चीज में अगर अनुशासन बना रहता है तो आदमी की जीवनशैली अच्छी मानी जाती है और वह स्वस्थ भी रहता है।

-ललिता धारेबा, इस्लामपुर



शक्ति का आधार, सिद्धियों का प्रदाता

वाणी पर संयम करने वाले असाधारण प्रतिभा के धनी होते हैं। द्वापर युग समाप्ति की ओर था। महाभारत को बोलकर लिखवाने के लिए महर्षि वेदव्यास के मन में किसी योग्य व्यक्ति की कामना जागृत हुई। गणेशजी ने महाभारत लिखने का संकल्प लिया। महर्षि वेदव्यासजी बोलते गये और गणेशजी लिखते गये। काफी दिनों बाद जब महाभारत का लेखन कार्य पूर्ण हुआ तो वेदव्यासजी ने गणेशजी से कहा, "मैंने 24 लाख शब्द बोलकर आपको लिखवाये, आश्र्य है कि इस बीच आप एक शब्द भी नहीं बोले। सर्वथा मौन ही रहे। बस लिखते गये।" गणेशजी ने सहज भाव से उत्तर दिया, "बड़े कार्य सम्पन्न करने के लिए शक्ति चाहिए और शक्ति का आधार संयम है। संयम ही समस्त सिद्धियों का प्रदाता है। यदि मैं वाणी का संयम नहीं रखता तो आपका ग्रंथ कैसे पूरा हो पाता?"

-डॉ. राकेश चक्र, मुरादाबाद

सफलता का मंत्र

हमारे पूर्वज संयम के महत्व को जानते थे। वे कहते थे - "कम-कम खाओ, मरो ना मुटाओ।" ये शब्द हमें संयमित रहने के लिए प्रेरित करते थे। जब स्वामी विवेकानन्द अपनी यूरोप यात्रा के दौरान जर्मनी गये थे, तब वहाँ की यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर पॉल डियूसन उनकी अद्भुत स्मरणशक्ति देखकर दंग रह गये थे। तब विवेकानन्द ने कहा था, "संयम बुद्धि में प्रकाश लाता है, जीवन में ओज-तेज लाता है। ऊँची समझ लाता है।" यदि हम स्वस्थ रहना चाहें, सुखी रहना चाहें तो संयम को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। संयम सफलता का मंत्र है।

-नीलम राकेश, लखनऊ

आपसी तालमेल में सहायक

जीवन में लोगों के साथ तालमेल रखने में आत्मसंयम की बड़ी भूमिका होती है। आज छोटी-छोटी बात पर लोग एक-दूसरे से लड़ पड़ते हैं। आज मनुष्य इतना अधीर व अशांत क्यों है? किसी घटना का निरीक्षण करें तो हम पाएंगे कि दोनों पक्ष जब किसी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं तो बात उलझ जाती है। ऐसे में विचार करना चाहिए कि लोग हमारे अनुसार कभी नहीं थे और कभी होंगे भी नहीं। परिस्थितियां हमारे नियंत्रण में नहीं हैं। एक ही चीज हमारे अनुसार हो सकती है, वह है हमारी सोच। परिस्थितियां हमें विचलित करें या न करें, यह हमारी सोच पर निर्भर है। अतः अपनी सोच सही रखें।

-गजानन पांडेय, हैदराबाद

शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक

संयमी व्यक्ति अपनी जिंदगी को सफलता के शिखरों पर चढ़ा सकता है। वाणी संयम से छोटे-बड़े अनेक विवादों को

आसानी से सुलझाया जा सकता है, वहाँ स्वस्थ जीवनशैली के लिए आहार संयम अत्यंत आवश्यक है। अगर व्यक्ति अर्थ उपार्जन में संयम रखता है तो देश की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। मनुष्य को सबसे ज्यादा जरूरत है अपनी भावनाओं और अपने इंद्रियों के संयम की। बड़े-बड़े अपराधों का भी खात्मा इसके द्वारा संभव है। शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन जीने के लिए संयम अत्यंत आवश्यक है।

-कल्पना सेठिया, फारबिसगंज

दिलाता है जीत

प्राचीन मनीषियों ने संयम को जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया था। पौराणिक भारतीय जीवनशैली पूर्ण रूप से संयम पर आधारित थी। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में भी समय को साधने, कार्य-व्यापार को सुचारू रूप से चलाने समेत सभी कार्यों में संयम की आवश्यकता होती ही है। जीत आखिर उसी की होती है जिसने संयम का दामन थामा हो। दूसरे को देखकर दौड़ने वाले कहीं पहुँचते नहीं, सिर्फ गिरते हैं। यहाँ संयम का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि आप हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और सोचें कि सारे काम हो जाएंगे, अपितु हर कार्य को करने के पहले पूरी प्लानिंग करें, धैर्य और संतुलन रखें फिर देखिए जीत आपकी ही होगी।

-शेली खत्री, फरीदाबाद

जीवन में आती है खुशहाली

संयम धारण करने वाले का न केवल स्वयं का जीवन ही बदलता है, अपितु परिवार, समाज व राष्ट्र में भी अमन-चैन व भाईचारे की भावना का विकास होता है। संयम रखने से ही सहनशीलता, धैर्य, शांति और साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने में मदद मिलती है। मानसिक तनाव समाप्त होता है। शांति की अनुभूति होती है। जीवन तनावमुक्त होता है। क्रोध, ईर्ष्या, राग-द्वेष, अहंकार का नाश होता है। जीवन में खुशहाली आती है। चेहरे पर तेज चमकता है और मुस्कान तैरती है।

-सुनील कुमार माथुर, जोधपुर

सरस बनता है जीवन

विश्व की अधिकांश समस्याओं का कारण असंयम है। वहीं, संयम हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संयम के द्वारा हम व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर अपने जीवन को आदर्श और सरस बना सकते हैं। संयम से धैर्य, शुचिता, दृढ़ता, शांति और विवेक आदि अनेक गुणों की वृद्धि होती है, जो हमारे चरित्र को संस्कारवान बनाते हैं। संयम से क्रोध समूल नष्ट होता है, जो जीवन में समरसता का सबसे बड़ा बाधक माना गया है। सत्संग के प्रभाव से संयमित जीवन जीना आसान हो जाता है।

-मंजू भंसाली, चिकित्सक



असंयम का अल्पीकरण करें

भगवान महावीर ने धर्म के तीन रूप बताये - अहिंसा, संयम और तप। इनमें संयम का अनुपालन करने से अहिंसा और तप दोनों की आराधना बेहतर तरीके से हो जाती है। संयम का एक अर्थ है- हिंसा व असंयम का अल्पीकरण करना। व्यक्ति पूरी तरह से हिंसा नहीं छोड़ पाये अथवा संयम की आराधना नहीं कर पाये तो भी उसे आंशिक रूप से ही सही, अहिंसा और संयम के पथ पर चलने का अभ्यास करना चाहिए। जल संकट के समय जब आपूर्ति में कटौती की जाती है तो जल का उपभोग संयमित होता है। बिजली कटौती में भी यही बात है। हम असंयम में कटौती करें और संयम में बढ़ोतरी करें। वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में ऐसे प्रयोग आवश्यक हैं।

-डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

संकल्प को साधने में सहायक

मन एवं इंद्रियों को नियंत्रित करना ही संयम है। मन को संयमित करने के लिए ध्यान एवं स्वाध्याय जरूरी है। संयम के लिए तप, व्रत, नियम, ध्यान, स्वाध्याय की आवश्यकता होती है। जिस क्षण व्यक्ति संकल्प करता है, उसी वक्त मन को तपने के लिए तैयार कर लेता है। इससे अनावश्यक छूटा है और स्वतः ही आवश्यक पर ध्यान बढ़ता है। जीवन में सकारात्मक प्रभाव बढ़ता है। जीवन में एक छोटा नियम भी लेते हैं तो आत्मबल बढ़ता है। 5-6 वर्ष पहले मैंने एक नियम लिया था - रात 9 बजे के बाद नहीं खाना है। इस संकल्प ने आत्मबल इतना बढ़ाया कि करीब तीन वर्ष पहले मैं संपूर्ण जिंदगी के लिए सूर्यास्त के पश्चात् भोजन नहीं करने का संकल्प ले पायी और एक दिन के लिए भी यह संकल्प नहीं टूटा है।

-बरखा विकास जैन, पाली

सुख और शांति प्रदान करने वाला

संयम यानी अनुशासन, खुद की इंद्रियों पर नियंत्रण। नियंत्रण का अर्थ बंधन नहीं अपितु शक्ति को एक निश्चित दिशा में अग्रसर करना है। संसार का प्रत्येक प्राणी सुख-शांति से जीना चाहता है। इसके बावजूद बहुत से प्राणी अशांत हैं जिसका कारण है क्रोध, मान, माया और लोभ। जो अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर संयमके मार्गको अपनाते हैं उन्हें ही सुख और शांतिकी प्राप्ति होती है।

-चंचल बैद, फारबिसगंज

बेहतर इंसान बनाता है

अपनी प्रतिभा और जन्मजात क्षमताओं को वास्तविक उपलब्धियों में बदलने के लिए संयम आवश्यक है। किसी भी कला में महारत हासिल करने के लिए लंबे समय तक लगातार प्रयास करने की आवश्यकता होती है। अपने सपनों को साकार करने के लिए चुनौतियों और बाधाओं से पार पाने की शक्ति संयम से ही आती है। संयम हमें बेहतर इंसान बनाता है। संयम की वजह से हम जल्दबाजी में गलत निर्णय लेने से बच सकते हैं।

-उद्धव भयवाल, छत्रपति संभाजीनगर

हर तरह के विकास के लिए जरूरी

प्रकृति का हर अवयव जैसे सूरज-चांद इत्यादि मर्यादा एवं संयम का पालन करते हैं। संयम वह राजपथ है जिस पर जीवन की गाड़ी सहज व सुगमता से दौड़ती है, जबकि असंयम का मार्ग गङ्गों से परिपूर्ण है जो जीवन की गाड़ी को दुर्घटनाग्रस्त कर इसका समापन कर सकता है। इसलिए आर्थिक, मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक विकास के लिए संयम को महत्वपूर्ण स्थान देना होगा, वरना जीवन निराशाओं तथा मानसिक तनाव से परिपूर्ण होगा।

-सुभाष जैन, टोहाना

फरवरी 2024 अंक का विषय

परिचर्चा

भारत का लोकतंत्र : कितना मजबूत, कितना कमजोर

वर्ष 2024 में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र पाँच वर्ष के अंतराल के बाद एक बार फिर "लोकतंत्र का महापर्व" मनाने जा रहा है। लोकसभा चुनाव हमें यह अवसर देते हैं कि हम इस बात पर गंभीरता से चिंतन करें कि - हमारा लोकतंत्र कितना मजबूत है? क्या-क्या खामियां हैं जो हमारे लोकतंत्र को कमजोर बनाती हैं? एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमारी क्या भूमिका है लोकतंत्र की रक्षा में? और, क्या हम इस भूमिका पर खरे उत्तर रहे हैं?

'अणुव्रत' पत्रिका के फरवरी 2024 अंक में प्रकाशित वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगर्थमी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 30 दिसम्बर तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।



74वां अणुव्रत अधिवेशन

प्रभास चालिया
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण



जन सेवा का माध्यम है अणुव्रत : आचार्य महाश्रमण

74वें अणुव्रत अधिवेशन में देश भर से जुटे अणुविभा और अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधि

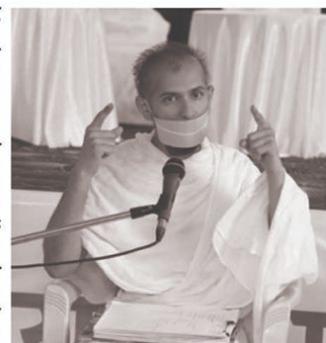
■■■ अधिवेशन संयोजक विनोद कोठारी की रिपोर्ट ■■■



मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में 74वां अणुव्रत अधिवेशन 18 नवम्बर की सुबह अणुव्रत ध्वजारोहण के साथ शुरू हुआ। अणुव्रत समिति मुंबई की सांताकूज टीम ने अणुव्रत गीत का गायन किया। इसके बाद अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में तीन दिवसीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने अमृतदेशना में कहा कि हमारी चेतना में भावों का एक संसार है। उस संसार में सत् भाव भी रहते हैं और असत् भाव भी रहते हैं। अणुव्रत के मार्ग से गृहस्थों के लिए असत् से सत् की ओर प्रगति करना संभव हो सकता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत जन सेवा का सुंदर माध्यम है। यह केवल जैन समाज के लिए ही नहीं है, बल्कि जन-जन के लिए है। यहां तक कि अणुव्रत नास्तिकों के लिए भी है। नास्तिक व्यक्ति भी अणुव्रती बन सकता है बशर्ते उसका आचरण अच्छा हो, वह धार्मिक सद्भाव में विश्वास करता हो, प्रामाणिकता में विश्वास करता हो। आचार्य प्रवर ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी विराट संस्था है। इसका अपना तंत्र है। इस तंत्र का उपयोग अहिंसा, सद्भावना, नशामुक्ति के प्रसार में हो। यह संस्था अणुव्रत के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करे। मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए अपनी शक्ति का नियोजन करती रहे।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने कहा कि अणुविभा के पास समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम है जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री भीखम सुराणा ने अणुविभा द्वारा किये जा रहे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला तथा पिछले वर्ष के दौरान विभिन्न प्रकल्पों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली अणुव्रत समितियों की घोषणा की। अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी ने अधिवेशन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

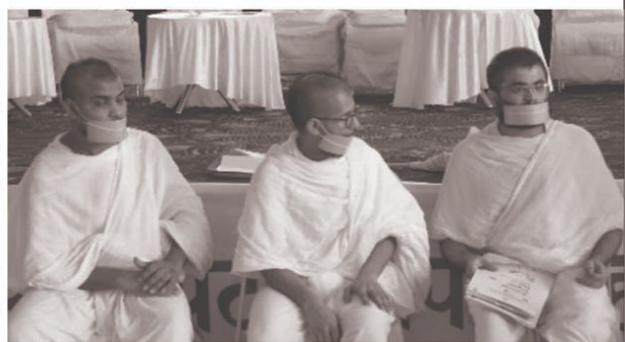


इसके बाद हुए सत्र में मुनिश्री डॉ. अभिजीत कुमार ने अणुविभा की ओर से चलाए जा रहे नशामुक्ति अभियान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पहले 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोग नशा करते थे। आज ऐसी स्थिति आ गयी है कि 30 वर्ष से कम उम्र के युवा



अणुव्रत अधिवेशन

और किशोर नशे की चपेट में आने लगे हैं। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से हम समाज को नशामुक्त बनाने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं। पिछले कुछ महीनों के दौरान मुंबई के करीब पचास कॉलेजों में 'एलीवेट : एक्सपीरीयंस द रियल हाई' के नाम से नशामुक्त के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं, जिनमें हजारों विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। मुनिश्री जागृत कुमार ने कहा कि आज के समय में मोबाइल के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही परिणाम प्राप्त होते हैं। ऐसे में आवश्यक है कि इसका संयमित उपयोग किया जाये। उन्होंने डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए लोगों को डिजिटल एडिक्शन से छुटकारा दिलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम पर आधारित डॉक्यूमेंट्री भी दिखायी गयी।



दोपहर बाद के सत्र में अणुविभा के सहमंत्री मनोज सिंघवी ने अधिवेशन में देश भर से आये प्रतिनिधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। वहीं अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने अणुविभा की ओर से चलाये जा रहे विभिन्न प्रकल्पों के संयोजकों से संवाद शैली में बात की। रमेश पटाकरी ने जीवन विज्ञान, कुसुम लूनिया ने उद्बोधन समाज व अणुव्रत अमृत रैली, भरत चोरड़िया ने अणुव्रत दिवस व अणुव्रत समिति सदस्य डाटा, राजेश चावत ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉर्टेंस्ट, पायल चोरड़िया ने अणुव्रत अमृत श्रृंखला, जय बोहरा ने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, छत्तरसिंह चोरड़िया ने अणुव्रत कैलेण्डर व डायरी, रमेश धोका ने अणुव्रत वाहिनी, विमल बैद ने अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड, पुष्पा कटारिया ने अणुव्रत अमृत किट, कैलाश बोराणा ने अणुव्रत स्मारक, सुरेश बागरेचा ने अणुव्रत प्रदर्शनी, कमलेश नाहर ने अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण, नीलम जैन ने पर्यावरण शुद्धि अभियान, सुरेन्द्र नाहटा ने पत्रिका प्रसार, मनोज सिंघवी ने ई मैगजीन, प्रकाश तातेड़े ने बच्चों का देश, मोहन मंगलम ने अणुव्रत पत्रिका, पंकज दूधोड़िया ने अणुव्रत मीडिया, प्रमोद घोड़ावत ने अणुव्रत इतिहास, धनपत लूनिया ने अणुव्रत काव्यधारा, जिनेन्द्र कोठारी ने अणुव्रत शोध, विमल गोलछा ने अहिंसा प्रशिक्षण तथा अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के मंत्री संजय बोथरा ने अणुव्रत गीत महासंगान के संदर्भ में अपनी-अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं प्रकल्पों की सफलता में अणुव्रत समितियों से क्या अपेक्षाएं हैं, इस पर बात की।



'प्रामाणिकता के साथ शिखरों तक' विषयक संवाद सत्र का एक नया प्रयोग इस अधिवेशन में किया गया। इसमें गौतम चौरड़िया, तेजकरण सुराणा, संचय जैन व प्रताप दुग्धे ने अपने जीवन अनुभवों के आधार पर इस बात को पृष्ठ किया कि प्रामाणिकता जीवन में सफलता का आधार बनती है। सत्र संचालक राकेश खटेड़े के प्रश्न को समाहित करते हुए गौतम चौरड़िया ने कहा कि प्रामाणिकता के संस्कार मजबूत हों तो किसी भी प्रकार के दबाव में भी व्यक्ति मजबूती से खड़ा रह सकता है। न्यायाधिपति के रूप में उन्होंने अपने संस्मरण भी साझा किये। संचय जैन ने बताया कि भ्रष्ट सिस्टम के बीच रहते हुए भी व्यक्ति अपनी प्रामाणिकता की सीमाएं बना सकता है। तेजकरण सुराणा ने राजनैतिक क्षेत्र की परिस्थितियों को प्रामाणिकता में सबसे बड़ी बाधा बताया। प्रताप दुग्धे ने व्यावसायिक प्रामाणिकता को जीवन में सुकून का सबसे बड़ा आधार बताया। वक्ताओं ने श्रोताओं की जिज्ञासाओं का भी समाधान दिया।

अणुव्रत रैली निकाली, अणुव्रत गौरव मुमुक्षु धनराज बैद का सम्मान

अणुव्रत अधिवेशन के दूसरे दिन 19 नवम्बर की सुबह नंदनवन में अणुव्रत रैली निकाली गयी। इसमें अणुविभा के पदाधिकारी, कार्यसमिति समिति सदस्यों के साथ ही नेपाल सहित भारत की अणुव्रत समितियों के कार्यकर्ता शामिल हुए। इसके बाद देश भर से आए अणुविभा के पदाधिकारियों तथा अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की अमृतदेशना सुनी।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि जीवन में ज्ञान और चरित्र दोनों का बड़ा महत्व होता है। ज्ञान न हो तो बड़ी मुश्किल हो सकती है। अज्ञान कष्ट है, दुःख है। गुर्सा, क्रोध आदि पाप है। अज्ञानी होना बहुत बड़ा कष्टदायक है, अभिशाप है। एक आदमी में कुछ कमियां हैं। उसे अहंकार, क्रोध बहुत आता है। ज्ञान है तो उसे कम किया जा सकता है, खत्म किया जा सकता है, लेकिन ज्ञान है ही नहीं तो कैसे कम करेगा। गृहस्थों के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है। आदमी साधु का चरणस्पर्श करे लेकिन साथ में आचरण भी अच्छा करे। आदमी का विचार अच्छा



अणुव्रत अधिवेशन

हो तो आचार भी अच्छा बने - संस्कार भी अच्छा रहे। बीच में एक नदी है। सद्विचार उसका एक किनारा है तो सदाचार दूसरा किनारा है। अणुव्रत कहता है कि आचार अच्छा बनाओ। ज्ञान बहुत है, विद्वता बहुत है, लेकिन ईमानदारी नहीं है तो जीवन का मूल्य नहीं है। अणुव्रत चरित्र बल वाला कार्यक्रम है। संयम के विकास का, चारित्रिक उत्थान का कार्यक्रम है। यह बिना किसी जाति - पांति के भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति के विकास का कार्यक्रम है। इसका प्रचार-प्रसार होता रहे, यह काम्य है।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार ने अणुव्रत कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए दो सूत्र प्रदान किए। आपने कहा कि कार्य की निरंतर समीक्षा व अनुवर्तन तथा प्राप्त जिम्मेदारी और क्रियान्वित की स्वयंस्फूर्ति रिपोर्टिंग - यह सुनिश्चित किया जाए तो संस्था की प्रगति और कार्यकर्ता का विकास दोनों एक साथ सम्भव हो सकता है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा ने अणुव्रत व जीवन विज्ञान को दो ऐसी आँखें बताया जिनसे एक सुखी व स्वस्थ समाज का सपना देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत इंसान को अच्छा इंसान बनाने का सुदृढ़ माध्यम है। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने मनुष्यों का निर्माण किया। उनका सूत्र था- इंसान पहले इंसान, फिर हिन्दू या मुसलमान। अणुव्रत धर्म को, उपासना पद्धति को महत्व नहीं देता है, यह आत्मा की उज्ज्वलता को महत्व देता है। चरित्रवान-ईमानदार व्यक्ति को महत्व देता है। सुख-शांति से जीना है तो अणुव्रत के घोष-संयमः खलु जीवनम् को समझना होगा- उसे जीवन में उतारना होगा। अणुव्रत के नियमों को अपनाकर व्यक्ति अच्छा इंसान बन सकता है। व्यक्ति अच्छा होगा तो समाज और राष्ट्र भी अच्छा होगा। अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा के भी दर्शन किये व आशीर्वाद प्राप्त किया।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार के सान्निध्य में मुमुक्षु श्री धनराज बैद के सम्मान में आयोजित मंगल भावना कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत संगान से हुई। इस अवसर पर मुनिश्री मनन कुमार ने कहा कि अणुव्रत के माध्यम से व्यक्ति सही बातों को समझता है, फिर उसमें अच्छे कार्यों के प्रति सुचिपैदा होती है और उसका दृष्टिकोण सकारात्मक बन जाता है। अणुव्रत के माध्यम से व्यक्ति किस प्रकार क्रमिक विकास करता है, इसका साक्षात् उदाहरण आज हम धनराज जी के रूप में देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि अणुव्रत कार्यकर्ता को निस्पृह होना चाहिए। उसमें कुछ भी पाने की लिप्सा नहीं होनी चाहिए। कार्यकर्ता जब समर्पण भाव से काम करता है तो उसे इसके बारे में बताने की जरूरत नहीं होती, उसका काम खुद ही बोलता है। अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा ने भावपूर्ण शब्दों में मुमुक्षु धनराज बैद का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि धनराज बैद ने अब तक अणुव्रती का जीवन जीया और अब महाव्रती की राह पर अग्रसर हो रहे हैं।

तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया, अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, जस्टिस गौतम चौराड़िया, अणुविभा के न्यासी सुमित्रिचंद गोठी, गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, अणुव्रत गैरव डालचंद कोठारी ने मुमुक्षु धनराज बैद के लिए आध्यात्मिक मंगलकामना की।

मुमुक्षु धनराज बैद ने अपने संबोधन में कहा कि अणुव्रत के बीज के बिना जीवन में महाव्रत नहीं आ सकता है। आज के भौतिकतावाद की चकाचौंध में जी रहे मनुष्य को यदि यह भान हो जाये कि हमें भी एक दिन सब कुछ यहीं छोड़कर चले जाना है तो यह दुनिया कुछ और हो जाये। कार्यक्रम में अणुविभा की ओर से अंगवस्त्र और शॉल ओढ़ाकर अणुव्रत गैरव मुमुक्षु धनराज बैद का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा कार्यसमिति सदस्य प्रमोद घोड़ावत ने किया।

अणुव्रत अधिवेशन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा व महामंत्री अमित नाहटा अपनी टीम के साथ उपस्थित हुए एवं अणुव्रत के कार्यों में पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया। रमेश डागा ने यह घोषणा की कि अणुविभा द्वारा 18 जनवरी 2024 को वृहद् स्तर पर आयोज्य अणुव्रत गीत महासंगान के आयोजन को नयी ऊँचाईयों तक पहुँचाने में परिषद् के कार्यकर्ता अपनी शक्ति का नियोजन करेंगे। अधिवेशन में उपस्थित अणुव्रत संरक्षक शांतिलाल सोलंकी ने अधिवेशन की आयोजना हेतु 3 लाख रुपये के सहयोग की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि श्री सोलंकी 3 वर्षों से निरंतर अधिवेशन आयोजन में सहयोगी बन रहे हैं।



वार्षिक साधारण सभा के बाद हुआ उत्कृष्ट समितियों का सम्मान

इसके बाद आयोजित वार्षिक साधारण सभा में अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा ने वर्ष 2022-23 का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने वर्ष के दैरान हुए आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। वार्षिक साधारण सभा में अणुविभा के व्यक्तिगत सदस्यों के अतिरिक्त संस्थागत सदस्यता प्राप्त समितियों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। साथ ही वर्ष के दैरान विभिन्न प्रकल्पों में उत्कृष्ट योगदान के लिए विभिन्न समितियों को सम्मानित किया गया। अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों के लिए अर्थ संबल प्रदान करने वाले अणुव्रत संरक्षकों तथा अणुव्रत संपोषकों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी ने किया।

:: सम्मानित अर्थ सहयोग प्रदाता ::

अणुव्रत संपोषक

श्री प्रदीप कुंडलिया	राजलदेसर-कोलकाता
श्री विनोद कुमार बाफना	लूणकरणसर-बीकानेर
श्रीमती सुशीला पुगलिया	श्रीडूंगरढ़-कोलकाता
कल्याण मित्र श्री रतन दूगड़	सरदारशहर-कोलकाता

अणुव्रत संवर्द्धक

श्री राजकुमार फुलफगर	लाडनूं-गुवाहाटी
श्री बाबूलाल जैन लुणावत	सिरसा-सिलीगुड़ी

अणुव्रत संरक्षक

श्री नवरत्न गत्रा	कटार-वडाला, मुम्बई
श्री नरेन्द्र तातेड़	धानीन-घाटकोपर, मुम्बई
श्री विनोद बोहरा	जैतपुरा-कांदिवली, मुम्बई
श्री रोशनलाल प्यारचंद मेहता	मजेरा-उरण, उलवे नवी मुम्बई
श्री बसंत नौलखा	बीकानेर
श्री मानिकचंद रत्नचंद श्रीश्रीमाल	खिंवाड़ा-ठाणे
श्री प्रकाश तोड़ा	दिवेर-बैंगलुरु
श्री भगवतीलाल धाकड़	शिशोदा-चेन्नई
श्री कन्हैयालाल बी.मेहता	पिपलांत्री-सायन कोलवाड़ा
श्री जसराज छाजेड़	कोशीवाड़ा-कोपरखेरणी
श्री लादूलाल श्रीश्रीमाल	छापली-वाशी
न्यायाधिपति श्री गौतम चौरड़िया	राजनांदगांव-रायपुर
श्रीमती कुसुम सुराणा	पडिहारा-दिल्ली
श्री मदनकुमार मरोठी	गंगाशहर-कोलकाता
श्री ललित माण्डोत	बरार-बैंगलुरु
श्री कुंदनमल बैद	राजलदेसर-कोलकाता
श्री विजयराज डोसी	सुजानगढ़-गुवाहाटी
श्री प्रदीप नाहटा	कालु-जयपुर
श्री अमृतलाल जैन	खिंवाड़ा-नवी मुम्बई
श्री माणिकचंद आच्छा	बड़ाखेड़ा-चेन्नई
श्री सी.एल.नाहर	जाणुंदा-बैंगलुरु
श्री शांतिलाल पितलिया	पीपलीनगर-बैंगलुरु
श्री जगतसिंह बैंगानी कोठारी	लाडनूं-कोलकाता
श्री दिनेश बाबूलाल छाजेड़	जसोल-इचलकरंजी
श्री मोहन कोठारी	सिलीगुड़ी

अणुव्रत वाहिनी अनुदानदाता

बद्रीलाल जी, सुखलाल जी, उत्तमचंद जी पीतलिया,
बहिन शान्ता बाई एवं तारा बाई
ठांगड़ - बैंगलुरु GREENCHEF

मदनलाल जी, कैलाशचंद जी, रमेशरोशन जी, प्रवीण जी
एवं गौतम जी बोराणा
बरार - बैंगलुरु MJR

वाहन अनुदानदाता

समाज भूषण श्री जसवंतमल जी सेठिया ट्रस्ट
श्री गौतम चंद, श्रीमती सरोज देवी, श्री त्रिलोक श्री संदीप एवं श्री सिद्धार्थ
सेठिया
(बलूंदा - बैंगलुरु - चेन्नई)

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 23

श्री सुरेशराज-श्रीमती जसकंवर सुराणा दिल्ली-जोधपुर

अणुव्रत बालोदय किडजोन 2023-मुम्बई

श्री राकेश-आरती कठोतिया लाडनूं-मुम्बई

जीवन विज्ञान प्रकल्प

श्री मूलचंद नाहर जाणुंदा-बैंगलुरु

विभिन्न गतिविधियों में सहयोग हेतु

श्री मनीष माण्डोत	कल्पतरू-मुम्बई
श्री बसंत नौलखा	बीकानेर
श्री जुगराज महेन्द्र नाहर	दिवेर-चेन्नई-मैसूर
श्री जयचंदलाल-श्रीमती चंदा जैन	गंगाशहर
श्री महावीर-श्रीमती पुष्पा कटारिया	धामली-पुणे
श्री डालचंद-विनोद-भरत कोठारी	रिंचेड-दादर-मुम्बई
श्री विनोद बैद, दिलीप इंडस्ट्रीज	जयपुर
श्री शांतिलाल सोलंकी	गजपुर, सूरत
श्री राजकरण-मनीष दफतरी	किशनगंज-सरदारशहर



अणुव्रत अधिवेशन

श्रेष्ठ कार्य संचालन के लिए सम्मानित हुई अणुव्रत समितियां

महानगर श्रेणी : ■ प्रथम - मुम्बई ■ द्वितीय - जयपुर ■ तृतीय - दिल्ली

नगर श्रेणी ■ प्रथम - गुवाहाटी, हिसार ■ द्वितीय - भीलवाड़ा ■ तृतीय - सिलीगुड़ी

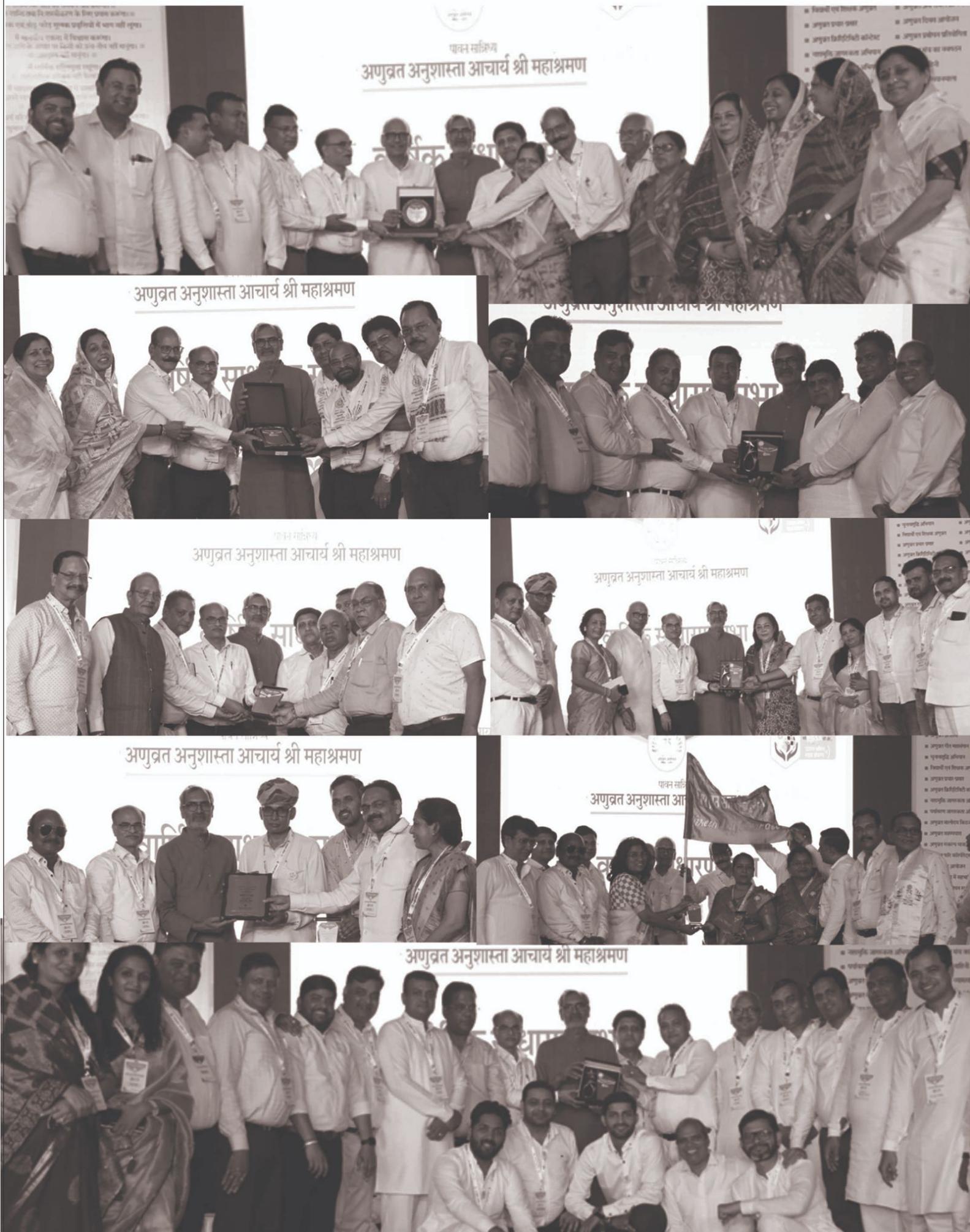
शहर श्रेणी ■ प्रथम - पाली ■ द्वितीय - जसोल ■ तृतीय - चाड़वास

अध्यक्षीय प्रोत्साहन ■ कोलकाता ■ अहमदाबाद ■ ग्रेटर सूरत ■ लाडनूं ■ कटक ■ छापर ■ बालोतरा ■ काठमांडू

■ गंगाशहर ■ दिवेर ■ पालघर ■ नोगांव ■ बारडोली ■ राजसमंद ■ चूरू ■ चलथान ■ गाजियाबाद



अणुव्रत अधिवेशन



अणुव्रत गौरव और जीवन विज्ञान पुरस्कार प्रदान



प्रताप दुग्ड़, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, न्यासी सुमति चंद गोठी, चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष रोशन लाल मेहता तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने श्री कोठारी को सम्मानित किया।

आचार्य प्रवर ने अमृत देशना में कषाय संयम पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत के प्राच्य ग्रंथों में जीवन को अच्छा बनाने और परम तत्व की प्राप्ति के अनेक उपाय बताए गए हैं। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति को क्रोध, मान, अहंकार, माया और लोभ रूपी कषायों का संयम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अणुव्रत और महाव्रत - ये दो प्रकार की संयम की साधना की स्थितियाँ हैं। महाव्रत की साधना अत्यंत कठिन होती है। इसीलिए साधु ही यह साधना कर पाते हैं। वहीं आम आदमी के लिए अणुव्रतों का विधान किया गया है। कोई भी व्यक्ति जिसकी निष्ठा संयम में है, वह छोटे-छोटे नियमों यानी अणुव्रतों को स्वीकार कर सकता है। डालचंद कोठारी का उल्लेख करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि प्रतिमा की साधना करने वाले ऐसे कुछ ही श्रावक हुए हैं। डालचंद कोठारी ने अणुव्रत को कितना जिया है और अणुव्रत के लिए कितना किया है, यह रेखांकित करने योग्य बात है।

अणुव्रत गौरव डालचंद कोठारी ने इस सम्मान के लिए अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ तथा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर डालचंद विनोद भरत कोठारी परिवार की ओर से अणुविभा को 3 लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की गई।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। आचार्य श्री तुलसी के ये अवदान मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। अन्य आयु वर्ग के लोग भी अपने आत्मोत्थान के लिए जीवन विज्ञान का आलंबन ले सकते हैं।

आचार्य श्री 20 नवम्बर को प्रवचन पंडाल में आयोजित सम्मान समारोह में प्रेरणा पाथेर प्रदान कर रहे थे। समारोह में अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, न्यासी सुमति चंद गोठी, महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुग्ड़, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, मुंबई चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातोड़ आदि ने जीवन विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राकेश खटेड़ को जीवन विज्ञान पुरस्कार

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से 17 नवम्बर की सुबह प्रवचन पंडाल में अलंकरण एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में आयोजित समारोह में अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष, रीछेड़ निवासी, दादर (मुंबई) प्रवासी वरिष्ठ श्रावक तथा "अणुव्रत सेवी" डालचंद कोठारी को अणुव्रत गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया। इसके तहत उन्हें स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्र प्रदान किया गया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन, अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष



2023 प्रदान किया। इसके तहत उन्हें स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और एक लाख रुपये का चेक प्रदान किया गया। इससे पहले अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा ने अपने वक्तव्य में जीवन विज्ञान की उपादेयता पर प्रकाश डालने के साथ ही राकेश खटेड़ का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। मुनिश्री योगेश कुमार ने राकेश खटेड़ द्वारा पिछले दो-तीन दशकों में जीवन विज्ञान के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों को रेखांकित किया। राकेश खटेड़ ने अपने वक्तव्य में जीवन विज्ञान को सभी के लिए समान रूप से उपयोगी बताया। इस अवसर पर राकेश खटेड़ परिवार की ओर से अणुविभा को 2 लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की गई।

सम्मान समारोह के बाद अणुव्रत अधिवेशन में हिस्सा लेने वाले सभी प्रतिभागी अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की सत्रिधि में पहुंचे। वहां अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ और अणुव्रत अमृत



महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने तीन दिन तक चले अधिवेशन की निष्पत्ति व कार्यविधि का व्योरा आचार्य प्रवर के समक्ष प्रस्तुत किया। इस पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अमृत महोत्सव के लक्ष्य की समीक्षा करते हुए इसे प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने का आह्वान किया।

अणुव्रत समिति मुम्बई द्वारा अधिवेशन संभागियों की इंटर्स्टेंट फोटो की सुविधा आकर्षण का केन्द्र रही जहां 300 से अधिक कार्यकर्ताओं ने अपनी सहभागिता की स्मृति को फोटो के रूप में प्राप्त किया। अधिवेशन स्थल पर एक हॉल में अणुव्रत समितियों ने अपनी वर्ष भर की गतिविधियों के बैनर, पोस्टर, एलबम आदि प्रदर्शित किये जिन्हें बड़ी संख्या में लोगों ने देखा। यहां अणुविभा द्वारा अणुव्रत साहित्य की स्टॉल भी लगायी गयी, जहां से संभागियों ने निःशुल्क साहित्य प्राप्त किया। अधिवेशन में नेपाल सहित पूरे भारत से अणुविभा और 66 अणुव्रत समितियों एवं मंचों से 319 सहभागी शामिल हुए।

अधिवेशन की सफल आयोजना में संयोजक विनोद कोठारी, सह संयोजक मनोज सिंघवी एवं विजय संचेती का सक्रिय योगदान रहा। अधिवेशन के सह संयोजक व अणुव्रत समिति मुम्बई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, मंत्री राजेश चौधरी, कोषाध्यक्ष ख्यालीलाल कोठारी, किरण परमार, अशोक मादरेचा, डिम्पल हिरण, सुशील हिरण, दिनेश सिंघवी, सुभाष मेहता, राजू मेहता एवं सम्पूर्ण टीम का श्रम उल्लेखनीय रहा। अणुव्रत मीडिया टीम के संयोजक पंकज दूधोड़िया, जयंत सेठिया व महावीर बड़ला ने समाचार संप्रेषण में सजगता के साथ अपना योगदान दिया।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर को पारिवारिक चिकित्सकीय अनिवार्यताओं के चलते जयपुर लौटना पड़ा लेकिन वे निरंतर अणुविभा टीम के सम्पर्क में रहे और मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ एवं महामंत्री भीखम सुराणा के नेतृत्व में अणुविभा की सम्पूर्ण टीम समर्पण भाव से कार्य कर रही थी। अणुविभा टीम के सदस्य रमेश धोका का भोजन व्यवस्था व सुरेन्द्र नाहटा का आवास व्यवस्था में उल्लेखनीय श्रम रहा। आयोजन स्थल नंदनवन में व्यवस्थाएं उपलब्ध करवाने हेतु आचार्य महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ का अणुविभा की ओर से स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया गया। व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी व महेश बाफना का सहयोग महत्वपूर्ण रहा। आवास व्यवस्था प्रभारी संदीप कोठारी एवं भोजनालय प्रभारी महेन्द्र तातेड़ व विनोद बोहरा सहित देवीलाल जैन, भूपेंद्र वागरेचा, दिनेश सिंघवी, भूपेश कोठारी का व्यवस्थाओं में आत्मीय सहयोग प्राप्त हुआ।



प्री माध्यम चातम

लेखन के माध्यम से पाठकों को दें सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा : आचार्य महाश्रमण

अणुविभा की ओर से दो दिवसीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन में देशभर से जुटे साहित्यकार

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री के सान्निध्य में 16 नवम्बर की सुबह दो दिवसीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन शुरू हुआ। आचार्य श्री महाश्रमण ने अणुव्रतों की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा कि छोटे-छोटे संकल्पों से जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। अणुव्रतों को अंगीकार करें तो जीवन निश्चित रूप से श्रेष्ठ बन सकता है। सभी इंद्रियों को वश में रखने की सीख देने के साथ ही आचार्य श्री ने मुखवस्त्रिका का उल्लेख करते हुए कहा कि यह अहिंसा का उपकरण होने के साथ ही वाणी संयम के लिए भी सहायक है। लेखकों में चिंतन करने की क्षमता हो और उसे अभिव्यक्त करने की शक्ति हो तो उसका बढ़िया उपयोग होना चाहिए। लेख-आलेख-पुस्तकों के माध्यम से समाज के लिए अच्छी सामग्री परोसी जा सकती है। लेखक अपने लेखन के माध्यम से पाठकों को एक अच्छा और सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा दे सकते हैं। इससे पहले अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत लेखक सम्मेलन के चालीस वर्ष के इतिहास को रेखांकित करते हुए सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि गांधी शांति प्रतिष्ठान नयी दिल्ली के अध्यक्ष व गांधी-मार्ग पत्रिका के संपादक कुमार प्रशांत ने कहा कि आज अनास्था की ऐसी आंधी चल रही है कि आस्था को पांव जमाकर रखने की जरूरत है। यह काम केवल शब्दों से ही संभव नहीं है, बल्कि उन शब्दों को धरती पर उतारने के लिए श्रम करने की आवश्यकता है। आज हर जगह भीड़ तो बहुत है, मगर आपस में परिचय नहीं है। इंसान तो बहुत हैं, मगर लगता है कि इंसानियत कहीं खो गयी है। शरीक होने और शिरकत करने का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के साथ यह जुड़ाव आगे बढ़ेगा और शब्दों से आगे कृति तक पहुंचेगा।

नवभारत टाइम्स ग्रुप मुंबई के वरिष्ठ संपादक कैप्टन सुरेश चंद्र ठाकुर ने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के उद्गारों को यदि आचरण में उतार लिया जाये तो जीवन सफल बन सकता है। इंद्रियों के वश में आने के बजाय यदि इंद्रियों को वश में कर लें तो जीवन अमूल्य बन जाये। उन्होंने अपने समाचार पत्र के माध्यम से आचार्य श्री महाश्रमण के उद्गारों को वृहद् पाठक वर्ग तक पहुंचाने का भरोसा दिलाया। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुग्ड, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी समेत अणुविभा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे। दोपहर को हुए पहले सत्र में देशभर से आए साहित्यकारों ने एक-दूसरे का परिचय प्राप्त किया। सत्र

का संयोजन अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक वीरेंद्र भाटी मंगल ने किया।

स्वस्थ समाज के निर्माण में लेखकों की भूमिका

इसके बाद अणुव्रत आंदोलन के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि श्री मनन कुमार के पावन सान्निध्य में आयोजित सत्र में वरिष्ठ



साहित्यकारों ने 'स्वस्थ समाज के निर्माण में लेखकों की भूमिका' विषय पर चिंतन-मनन किया। सत्र की अध्यक्षता गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष कुमार प्रशांत ने की। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत के सिद्धांतों को सरल और हृदयग्राही शब्दों में समाज में प्रसारित करने का आह्वान किया। नाहर ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन 75 वर्ष की सफल यात्रा कर चुका है। अब अणुव्रत की बात को देश-दुनिया तक पहुँचाने के लिए अभिनव योजना बनायी जाये। हम सभी एक साथ मिलकर कोई निर्णय करें, एजेंडा निश्चित करें और इसकी घोषणा अणुव्रत लेखक मंच से हो। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के रूप में 'संयम ही जीवन है' का छोटा-सा सूत्र दिया। यह हम पर निर्भर करता है कि इस सूत्र को किस रूप में हम अंगीकार करते हैं।

दिल्ली के सीताराम गुप्ता ने कहा कि लेखक के जीवन में दोहरापन नहीं होना चाहिए। लेखक गलत बातों का खंडन करें। अणुव्रत साधन शुद्धि की बात करता है। शुद्ध साध्य की अपेक्षा है तो साधन भी शुद्ध होना चाहिए। जयपुर की एस. भाग्यम शर्मा ने कहा कि साहित्यकारों की कथनी और करनी में अंतर नहो। हम खुद मोबाइल देखते रहें और बच्चों को अधिक मोबाइल-टीवी नहीं देखने की सलाह दें तो बच्चे उसका पालन नहीं करेंगे। इसलिए हमें संयम को अपने आचरण में शामिल करना होगा। उत्तराखण्ड के उदय किरौला ने कहा कि आज सोशल मीडिया का युग है। इसके माध्यम से समाज को जोड़ने का नहीं, तोड़ने का काम हो रहा है। ऐसे में लेखकों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

भोपाल की डॉ. लता अग्रवाल ने कहा कि आज बौद्धिक- चारित्रिक संपदा के क्षेत्र में बड़ा शून्य पैदा हो रहा है। हमारी शिक्षा पद्धति में चारित्रिक विकास की बात नहीं सिखायी जा रही है। स्कूल में मोरल साइंस की पाठ्य पुस्तक दी जा रही है, मगर यह केवल बस्ते का वजन बढ़ाने वाली बात है। परिवार बच्चों की प्रथम प्रयोगशाला होती है। आज अभिभावक यही सोचते हैं कि कैसे हमारा बच्चा सर्वोच्च अंक प्राप्त कर बड़ा पैकेज वाली नौकरी प्राप्त करे। दिल्ली के किशोर श्रीवास्तव ने कहा कि आज हम कल्पना करते हैं कि माता-पिता का व्यवहार कैसा भी हो, बच्चों में अच्छे संस्कार हों, यह संभव नहीं है। बच्चों में यदि संस्कार की कमी है तो उसके पीछे कहीं न कहीं अभिभावक भी जिम्मेदार हैं। आज अच्छी बातों को सुनना लोग कम पसंद करते हैं। बुरी बातें लोगों को जल्दी आकृष्ट कर लेती हैं।

शाहजहांपुर के नागेश पांडेय 'संजय' ने कहा कि जिस तरह हर विद्यालय में बच्चों को मध्याह्न भोजन उपलब्ध कराया जाता है, वैसे ही मानसिक भोजन भी पहुंचे, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए और यह मानसिक भोजन है बच्चों की पत्रिका। जयपुर के फारुख आफरीदी ने कहा कि अणुव्रत के सूत्र वैश्विक हैं। यह किसी एक धर्म की बात नहीं करता। सर्व धर्म सद्भाव की बात करता है। हमारा भविष्य सुनहरा होगा।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली के कुमार प्रशांत ने कहा कि साहित्यकार समाज का ही एक अंग है। वह अपने आपको समाज से अलग न समझे। साहित्य वही है जो समाज के साथ चल सके। जो समाज को छोड़कर चलता है, वह साहित्य नहीं है। आज महात्मा गांधी को भुलाया जा रहा है। गांधीजी के मूल्यों को भुलाया जा रहा है। ऐसे में साहित्यकारों का दायित्व है कि वे समाज का दिशा-दर्शन करें। आज जरूरत है गलत बातों का विरोध खुलकर किया जाये। अणुव्रत में छोटी-छोटी बातें हैं लेकिन उन छोटी-छोटी बातों में असीम संभावनाएँ हैं।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने कहा कि जब भारत में छोटी-छोटी रियासतें थीं, तब छोटी-छोटी बातों पर लड़ाइयां होती थीं। आज हम अखंड विशाल भारत का रूप देखते हैं, उसमें साहित्यकारों की भी भूमिका रही है। बच्चों के साहित्य का स्वरूप कैसा हो, यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। मुनिश्री ने कहा कि उत्तर भारत में मेले लगते हैं, वहाँ साहित्य भी प्रचुर मात्रा में रहता है। जहाँ साहित्य का पठन अच्छा होता है, वहाँ के लोगों में वैचारिक परिपक्तता भी बहुत अच्छी होती है। जहाँ-जहाँ साहित्य में विकृति आती है, वहाँ विचारों में भी विकृति आती है।

लेखक सम्मेलन के प्रथम दिन के रात्रिकालीन सत्र में अणुव्रत अनुशास्ता ने विशेष अनुग्रह करते हुए संभागी लेखकों के साथ व्यक्तिशः संवाद का अवसर प्रदान किया। सभी लेखकों के परिचय प्रस्तुत करने के बाद आचार्य प्रवर ने उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।



वरिष्ठ साहित्यकार इकराम राजस्थानी को मिला अणुव्रत लेखक पुरस्कार

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से 17 नवम्बर की सुबह प्रवचन पांडाल में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में आयोजित समारोह में जाने-माने उद्घोषक, वरिष्ठ साहित्यकार तथा पं. जवाहर लाल नेहरू बाल अकादमी राजस्थान के अध्यक्ष इकराम राजस्थानी को अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके तहत उन्हें स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्र एवं 51 हजार रुपये का चेक प्रदान किया गया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन, अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुग्ड़, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, विनोद कोठरी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, न्यासी सुमति चंद गोठी, चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, मुंबई अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रोशन लाल मेहता तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने इकराम राजस्थानी को सम्मानित किया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा कि साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से अणुव्रत दर्शन को आमजन तक पहुंचाएं। अपने लेखन द्वारा समाज को प्रेरणा दें तथा खुद को भी प्रेरणा दे सकें, ऐसी मंगलकामना है।

अणुव्रत लेखक सम्मान से अलंकृत इकराम राजस्थानी ने अपने काव्यमय उद्बोधन में अणुव्रत दर्शन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अणुव्रत सभी धर्मों से ऊपर उठकर काम करता है तथा मानव को मानव बनने के मिशन में जुटा हुआ है। आचार्य तुलसी ने मानवता को प्रकाशित करने के लिए अणुव्रत आंदोलन के रूप में जो दीया जलाया है, हम सब उस दीये को सूरज बनाने का प्रयास करें। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के दौरान आयोजित किये जा रहे कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी देते हुए आचार्य प्रवर, चारित्रात्माओं तथा देश भर से आये साहित्यकारों का आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुग्ड़ ने किया।

अणुव्रत लेखक सम्मेलन के दूसरे दिन साहित्यकारों ने अणुव्रत लेखक मंच को विस्तार देने की आवश्यकता पर बल दिया और एक साझी उद्घोषणा जारी की गयी। अणुव्रत पत्रिका के सम्पादक संचय जैन ने कहा कि सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा, समानता और शांति के पुरजोर प्रयासों को बढ़ाने की आवश्यकता है। मनुष्य वैज्ञानिक आविष्कारों और सूचना तकनीक के वशीभूत होकर मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि संकीर्णताओं से हटकर विश्व शांति एवं भाईचारे के प्रयासों में तेजी लायी जाये। विचार-विमर्श के बाद साहित्यकारों ने इस दिशा में अपने लेखन कर्म को बढ़ाने का संकल्प भी लिया।

उद्घोषणा के प्रमुख बिंदु

- ❖ अणुव्रत दर्शन में समाहित नीति निर्देशक तत्त्वों को अपने व्यक्तिगत जीवन में शामिल करेंगे।
- ❖ सामाजिक स्तर पर इन शाश्वत जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करने का सक्रिय प्रयास करेंगे।
- ❖ अपनी रचनाओं में अहिंसा, शांति, प्रेम, भाईचारा आदि मानवीय मूल्यों व भारत के संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देंगे और इनके विपरीत लेखन को हतोत्साहित करेंगे।
- ❖ मानवीय मूल्यों और भारत के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित रचनाएँ अणुव्रत लेखक मंच को प्रेषित करेंगे। अणुविभा इन रचनाओं को देश की पत्र-पत्रिकाओं तक पहुंचाने का प्रयास करेगी।
- ❖ जीवन मूल्यों को वर्धापित करने वाली पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनेंगे। ‘अणुव्रत’ व ‘बच्चों का देश’ पत्रिका के प्रचार-प्रसार व गुणवत्ता संवर्धन में रचनात्मक योगदान देंगे।



लेखक सम्मेलन में काव्य गोष्ठी

अणुव्रत लेखक सम्मेलन के पहले दिन 16 नवम्बर की शाम काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता जयपुर से आये प्रख्यात साहित्यकार, कवि एवं शायर इकराम राजस्थानी ने की।

अजमेर से समागत कवयित्री चेतना उपाध्याय ने महिला चेतना और समाज में दंभी स्वभाव को चुनौती देते हुए कहा-

"चलो मैं तुम्हीं से पूछती हूँ
तुम्हारा क्या ख्याल है
आज का आदमी
इतना क्यों बेहाल है
ऐसा क्यों लगता हमें
आदमी भीतर से कंगाल है..."

जोधपुर से पथरीं प्रगति गुसा ने आधी दुनिया का दर्द कुछ इस तरह से बयां किया-

"रामायण है घर-घर
राम मिले या न मिले
अग्निपरीक्षा देती है सीता
हर दूसरे या तीसरे घर।"

शाहजहांपुर से आये कवि नागेश पाण्डेय 'संजय' ने यथार्थ को इन पंक्तियों में बड़ी ही खूबसूरती से ढाला -

"भले तुम पूजो मुझे भगवान कहकर
किंतु मैं खुद को पुजारी मानता हूँ।
हृदय-मंदिर में जलाये दीप सुधि का,
मैं तुम्हारे नाम का जप कर रहा हूँ।
किसी दिन मैं स्वयं आहुति बन जलूँगा,
मैं अभी तो मौन हो तप कर रहा हूँ।
भले तुम वर लो मुझे वरदान कहकर
किंतु मैं खुद को भिखारी मानता हूँ।"

नवी मुंबई से आये ताराचन्द मकसाने ने निष्ठुर अभिजात्य समाज पर तंज कुछ इस तरह से कहा-

"भिखारी ने एक घर के सामने आवाज दी
कुछ खाने को दो
भूखा मोहताज हूँ
अंदर से आवाज आयी
घर में आदमी नहीं है
भिखारी ने कहा -
कुछ समय के लिए,
तुम आदमी बन जाओ।"

भोपाल से तशरीफ लाने वाली डॉ. लता अग्रवाल ने द्वोपदी को प्रतीक मानकर समाज के नीति-नियंताओं को कठघरे में लाखड़ा किया। अपनी रचना में उन्होंने महिलाओं की स्थिति कुछ इस तरह से बयां की -

"सखि द्वोपदी !
कहो, खुलकर अपनी पीड़ा
क्या गुजरी थी तुम पर
नयी व्याहता तुम अर्जुन की
एक पल में कुंती के कहने भर से
पाँच पतियों की
बना अर्धांगीनी विभाजित कर दी गई
पाँच पुरुषों में...."

दिल्ली से आये कवि किशोर श्रीवास्तव ने मानवीय मूल्यों की पुरजोर वकालत करते हुए समाज के विघटनकारी तत्त्वों को आड़े हाथों लिया। उन्होंने सुनाया -

"करें दावे सदा जो लोग अक्सर साथ आने के।
वही चोरी छुपे हैं दूँढ़ते मौके सताने के।
वफा में कौन है लिपटा कहां पर बेवफाई है,
नहीं रिश्ते समझ आते हमें अब इस जमाने के।"
किशोर श्रीवास्तव ने आशावाद का दामन भी नहीं छोड़ा और कहा -
"बुरा कहकर सभी को तुम नहीं साबित भले होगे,
तुम्हारा काम ही तुमको सदा मंजिल दिखायेगा।
अगर तुमने किया होगा वतन के वास्ते अच्छा,
तुम्हारा गुण स्वतः सारा जमाना गुनगुनाएगा।"

दिल्ली से ही पथरे सीताराम गुसा ने दोहों से मूल्यों की बात कुछ इस तरह से की -

"सुंदर-सुंदर तितलियाँ, आएंगी उड़ पास।
फूलों जैसे रंग रख, फूलों - सी बू-बास।
मत दर्पण के पास जा, मत तूरूप निहार।
मन-दर्पण में झाँककर, पहले उसे सँवार।
बच्चों-सा निश्छल अगर, हो अपना व्यवहार,
प्रेम-प्यार की हर समय, हो हम पर बौछार।"

सूरत से आये अर्जुन मेडतवाल मानवीय मूल्यों की वकालत करते हुए कुछ इस तरह दिखे -

"अणुव्रत के अलबेले ध्वज को,
हर हाथ में थमाना है।"



अणुव्रत लेखक सम्मेलन

सुख का सूरज क्षितिज पर,
उगाने के लिए साथियों
अणुव्रत के संदेश को,
जन-जन तक पहुँचाना है।"

आत्मना कवि और अणुव्रत पत्रिका के सम्पादक संचय जैन
ने जीवन के यथार्थ की भयावह तस्वीर कुछ इस तरह से
प्रस्तुत की-

"इंसानियत की बात अब, यहाँ जुर्म है मेरे दोस्त
लाशों के मेले में कल, जमीर का सौदा हुआ है
भला मौत से खौफ कहाँ, जालिम जिंदगी डराती है
कल सांसों से मुहब्बत थी, अब इश्क कफन से हुआ है
दिल बचे ही कहाँ कि कहाँ, मेरा घराँदा टूटा है
किसको परवाह है यहाँ, कारबां हर रोज लुटा है
हाथ इनके और उनके, दोनों खून में सने हैं
बेगुनाही की सजा पर, इंसानियत शर्मजदा है
पसरी है तल्ख वीरानगी, रास्ता नजर आता नहीं
मौन हैं संवेदनाएँ, न्याय तराजू से जुदा है
मातम-ए-जिस्म से तो मैं, उबर जाऊँगा एक दिन
कौन कैसे भरेगा जख्म, जंग ने जो जिगर को दिया है
खप जाएँगी मगर पीढ़ियाँ, भरोसा फिर बनाने में
सदियों ने बसाया था शहर, लम्हों ने उजाड़ दिया है
माना फिर कल सुबह होगी, धड़कनें फिर रवां होंगी
जीतेंगे हम - जुगनुओं ने, यह ऐलान कर दिया है
शर्त बस एक है कि मजहब, अमृत बने, न घोले जहर
इंसानियत ही धर्म होगा, कहो कबूल कर लिया है।"

काव्य गोष्ठी का संचालन कर रहे उत्तराखण्ड से पथारे
मनोहर चमोली मनु ने समाज के हालात का कुछ इस तरह से
वर्णन किया-

"किससे अब किसका काम चलता है
बाप बेटे का नाम जपता है
तुम मेरे न हो सके क्या कीजे
बिन तुम्हारे भी काम चलता है
पाल लेता है कुछ भ्रम इन्साँ
के उसके कहने से राम चलता है
अब तो घर चलाती हैं बेटियाँ
घर में बेटे का जाम चलता है।"

हनुमानगढ़ से आये दीनदयाल शर्मा ने बाल मन की उड़ान
को कुछ इस तरह से व्यक्त किया-

"नानी तू है कैसी नानी,
नहीं सुनाती नयी कहानी।
नानी बोली प्यारे नाती,
नयी कहानी मुझे न आती।
तुम जानो कंप्यूटर बानी,
तुम हो ज्ञानी के भी ज्ञानी।
मैं तो हूँ बस तेरी नानी,
तुम्हीं सुनाओ कोई कहानी।'

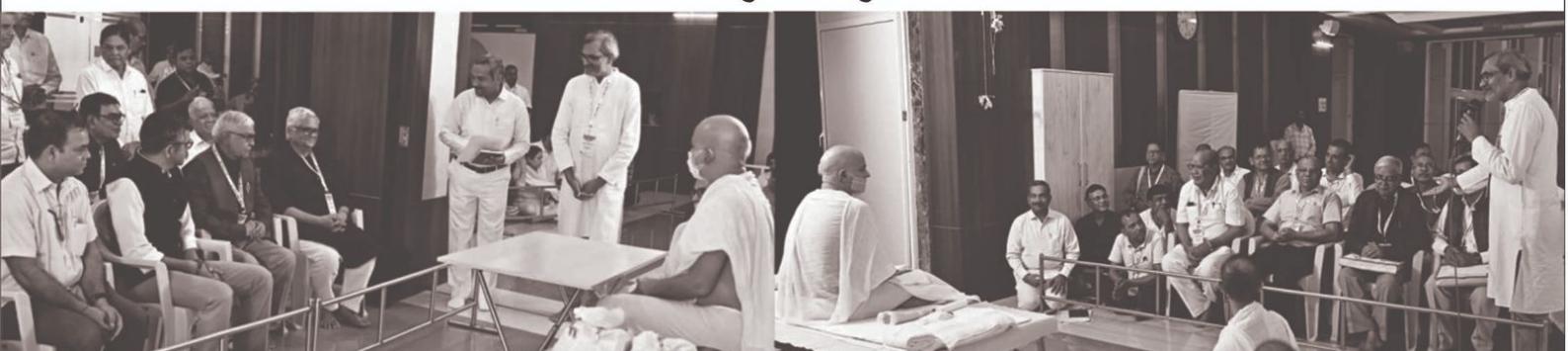
दिल्ली से आये अखिलेश आर्योन्दु ने मानव मात्र के लिए
मंगल कामना इन पंक्तियों में की-

"सुंदर कार्य विचार हो सुंदर
सुंदर सरल सहज जीवन हो
सुंदर चित्त-प्रवृत्तियां सुंदर
सुंदर ज्ञान-विज्ञान अमन हो
सुंदर प्रीति-रीति सुंदर हो
सुंदर हो जीवन का सपना
सुंदर धर्म सर्वोहितकारी
सुंदर धर्म परम अपना हो।"

काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे मशहूर शायर इकराम
राजस्थानी ने इंसानी फितरत को कुछ इस तरह से बयां
किया-

"दूँदता है आदमी, सदियों से दुनिया में सुकून।
धूप में साया मिले, मिल जाये सहरा में सुकून।
छटपटाती है किनारों, पर मिलन की आस में
हर लहर पा जाती है, जाकर के दरिया में सुकून।
बेकरारी है कभी, पूरे समन्दर की तरह,
और कभी मिल जाता है बस, एक करते में सुकून।
जिन्दगी को इससे ज्यादा और क्या कुछ चाहिए?
लम्स हो इक प्यार का, और उसके लम्हात में सुकून।
हर सवाली चेहरे पे लिखी इबारत देखिए,
चैन है कि न आँखों में, और कौन से दिल में सुकून।
ये उसी दामन की भीनी खुशबू का एहसास है,
जो मुझे महसूस होता है हवाओं में सुकून।"

लेखक-साहित्यकार अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में



आचार्य तुलसी का 110वां जन्मदिन अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया बड़ी संख्या में लोगों ने रखा उपवास

■■ संयोजक भरत चौरड़िया की रिपोर्ट ■■

मुंबई। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का 110वां जन्मदिन 15 नवम्बर को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। नंदनवन स्थित प्रवचन पांडाल में सुबह आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने गुरुदेव का पावन स्परण करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने 22 वर्ष की आयु में आचार्य पद का दायित्व संभाल लिया था तथा 60 वर्ष के आचार्यत्व काल में उन्होंने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान समेत विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने लोगों से डग्स तथा नशे से दूर रहने का आह्वान किया तथा मोबाइल, लैपटॉप आदि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के अत्यधिक प्रयोग से बचने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने पर

अणुव्रत अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी देश-विदेश में फैले अपने नेटवर्क के माध्यम से अणुव्रत के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास में जुटी है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने विभिन्न प्रसंगों को उद्घृत करते हुए आचार्य श्री तुलसी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला। साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अपनी यात्रा को अणुव्रत यात्रा के रूप में घोषित करने से लोग सहज ही अणुव्रत दर्शन के प्रति आकर्षित हुए हैं। आज अणुव्रत दिवस पर लगभग 2000 लोगों ने उपवास रखकर प्रतीक स्वरूप संयम की साधना की।

सुत्तुर मठ के बच्चों की गुरुदर्शन यात्रा



अणुव्रत आंदोलन अमृत महोत्सव के उपलक्ष में मैसूर अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में सुत्तुर मठ में अध्ययन कर रहे विभिन्न सम्प्रदायों के करीब 50 बच्चे अपने 3 प्रशिक्षकों के साथ मुंबई के नंदनवन में विराजित अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शनार्थ पहुंचे। गुरुदेव ने प्रेरणा पाठेय प्रदान करते हुए बच्चों को नशामुक्त तथा प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की।

उल्लेखनीय है कि जगद्गुरु श्री शिवरात्रेस्वरा स्वामी द्वारा संचालित सुत्तुर मठ स्कूल में कई बच्चों से जीवन विज्ञान और अणुव्रत के कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने मंगल उद्घोषण के साथ ही बच्चों को जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये। बच्चों ने अणुविभा के किडजोन एवं आचार्य प्रवर के जीवन पर आधारित आध्यात्मिक झलकियों का अवलोकन किया।

अणुव्रत अधिवेशन के दौरान आयोजित रैली में बच्चों ने भाग लिया एवं आचार्य प्रवर के समक्ष अणुव्रत गीत की मनोहारी प्रस्तुति दी। बच्चों की प्रस्तुति सुनकर आचार्य प्रवर ने कहा कि सुदूर दक्षिण से आये इन बच्चों ने, जो संभवतः हिंदी भाषा भी भली-भांति नहीं जानते, अणुव्रत गीत की सुंदर प्रस्तुति दी है। मुझे स्परण हो रहा है कि दक्षिण यात्रा के दौरान हम स्वयं भी जगद्गुरु श्री के आश्रम में गये थे।

अणुविभा के ऊर्जावान अध्यक्ष अविनाश नाहर की विशेष प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में यह गुरुदर्शन यात्रा मैसूर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सुरेश देरासरिया, अणुव्रत क्रिएटिविटी के संयोजक राजेश चावत, अभातेयुप सदस्य ललित मेहर, अनिल पितलिया, के सहयोग से आयोजित हुई। मैसूर में प्रवासित मुनिश्री रश्मिकुमार व मुनिश्री प्रियांशुकुमार की आध्यात्मिक प्रेरणा इस यात्रा का आधार बनी।





अणुव्रत दिवस पर आचार्य तुलसी को दी श्रद्धांजलि मुंबई के नंदनवन में बीकानेर के स्कूली बच्चों की प्रस्तुति ने मन मोहा

मुंबई। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का 110वां जन्मदिन 15 नवम्बर को अणुव्रत दिवस के रूप में नंदनवन में अत्यंत श्रद्धा भाव से मनाया गया।

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सात्रिध्य में बीकानेर के सेमुनौ इंटरनेशनल टेक्नो स्कूल एवं हीरालाल सोभाग्यमल रामपुरिया उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बाल नाटक 'अणुव्रत की बात' की प्रस्तुति दी। इसके माध्यम से उन्होंने बताया कि मनुष्य जीवन में कितने गुण होने चाहिए कि उसका अंतर्मन शीतल झारने की तरह हो जाये।

अणुव्रत आचार संहिता हमारे जीवन के लिए अत्यंत लाभकारी है। आवश्यकता है तो इन गुणों के समुद्र में गहरे उतारने की। इस नाटक में अणुव्रत विश्व भारती की ओर से चलाये जा रहे विभिन्न प्रकल्पों को समाहित किया गया। अणुव्रत गीत "संयममय जीवन हो" के साथ बाल नाटक का समापन हुआ। नाटक का निर्देशन अणुविभा के पर्यावरण जागरूकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन ने किया।

अणुव्रत के पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने नैतिकता, अहिंसा, व्यावहारिकता, आचार-विचार, जीवन विज्ञान के प्रयोग, अणुव्रत जीवन संदेश विषय पर छात्र-छात्राओं के साथ गहन चर्चा की। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने शिक्षक वर्ग के सम्मुख विद्यालय को दंडमुक्त बनाने के उपाय खो और छात्र-छात्राओं को अच्छा इंसान बनाने की प्रेरणा दी।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण अणुव्रत यात्रा के माध्यम से अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। इस मौके पर अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व पर्यावरण प्रभारी प्रताप दुग्ध सहित अणुविभा के अनेक पदाधिकारी, अणुव्रत कार्यकर्ता व अन्य श्रावक-श्राविकाओं ने बच्चों की प्रस्तुति को देखा और इसकी सराहना की।

बीकानेर के समाजसेवी व अणुव्रत संरक्षक बसंत नौलखा ने बच्चों की यात्रा पर हुए खर्च का वहन किया।





शिक्षा से लर्निंग और अर्निंग के साथ हो संस्कार ग्रहण : आचार्य महाश्रमण

जीवन विज्ञान दिवस समारोह में अणुव्रत अनुशास्ता ने किया आहवान

मुम्बई। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को प्रदत्त 'महाप्रज्ञ अलंकरण' के उपलक्ष्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमंद द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान दिवस समारोह (23 से 25 नवम्बर, 2023) की परिसम्पन्नता के अवसर पर मुम्बई के नन्दनवन में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि "शिक्षा का एक उद्देश्य है लर्निंग तो साथ में अर्निंग भी एक उद्देश्य हो सकता है क्योंकि अर्निंग भी तो जरूरी है। केवल लर्निंग है अर्निंग नहीं तो परिवार कैसे चलेगा? मेरे ख्याल से दूसरा उद्देश्य अर्निंग भी हो तो फिर बुरी बात नहीं है, क्योंकि अर्निंग भी चाहिए। लर्निंग और अर्निंग ये दो चीजें हैं और तीसरी एक और चीज है संस्कार ग्रहण शिक्षा से संस्कार प्राप्त हो। बच्चे में लर्निंग हो जाए, ज्ञान हो जाए फिर अर्निंग की बात भी हो जाये बच्चा अर्निंग के लायक बन जाए। एक सीमा तक सांसारिक बात को देखें और साथ में संस्कार वाली बात भी हो उसमें अच्छे संस्कार भी आए बच्चे में बहुत ज्यादा गुस्सा है, थोड़ी उद्दण्डता के भाव हैं, ऑनेस्टी नहीं है, खराब संस्कार है, संयम नहीं है और फिर ये इंग्स आदि अवांछनीय चीजें, वे आदतें आ जाए तो यह सब थोड़ी प्रतिकूल चीजें जो सकती हैं। अभिभावकों की एक यह आकांक्षा भी होनी चाहिए कि लर्निंग-अर्निंग के साथ संस्कार प्राप्ति, संस्कार संपुष्टि भी बच्चे में होने चाहिए।" उन्होंने कहा कि परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी स्वामी 'टमकोर' को "महाप्रज्ञ", यह सम्मानयुक्त अलंकरण या विशेष अलंकरण गंगाशहर चतुर्मास में विक्रम संवत् 2035 में प्रदान किया। पहले वह अलंकरण था महाप्रज्ञ

मुनिश्री नथमलजी और बाद में जब उनको राजलदेसर में वि.सं. 2035 के मर्यादा महोत्सव में युवाचार्य पद प्रदान किया गया तो जो अलंकरण था वही उनका नामकरण हो गया, नाम हो गया। नथमलजी नाम इतिहास के गर्त में चला गया और नया नाम महाप्रज्ञ हो गया। इसी महाप्रज्ञ अलंकरण के उपलक्ष्य में कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी को जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की उपाध्यक्ष (जीवन विज्ञान प्रभारी) माला कातरेला ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावांजलि प्रस्तुत करते हुए जीवन विज्ञान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 'मानव जीवन अनमोल है, यह एक शाश्वत कहावत है। व्यवस्थित और कलात्मक जीवनशैली को अपने आचरण में ढालना ही जीवन विज्ञान है। दूसरे शब्दों में कहें तो जीने की कला ही जीवन विज्ञान है। जीवन विज्ञान पवित्रता की प्रयोगशाला और कषायमुक्ति का महाभियान, भावधारा के परिष्कार का संकल्प एवं मस्तिष्कीय रूपान्तरण का परीक्षित प्रयोग है।

इस अवसर पर श्री देवराज मूलचन्द नाहर चैरिटेबल ट्रस्ट, बंगलुरु के आर्थिक सौजन्य से मुद्रित तथा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा प्रकाशित कक्षा 3 से 10 तक की पाठ्यपुस्तकों के नवीनतम संशोधित संस्करण की एक-एक प्रति मूलचंद नाहर की धर्मपत्नी शशि नाहर एवं माला कातरेला ने पूज्यप्रबर के श्रीचरणों में भेंट की। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री दिनेशकुमार जी ने किया।



पर्यावरण जागरूकता अभियान

ईको फ्रेंडली फेस्टिवल से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

■■ राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत आचार सहिता का ग्यारहवां नियम कहता है - "मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।" इसे ध्यान में रखते हुए अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में आमजन को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए समय-समय पर अभियान चलाया जाता है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष में नवम्बर माह के दौरान देशभर में पर्यावरण जागरूकता अभियान के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। देशभर में फैली अणुव्रत समितियों ने ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। विशिष्ट जनों ने विडियो संदेश के माध्यम से लोगों को प्रदूषण मुक्त दिपावली मनाने की प्रेरणा दी।

सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर के लोकार्पण अवसर पर मुनिश्री कुमुद कुमार ने कहा कि त्योहार आध्यात्मिकता का संदेश देते हैं। अतः पर्यावरण को भी शुद्ध रखना चाहिए ताकि वैश्विक स्तर पर स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके। पटाखे हिंसा का बहुत बड़ा साधन होते हैं। ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण से जितना बचा जाये तो संयम की साधना होने के साथ ही स्वस्थ समाज की दिशा में गतिमान कदम हो सकता है। मुनिश्री प्रशांत कुमार ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये।

अजमेर तथा राजसमंद अणुव्रत समिति द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का मीडिया द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया। इस्लामपुर अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं ने 'डोंट कट आवर बेस्ट फ्रेंड' स्लोगन द्वारा पेड़ न काटने की प्रेरणा दी। ज्ञानशाला, मिलन पल्ली गर्ल्स हाई स्कूल के बच्चों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल कैसे मनाएं, इसकी जानकारी दी गयी। किशनगंज अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर द्वारा जन जागरण का कार्य किया गया।

लाडनूँ अणुव्रत समिति द्वारा ऋषभ द्वार भवन में साध्वीश्री लक्ष्यप्रभा के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर व पोस्टर का विमोचन किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि त्यौहार को इस प्रकार से मनाएं जिसमें संयम की साधना हो सके, पापभीरुता का पालन हो सके और किसी का अहित न हो। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष व पर्यावरण प्रभारी प्रताप दुग्ड़ ने विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. वीरेंद्र भाटी मंगल ने कहा कि अणुव्रत

जीवनशैली को अपनाकर हम पर्यावरण का संरक्षण कर सकते हैं। कार्यक्रम के पश्चात् सार्वजनिक स्थानों पर बैनर, पोस्टर लगाकर लोगों को पर्यावरण जागरूकता बनाये रखने की शपथ दिलायी गयी।

फारबिसगंज अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों ने अणुव्रत जीवनशैली अपनाने व पर्यावरण को बचाने को लेकर पर्यावरण जागरूकता अभियान के बैनर का मुख्य अतिथि मुख्य पार्षद वीणा देवी ने लोकार्पण किया। पतंजलि योगपीठ केंद्र में आयोजित शिविर में योग प्रशिक्षक पिंटू कुमार ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूक होना चाहिए। रेफरल अस्पताल स्थित नर्सिंग हॉस्टल में पर्यावरण के विषय में जागरूकता प्रदान की गयी। नगर पालिका की अध्यक्ष वीणा जी ने अणुव्रत के कार्यों की प्रशंसा की। एकेडमी एवीएम, सत्यम कॉन्वेंट स्कूल, सूर्या आर्य कराटे क्लासेज सहित अनेक संस्थाओं ने महत्व की जानकारी बच्चों को दी गयी।

जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा अणुविभा केंद्र में विराजित शासन गैरव बहुश्रुत साध्वीश्री कनकश्री के सान्निध्य में बैनर का अनावरण किया गया। अणुव्रत समिति द्वारा मुनिश्री संभव कुमार के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का अनावरण किया गया। 'ईको फ्रेंडली फेस्टिवल : सेहत से भरपूर प्रदूषण से दूर' स्लोगन का मीडिया द्वारा प्रचार प्रसार किया गया। समिति द्वारा प्रेम निकेतन स्कूल में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर तले पर्यावरण जागरूकता अभियान का संदेश दिया। एस. टी. इन्फोसिस ऑफिस, मालवीय नगर में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर द्वारा जन जागृति का कार्य किया गया। ब्राइट मून पब्लिक स्कूल, एन.के. पब्लिक स्कूल में करीब 1400 विद्यार्थियों के मध्य मुनिश्री तत्व रुचि "तरुण" ने ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की प्रेरणा दी। सजल प्रखर स्कूल मालवीय नगर में बच्चों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की प्रेरणा दी गयी।

बरपेटा रोड अणुव्रत समिति द्वारा श्री हिन्दी एमई स्कूल में अनिल बैगानी ने जल, वायु, ध्वनि तथा मृदा प्रदूषण से होने वाले नुकसानों के बारे में बताने के साथ ही प्रदूषण मुक्त समाज के लिए छात्र-छात्राओं को संकल्पित कराया।

चिकमंगलुर अणुव्रत समिति द्वारा बैनर का अनावरण तेरापंथ सभा भवन में किया गया। समिति की अध्यक्ष ने कहा कि पटाखे न फोड़कर जीवों को हिंसा से बचाना है, पर्यावरण को भी



बचाना है। बेंगलुरु अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में मुनिश्री हिमांशु कुमार एवं मुनिश्री हेमंत कुमार के सान्निध्य में इको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन किया गया। मुनिश्री हिमांशु कुमार ने कहा कि दिवाली अंथकार को दूर भगाने का पर्व है। हमें इस पर्व को जप, तप, आराधना से मनाना चाहिए न कि मनोरंजन के रूप में। कार्यक्रम में बच्चों को पटाखे न फोड़ने का संकल्प लेने की प्रेरणा दी गयी।

पुर अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में विराजित तपस्वी मुनिश्री प्रतीक कुमार, मुनिश्री पद्म कुमार एवं मुनिश्री मोक्ष कुमार के सान्निध्य में इको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन किया गया। भिलाई अणुव्रत समिति द्वारा शासकीय प्राथमिक विद्यालय को सा में बच्चों को इको फ्रेंडली त्यौहार मनाने की प्रेरणा दी गयी।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति ने स्प्रिंगडेल्स इंगिलश सेकंडरी स्कूल में विद्यार्थियों और शिक्षकों को दीपावली के दौरान पटाखों के इस्तेमाल से हो रहे ध्वनि, वायु एवं जल प्रदूषण के बारे में अवगत कराते हुए इको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का अनुरोध किया। इस दौरान बच्चों को इको फ्रेंडली दिवाली के स्टिकर भेंट किये गये और विद्यालय प्रांगण में बैनर भी लगाया गया। समिति ने हैप्पी डेज स्कूल में भी बच्चों को इको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का संकल्प दिलाया।

खारूपेटिया अणुव्रत समिति द्वारा एल पी रिफ्यूजी स्कूल में इको फ्रेंडली फेस्टिवल जागरूकता अभियान के दौरान बच्चों से ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे गये और प्रदूषण मुक्त दीपावली मनाने की प्रेरणा दी गयी।

काठमांडू अणुव्रत समिति की ओर से इको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन ज्ञानशाला संयोजक एवं प्रशिक्षिकाओं तथा ज्ञानशाला के बच्चों के समक्ष किया गया। इस अवसर पर बच्चों को दीपावली पर पटाखे जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताते हुए प्रदूषण मुक्त जीवन जीने का संकल्प करवाया गया।

वापी अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में लोगों को बताया गया कि पर्यावरण प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और वायु प्रदूषण से जितना हो सके, उतना बचा जाये तो संयम की साधना के साथ ही एक स्वस्थ समाज की रचना हो पाएगी।

फरीदाबाद अणुव्रत समिति ने करवा चौथ पर सेवा भारती फरीदाबाद एवं भारतीय जनता पार्टी फरीदाबाद के सहयोग से दो दिवसीय नशामुक्त-व्यसन मुक्त दिवाली तथा इको फ्रेंडली फेस्टिवल का कार्यक्रम सेक्टर 22 में आयोजित किया जिसमें बड़ी संख्या में आसपास के क्षेत्र पहुँचे।

दूसरे दिन इको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का अनावरण महा तपस्वी मुनिश्री उदय कुमार के सान्निध्य में एस एस जैन स्थानक, महावीर भवन, सेक्टर 15 में किया गया।

शिवपुरी अणुव्रत मंच द्वारा बच्चों को इको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की प्रेरणा दी गयी।

जगराओं अणुव्रत समिति ने तेरापंथ भवन में साध्वीश्री प्रतिभाश्री के सान्निध्य में अणुविभा के राज्य प्रभारी - पंजाब, हरियाणा, हिमाचल एवं दिल्ली एनसीआर व जीवन विज्ञान की ट्रेनर की उपस्थिति में इको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का अनावरण करवाया गया। लुधियाना अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में साध्वीश्री बसंतप्रभा के सान्निध्य में इको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का अनावरण किया गया।

धुबड़ी अणुव्रत समिति द्वारा गवर्नमेंट बॉयज स्कूल व योगा सेंटर में बच्चों को पटाखे न छुड़ाने की प्रेरणा दी गयी। मण्डी गोबिंदगढ़ अणुव्रत समिति द्वारा लोहा बाजार स्थित रमेश मित्तल (सभा अध्यक्ष) के ऑफिस में इको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का अनावरण करवाया गया। कोटकपुरा अणुव्रत समिति द्वारा ग्राम औलख में श्री गुरु हरगोबिंद साहिब पब्लिक स्कूल कक्ष में आयोजित संगोष्ठी में बच्चों को दीपावली, गुरुपर्व, क्रिसमस और नव वर्ष के उपलक्ष में पटाखे न चलाने, पौधे लगाने, कम से कम बर्तन जूठे करने इत्यादि की प्रेरणा दी गयी।

उदयपुर अणुव्रत समिति द्वारा रोटरी बजाज भवन में 300 जनों के बीच इको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का विमोचन कर आवश्यक जानकारी प्रदान की गयी। साध्वीश्री परमयशा ने कहा कि हम संकल्प लें कि अणुव्रत आचार संहिता के 11वें नियम का अनुसरण करें।

बल्लारी अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में डॉ. मुनिश्री पुलकित कुमार एवं मुनिश्री आदित्य कुमार के सान्निध्य में बैनर का अनावरण कर उसी स्थान पर स्थायी रूप से लगाया गया।

बेंगलुरु अणुव्रत समिति द्वारा संगोली रायणा मेट्रो स्टेशन, बस स्टैंड एवं सार्वजनिक स्थान पर इको फ्रेंडली फेस्टिवल आयोजित किया गया। समिति द्वारा कन्वड़ व हिंदी, अंग्रेजी भाषा में मेट्रो व बस स्टैंड के यात्रियों, कर्मचारियों, रिक्षा ड्राइवरों और दुकानदारों को इको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की प्रेरणा दी गयी और पैफलेट बाँटे गये।

गाजियाबाद अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमल कुमार ने लोगों को पटाखे नहीं छुड़ाने का संकल्प दिलाया।

तेजपुर अणुव्रत समिति की ओर से गांधी मेमोरियल स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में कई बच्चों ने दीपावली पर पटाखे नहीं छोड़ने का संकल्प लिया। ज्ञानशाला के बच्चों को भी इको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का संकल्प दिलाया गया। अंबिकापुर अणुव्रत समिति द्वारा शिशु मन्दिर के बालिका विभाग की बच्चियों ने इको फ्रेंडली फेस्टिवल द्वारा जन जागृति का कार्य किया।



त्रिपुरा अणुव्रत समिति ने बच्चों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की प्रेरणा दी। गंगापुर अणुव्रत मंच ने मीडिया के माध्यम से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का प्रचार-प्रसार किया। अगरतला अणुव्रत मंच ने यूरो किड्स प्ले स्कूल के बच्चों व विश्रमगंज क्लीनिक में मरीजों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की प्रेरणा दी। रामपुरा फूल अणुव्रत मंच ने जय तुलसी अणुव्रत पब्लिक स्कूल में रंगोली के माध्यम से विद्यार्थियों ने जनजागृति का कार्य किया।

टोहाना अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वीश्री तिलकश्री के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का अनावरण किया गया। पीलीबंगा अणुव्रत समिति के कार्यक्रम में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन श्री अमृत मुनि के सान्निध्य में किया गया। बीकानेर अणुव्रत समिति द्वारा तुलसी साधना केन्द्र, दुग्गड भवन में शासनश्री चान्द कुमारी के सान्निध्य में एवं सहवर्ती साध्वीबृन्द द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन किया गया। विभिन्न चौराहों पर समिति द्वारा बैनर लगाये गये तथा स्वस्थ दीपावली मनाने हेतु विभिन्न व्यक्तियों के मध्य संवाद किया गया।

सायरा अणुव्रत समिति ने सायरा ग्राम के बाजार, चौराहा व बस स्टैंड पर जनजागृति के लिए पोस्टर लगाये गये। चूरू और दिवेर अणुव्रत समिति द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर बैनर द्वारा जनजागृति का कार्य किया गया। नोखा अणुव्रत समिति द्वारा नोखा रेलवे स्टेशन पर अणुव्रत अमृत यात्रा के दौरान स्टेशन पर पहुँचे बच्चों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल की जानकारी दी गयी।

हुबली अणुव्रत समिति ने ज्ञानशाला के बच्चों के मध्य ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर तले जनजागृति का कार्य किया। कटक अणुव्रत समिति द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर द्वारा जन जागरण किया गया। बारडोली अणुव्रत समिति द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें प्राथमिक गुजराती शाला बाबेन और श्री यू. के. आर. के. आर्य समाज सार्वजनिक शाला के बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। धरान अणुव्रत समिति के कार्यर में बच्चों ने ईको फ्रेंडली फेस्टिवल पर आधारित नुकङ्ग नाटक की प्रस्तुति दी।

अणुव्रत वाटिका

जोधपुर अणुव्रत समिति की ओर से संयोजक राजू मेहता की फैक्ट्री में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन पारसमल भंसाली की अध्यक्षता में अणुव्रत समिति के संरक्षक, उद्योगपति एवं अणुव्रती उम्पेदमल सिंधवी ने किया। इस अवसर पर मांगीलाल सिंधवी, दिलीप मेहता, पवन बोथरा, अजय, ऋषभ तथा समिति अध्यक्ष गोविंदराज पुरोहित ने वाटिका में लगाये गये आम, लीची, चीकू, अमरूद, शहतूत और नारंगी के पेड़ों का अवलोकन किया।

अणुव्रत समिति फारबिसगंज द्वारा एनएम नर्सिंग स्कूल एंड हॉस्टल के परिसर में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ तेरापंथ समाज के कर्मठ व्यक्तित्व निर्मल बैद ने किया। इसमें 50 से भी

ज्यादा फलों और फूलों के पौधे लगाये गये हैं। यह कार्य एनएम स्कूल और हॉस्टल के बड़ा बाबू अभिजीत कुमार और प्रिसिपल के माध्यम से संपन्न हुआ। इस्लामपुर अणुव्रत समिति द्वारा नेताजी एकेडमी चिल्ड्रेंस हाई स्कूल में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ महिला मंडल की संरक्षिका कान्ता देवी गोलछा ने किया। समिति अध्यक्ष ललिता धाड़वा ने बताया कि कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष नरेंद्र वैद, मंत्री बसन्त बागरेचा, स्कूल के प्रधानाचार्य अखिलेश यादव एवं शिक्षक तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। समिति मंत्री समता पटावरी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पर्यावरण संगोष्ठी

जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित संगोष्ठी में साध्वीश्री मंगलप्रभा ने पर्यावरण की स्वच्छता, संयम और अनुशासित तथा मर्यादित जीवन जीने की प्रेरणा दी। वहाँ संस्कृति चिल्ड्रन एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वर्कशॉप में शिक्षकों ने पर्यावरण संरक्षण के नियमों को जीवन में उतारने का संकल्प लिया। पुर अणुव्रत समिति ने बैरवा मोहल्ला रामदेव मन्दिर प्रांगण में संगोष्ठी आयोजित की। इसमें लोगों को बताया गया कि पर्यावरण को प्रदूषित होने से जितना संभव हो सके, उतना बचाव करना चाहिए। कोलकाता अणुव्रत समिति द्वारा प्रकृति और पर्यावरण विषय पर काव्य संगोष्ठी का आयोजन मुनिश्री जिनेश कुमार की पावन सन्निधि में किया गया। कार्यर म में अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष व पर्यावरण प्रभारी प्रताप दुग्ध, कविगण तथा कोलकाता समाज के गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

शोक संवेदना



श्री विमल मुसरफ (मूल निवासी राजगढ़ सादुलपुर) का 18 नवम्बर को निधन हो गया। वे कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। श्री विमल मुसरफ काफ़ी वर्षों से अणुविभा राजसमंद में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। इससे पहले भी वे वर्षों तक संस्कार निर्माण समिति से जुड़े रहे और धर्मसंघ व अणुव्रत आंदोलन को अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। पिछले दिनों गम्भीर अस्वस्था के चलते परिवारजन उहें किशनगढ़ और फिर बैंगलुरु ले गए थे। बैंगलुरु में उनका निधन हो गया।

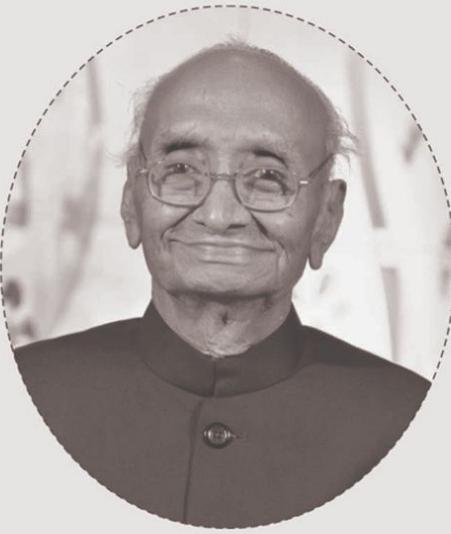
अणुविभा परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि



चित्र दीर्घा



:: शोक संवेदना ::



अणुव्रत गौरव, प्रवक्ता उपासक, श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री धीसूलाल नाहर

अणुव्रत गौरव श्री धीसूलाल जी नाहर का 30 नवम्बर 2023 को आकस्मिक निधन हो गया। 87 वर्षीय श्री नाहर संघ और संघपति के प्रति समर्पित एक धर्मभीरु श्रावक थे। आपने इंजीनियर के रूप में लम्बा समय शासकीय सेवा में बिताया और तब भी संघ सेवा से जुड़े रहे। सेवानिवृत्ति के बाद तो उन्होंने पूरा जीवन मानो अणुव्रत आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया। वे वर्षों तक राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रहे और अणुव्रत महासमिति व अणुविभाग में भी अनेक पदों पर रहे। अणुव्रत के मिशन को लेकर आपने राजस्थान व राजस्थान के बाहर भी कई यात्राएँ कीं।

जाणुदा का नाहर परिवार आप में विशिष्ट परिवार रहा है। इस परिवार के अनेकानेक कार्यकर्ताओं ने विभिन्न संघीय संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए समर्पित सेवाएँ दी हैं। परिवार को धर्मसंघ से जोड़े रखने में धीसूलाल जी की केंद्रीय भूमिका रही। इसका एक बड़ा उदाहरण स्वयं उनके पुत्र अविनाश नाहर हैं जो अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् जैसी बड़ी संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में अणुव्रत आंदोलन की केंद्रीय संस्था अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष के रूप में वे अपनी विशिष्ट सेवाएँ दे रहे हैं। परिवार को संस्कारी बनाना किसी भी माता-पिता की पहली ज़िम्मेदारी और इच्छा होती है। धीसूलाल जी इस कसौटी पर खरे उतरे।

धीसूलाल जी का आत्मबल भी उच्च कोटि का था। दो वर्ष पूर्व ही पत्नी के वियोग को भी उन्होंने समता भाव से सहा। एक माह पूर्व ही उनकी पुत्री का आकस्मिक निधन हो गया था। आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और मिलनसारिता उनके स्वभाव के विशिष्ट गुण रहे। इस उम्र और अस्वस्थता में भी वे पुत्र अविनाश को हमेशा अणुव्रत के कार्य में समर्पण भाव से लगे रहने की प्रेरणा देते रहते थे। वे कहते - यदि अणुव्रत के काम से बाहर जा रहे हो तो जरूर जाओ, मेरी चिंता मत करो, मैं एकदम ठीक हूँ। और पुत्र के मुंबई प्रवास के बीच ही वे सबको छोड़ कर चले गए। पुत्र अविनाश, पुत्रवधू संतोष, पौत्र वैभव, पौत्री अल्पा सहित पूरे परिवार ने उनकी प्राण-प्रण से सेवा की। एक सुदीर्घ और सार्थक जीवन जी कर धीसूलाल जी नाहर ने अपनी जीवन यात्रा को शारीरिक व मानसिक दृष्टि से पूर्ण सक्रिय रहते हुए परिसम्पन्न किया, यह उनकी पुण्यायी का ही परिणाम है।

श्री जी.एल. नाहर को उनकी समर्पित सेवाओं के लिए समय-समय पर अनेक अलंकरण प्राप्त हुए। इनमें प्रमुख हैं - अणुव्रत गौरव, श्रद्धानिष्ठ श्रावक, अणुव्रत सेवी, अणुव्रत प्रवक्ता आदि।

अणुव्रत विश्व भारती परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।



अणुव्रत समितियों के लिये दिशा-निर्देश



एक विश्व
एक स्वर
मानव धर्म मुखर

18 जनवरी 2024

एक दिन देश-दुनिया में लाखों लोगों द्वारा
"अणुव्रत गीत" का समूह संगान

केन्द्रीय समन्वय केन्द्र
व संयोजकीय सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत

■ 97372 80171 ■ 93746 13000
■ 98254 04433 ■ 93747 26946

अणुव्रत गीत महासंगान

- समितियों व मंचों द्वारा स्थानीय संयोजक का मनोनयन
- स्कूलों, कॉलेजों, सामाजिक संस्थाओं, औद्योगिक संस्थानों, समाज की सहयोगी संस्थाओं से सम्पर्क कर आयोजन में अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित करना
- अधिक से अधिक आयोजन स्थलों का निर्धारण कर उनके लिए प्रभारी का मनोनयन करना
- अणुव्रत समितियों व मंचों द्वारा उनके आसपास के गाँवों, शहरों में आयोजन की संभावना तलाशना व उनकी सूची अणुविभा को प्रेषित कर संयोजक के मनोनयन में सहयोग करना
- गूगल फॉर्म के माध्यम से आयोजन स्थलवार संभावित संख्या की जानकारी देते हुए प्री-रजिस्ट्रेशन
- आवश्यकता अनुरूप केन्द्रीय कार्यालय से प्रचार सामग्री मंगवाना
- स्थानीय स्तर पर यथासम्भव चारित्रात्माओं के सान्निध्य व प्रतिष्ठित गणमान्यजनों की उपस्थिति में 'अणुव्रत गीत महासंगान' कार्यक्रम की सार्वजनिक घोषणा करना
- आयोजन स्थलों पर मेजबान संस्था के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर 18 जनवरी 2024 के कार्यक्रम की रूपरेखा को अनितम रूप देना
- प्रत्येक आयोजन स्थल पर संभावित संभागियों के साथ रिहर्सल आयोजित करना
- रिहर्सल कार्यक्रम में अणुव्रत गीत की व्याख्या कर जागरूकता पैदा करना
- अणुव्रत यात्रा के त्रिसूत्रीय संकल्पों से परिचित कराना ताकि 18 जनवरी 2024 के कार्यक्रम में सभी संभागी सामूहिक रूप से ये संकल्प स्वीकार करें
- प्रत्येक संभागी को अणुव्रत गीत की प्रति (प्रिंटेड अथवा डिजिटल) उपलब्ध कराना
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को समाचार प्रेषित करना
- यथासमय कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियां तय करना और टीम से साथ नियमित बैठकें आयोजित कर 18 जनवरी 2024 के मुख्य कार्यक्रम की व्यवस्थाओं को अनितम रूप देना
- पहले दिन आयोजन स्थल पर व्यक्तिशः जाकर व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करना
- एक-दो दिन पूर्व प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को समाचार प्रेषित करना व कार्यक्रम में संपादकों व संबांददाताओं को आमंत्रित करना
- कार्यक्रम में क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित करना
- प्रत्येक आयोजन स्थल पर कार्यकर्ता की उपस्थिति सुनिश्चित कर निर्धारित प्रारूप में कार्यक्रम की आयोजना करना
- महासंगान में संभागी बच्चे व बड़े निर्धारित फॉर्म में संकल्प स्वीकार करें, यह व्यवस्था करना
- केन्द्रीय स्तर पर निर्धारित गाइडलाइन के अनुरूप महासंगान कार्यक्रम की फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी कराना
- निर्धारित प्रारूप में कार्यक्रम आयोजन की सूचना व डाटा अणुविभा टीम को कार्यक्रम के 2 घण्टे के अन्दर उपलब्ध कराना
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को फोटो सहित समाचार प्रेषित करना
- फोटो सहित समाचार की एक प्रति अणुविभा टीम को प्रेषित करना



Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional



International



AkashGanga®

— *Integrity at work* —

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat





11th INTERNATIONAL CONFERENCE ON PEACE AND NONVIOLENT ACTION

February 13 to February 16, 2024



Theme

**Only Nonviolence Can Guarantee
World Peace And Environmental Sustainability**



organized by
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY (ANUVIBHA)

for more details please visit
www.anuvibha.org or email to icpna@anuvibha.org

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
December, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/11/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month



अनुव्रत अमृत महोत्सव

अनुव्रत गीत महासंवाद



श्रेष्ठ भारत का शंखनाद

18
जनवरी
2024

अनुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

एक विश्व ❁ एक स्वर ❁ मानव धर्म मुखर



**अनुव्रत विश्व
भारती सोसायटी**

केन्द्रीय समन्वय केन्द्र व संयोजकीय सम्पर्क सूत्र :

अनुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत

📞 +91- 97372 80171 ■ 93746 13000
📞 +91- 98254 04433 ■ 93747 26946

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन